प्रथम संस्करण २१००] [अप्रैल '४९

विषय सूची

प्रकाशक—
सर्वोदय साहित्य संघ,
काशी (बनारस)

मूल्य १।)

मुद्रक—
पी० घोष,
सरला प्रेस, बनारस।

प्रस्तावना

छोटे बच्चों की तालीम के बारे में शांता बहन ने अपने जो विचार ादर्शित किये हैं वे चिंतन करने योग्य हैं अकसर अिस विषय का वेचार शाहरियों के ख्याल से अभी तक किया गया है, लेकिन गांधीजी ने तालीम की व्यापक दृष्टि सामने रखी, जिसमें सब की और जीवन मर की तालीम का समावेश था और अुसमें ख़ास करके देहातियों का वेशेष ख्याल था। वही दृष्टि लेकर शांताबहन के ये विचार हैं।

इसमें अनुभव से काम किया है, यानी तालीम का प्रत्यक्ष तजरुबा करने बाद जो विचार सूझे हैं वे रखे गये हैं। अिसीलिए अिसका एक महत्व है। वैसे पूर्व-पद्धतियों का भी सार ग्रहण अिसमें है लेकिन सब कुछ होते हुअे भी अुसका मुख्य महत्त्व यही है कि ये विचार प्रयोग जन्य हैं, और अनुभव-निष्ठ हैं।

जो विचार प्रयोग-जन्य और अनुभव निष्ट होते हैं वे हमेशा दूसरों के प्रयोगो और अनुभवों के लिए भी गुंजाअिश रखते हैं, अर्थात् अुनमें आग्रह नहीं होता। वे केवल सुझावरूप होते हैं। वैसे ही ये हैं।

मेरी दृष्टि मे तो छोटे बच्चों की तालीम, जिसको हम पूर्व बुनियादी तालीम कहते हैं, कुटुंबों में ही होनी चाहिए। माता-पिता ही बच्चो के प्रथम गुरु हैं और दूसरे गुरुओं से अुनका अधिकार भी श्रेष्ठ है बशर्ते कि शिक्षण की कुछ काबिलियत वो रखते हो। अभी वैसी स्थिति नहीं

है, अिसीलिए पूर्व बुनियादी तालीम की योजना करनी पड़ती है और अुसका ढाँचा भी बनाना पड़ता है। लेकिन आदर्श तो यही होगा की बुनियादी तालीम और प्रौढ़-शिक्षा का देश में अितना फैलाव हो कि हरेक कुटुम्ब एक पाठशाला बने और जैसे स्मृतिकारों ने सिखाया है, गर्भाधान से ही बच्चे की शिक्षा का आरंभ हो। अिस आदर्श को जब-तक नहीं पहुँचे हैं तब तक माता-पिताओं के प्रतिनिधि बनकर दूसरों को यह काम करना है। अुसकी एक दिशा अिन विचारों में सूचित है। परिस्थिति के मुताबिक हर जगह अुसमें हेरफेर हो सकता है। अुसी दृष्टि से पढ़नेवाले अिसे पढ़ेंगे।

परंधाम,
पवनार २५-१-३६

वीनोबा

योजना

अहिंसात्मक और स्वावलम्बी समाजकी स्थापनाके लिए बापूकी नयी तालीमका आश्रय लेना होगा। भारतमें खेती और गाँवोंका बहुत बड़ा स्थान है परंतु उसीके साथ गरीबी और अविद्या भी लिपटी हुई है। ऐसी हालतमें कोई व्यापक और सफल शिक्षण योजना तैयार करने के लिए तो खासकर बापूकी नयी तालीमका सहारा लेनेमें ही कल्याण दीखता है। परंतु इस नयी तालीमकी इमारत पूर्व बुनियादी तालीमकी नींवपर ही खड़ी होती है। इस भागमें इन्हीं बातोंपर विचार किया गया है।

पहला अध्याय

प्रारम्भ

हमारे देश में अभी तक शिक्षा का जो थोड़ा सा कार्य हुआ है वह ज्यादातर सात सालसे ऊपरकी उमरके बच्चोंके लिए हुआ है। सात सालसे नीचेकी उमर वाले बच्चोंके बारेमें हमने सोचा ही नहीं है। कहीं-कहीं शहरोंमें पश्चिमी पद्धतियोंके अनुसार चलने वाले नये ढंगके इने गिने बालमंदिर खुले हैं। लेकिन उनसे सिर्फ थोड़ेसे शिक्षित लोगोंका परिचय है और अमीरोंके बच्चेही ज्यादा-तर उनमें पढ़ते हैं। आम जनताके सात साल से नीचेके बच्चोंके लिए 'शिक्षा' शब्द अपरिचित सा ही है। आम जनताके सात सालके ऊपरके इने-गिने बच्चे जहाँ प्रायमरी शालाओंमें पढ़ते भी हैं वहाँ भी अंक-ज्ञान और अक्षरज्ञान ही मुख्य बात है। बच्चोंके विकास आदिकी बातोंका तो सोचना ही नहीं। खाली 'थ्री आर्स' (सिद्धान्त) ही उनके शिक्षाका उद्देश्य होता है। शहरोंमें जो छोटे बच्चोंके लिए विदेशी ढंगकी प्रयोगशालाएँ चलती है उनमें नर्सरी, किंडरगार्टन और मान्टेसोरी प्रमुख हैं।

आज हमारे सामने एक छोटासा देहाती गरीब बालक खड़ा पूछ रहा है—'मेरे लिए क्या है? कौनसा रास्ता है?' उसके चारों ओर धूल मिट्टी पड़ी है, कूड़ोंकी ढेरसे वह घिरा है। बदन पर कपड़ा नहीं है और इसे हम अपने राष्ट्रका धन समझ रहे हैं। इसके विकासका और शिक्षाका भार किसपर है?

गान्धीजीने जब बुनियादी तालीमका सिलसिला निकाला था तब चारों ओरसे प्रश्न उठे थे कि सात सालके बच्चोंकी शिक्षाकी

तो आपने सोचा है, लेकिन उसके पहले के बच्चे कैसे रहेंगे, उनके लिए क्या इन्तजाम होगा? १९४४ में जेलसे लौटनेके बाद बापूजीने यही सोचा कि बच्चोंकी शिक्षाकी शुरूआत अभिमन्यु की तरह माँ के पेटसे ही शुरू हो। वह शुरूआत आज 'पूर्व बुनियादी' के नामसे पुकारी जाती है।

जब कोई नई पद्धति शुरू होती है तो उसकी अच्छाई या योग्यताकी जांच तभी होगी जब दूसरी प्रचलित सुयोग्य पद्धतियों के साथ उसे तुलनात्मक दृष्टिसे देखा जाय। इसलिए हमारे देशमें जो विदेशी पद्धतियाँ छोटे बालकोंके लिए प्रचलित हैं, उनके बारेमें यहाँ थोड़ी चर्चा करना जरूरी है।

दुनियामें जो जो नई शिक्षण पद्धतियाँ जब अपने जमानेमें प्रचलित हुई तब वे उस जमानेके लिए क्रान्तिकारी ही रहीं। उदाहरणार्थ, किंडर गार्टन पद्धतिने पहले-पहल छोटे बच्चोंके मानस-शास्त्रको समझकर खेल-खिलौने और चित्रों द्वारा उन्हें शिक्षा देना जरूरी है--यह घोषित किया और उसका प्रयोग किया। उस जमानेमें मानसशास्त्र इतना आगे बढ़ा नहीं था, फिर भी उस पद्धतिने बच्चोंके यान्त्रिक जीवनको पलट दिया और उसमें सजीवता पैदा की। अब भी उसका सफल प्रयोग प्रचलित है।

दूसरी पद्धति है नर्सरीशाला की। यह बिल्कुल छोटे बच्चों के लिए है। इन शालाओंमें बच्चोंकी शारीरिक देखभाल, खाना, कपड़ा, खिलौने और विश्राम--सभी आते हैं। इन सारी बातोंके साथ बच्चोंकी परवरिश, डाक्टरी जांच आदि बातें भी आती हैं। कभी-कभी मातासे सम्बन्ध बढ़ाकर बच्चोंकी हिफाजतके बारे में उन्हें बताया जाता है। इस तरह बच्चे ५, ६ घंटे शालामें ही रखे जाते हैं और उनकी देखभाल की जाती है।

तीसरी पद्धति है डा० मान्टेसोरीकी। वह भी अपने जमानेमें क्रान्तिकारी रही। उन्होंने जिस वातावरणमें उसका आविष्कार किया, वह प्रशंसा की वात है। डा० मान्टेसोरीने वालजीवनका उद्धार किया है। वालकको उसके इन्द्रिय शिक्षा द्वारा उसकी हर प्रवृत्ति और उसके व्यक्तित्वके विकासका अवसर देना उनकी शिक्षाके मुख्य अंग हैं। वैसेही उनके साधन भी शास्त्रीय ढंगसे वने हैं। वे उन महान शिक्षा—विशारदोंमें से एक हैं जिन्होंने वालकोंको शिक्षा-क्षेत्रमें वहुत ऊँचा स्थान दिया है।

हमारे छोटे वच्चोंके लिए हिन्दुस्तानमें ये तीन प्रकारकी पद्धतियाँ ज्यादातर प्रचलित हैं। इनके शिक्षा विशारद सिर्फ वड़े-वड़े शहरोंमें कार्य करते हैं। एक देहाती वालक या शहरका गरीव वालक इन शिक्षण स्थलोंसे वहुत दूर रहता है। शहरमें जहाँ-जहाँ ये प्रयोगशालाएँ चल रही हैं वे किन श्रेणीके वच्चोंके लिए चल रही हैं यह तो हम सव जानतेही हैं। ये तीनों विदेशी पद्धतियाँ अपने देशोंमें गरीव वच्चोंके लिए ही पैदा हुई थीं। फिर इन गरीव देशमें गरीव वालकोंके वीच वे क्यों नहीं पहुँचीं? शिक्षा शास्त्रियोंका यह भी कहना है कि वे वड़ी खर्चीली हैं। इसलिए वे सवकी सुविधाकी नहीं हैं। उनके साधन मँहगे हैं और साधनहो उनमें प्रमुख हैं। एक वच्चा जिसको एक वक्त भी भरपेट भोजन नहीं मिलता, दाने दानेको तरसता है, वह इतनी फीस देकर अपने विकासकी क्यों चिन्ता करने लगा? उसके लिए वे वढ़िया अंगूर भी खट्टे हैं।

किसी भी नई शिक्षा पद्धतिकी उत्तमता और उसकी उपयोगिता समाजके जरूरत पर निर्भर करती है। वह समयके साथ और देशकालके मानको समझकर आगेकी नींव डालनेवाली होनी चाहिए। उसे वास्तविकताको भूलना नहीं

चाहिए और समाजके दृष्टिकोणको सामने रखकर चलना चाहिए। वही समाज प्रगतिशील माना जाता है जो हर नये प्रयोग पर दृष्टि रखकर उसकी उपयोगिताकी जांच करता रहता है और आगे बढ़नेकी शक्ति रखता है। यही हमारे समाजके भविष्यका चित्र खींचनेवाली शक्ति है। ऊपर दी हुई विदेशी पद्धतियाँ हमारी आजकी हालतमें आम जनताके बच्चोंके पास नहीं पहुँच सकी हैं। यही उनकी कमी है और इसका मुख्य कारण है उनके खर्चीले साधन और व्यवहार। हमें वास्तविकताकी जानकारी करके देखना है। विदेशी शिक्षा कितनी ही अच्छी क्यों न हो वह हमारे बालकोंके जीवनके लिए अस्वाभाविक है। उन्हें हमारे देहातका परिचय नहीं है। उन्हें देशकी वास्तविक परिस्थितिका ज्ञान और अनुभव नहीं हैं। गांधीजीने कहा है, "यह विदेशी लिबास जहर फैलानेवाला है, यह नकल है"।

पूर्व-बुनियादीशाला और इस पद्धतिके निर्माता सबसे पहले बालकको शिक्षित बनानेकी जरूरत महसूस कर रहे थे। वास्तविक जीवनको सामने रखकरही वे हरेक कार्यको उठानेवाले थे। सात लाख देहातके सब बच्चोंकी व्यवस्था कैसे होगी यह देख रहे थे। शिक्षाका सब बोझ सरकार उठाये, यह फैसला भी व्यावहारिक नहीं है। बच्चोंके माँ बाप उनकी शिक्षाका महत्व समझनेके लिए इतने शिक्षित गुरु भी नहीं हैं। यदि माँ—बापही इसके महत्वको नहीं समझते तो दूसरा कोई क्यों यह सिरदर्द मोल ले? ऐसा दूसरा हो कौन सकता है? वह पैसा कहाँसे लायेगा? ये प्रश्न थे। नयी शिक्षाके विशारदोंको कभी कभी यह कहते भी सुना है कि ऐसे घरोंमें बालकका विकास हो नहीं सकता जब कि माँ—बापका ही वातावरण एक समस्या बना हुआ है और यदि हमारे सामने माँ-बापके समझनेका प्रश्न बड़ा है तो पहले बच्चे

को लाकर शालाके अच्छे वातावरणमें ज्यादासे ज्यादा क्यों न रखा जाय ताकि उनके व्यक्तित्वके विकासमें बाधा न आने पाये ? यह सोचना जरूरी है कि ऐसी हालतमें शाला और घरके बीच कैसा सम्बन्ध रहेगा ? क्या हम बच्चेको उनके घरके वातावरणसे यानी घरसे अलग करना चाहते हैं ? ये घर अस्वाभाविक हैं। यहाँका वातावरण स्नेहका नहीं है, बच्चोंके लिए पोषक नहीं है, ऐसा मानना पड़ेगा। इसलिए २४ घंटोमें से कुछ घंटेही क्यों न हों, बच्चा उस वातावरणमें रहेगा तो उसके मानसिक विकास और शरीर स्वास्थ्यमें बाधा आने वालीही है। इसके लिए क्या उपाय हैं ? जब हम बच्चेको हाथमें लेते हैं तब क्या उसके माँ-बाप संबंधी विचारको छोड़ सकते हैं ?

आज आधुनिक शिक्षा प्रणाली यह महसूस करती है कि, शिक्षाकी दृष्टिसे, बच्चोंके साथ ही बच्चोंके माँ-बापके साथ संबंध बढ़ाना उपयुक्त है। विदेशियोंमें इस पद्धतिके प्रति रुचि बढ़ रही है। इसमे स्वाभाविकता है क्योंकि घरही छोटे बच्चोंके सच्चे और स्वाभाविक विकासके स्थान हैं। इसलिए अच्छा और सच्चा तरीका घर है। यदि बच्चोंके माँ—बाप सहयोगी और जानकार हों तो उनका बाल्यकाल सुखमय होगा। वे तनदुरुस्त, खुश मिजाज और मिलनसार बनेंगे। वही उनके सफल जीवनकी नींव होगी। अब विचार यही करना है कि उनकी वर्तमान परिस्थितिको न भूलते हुए और बिना अधिक खर्च किए ही जीवनके लिए ऊंचे दरजेकी वह शिक्षा जो इस देशके लिए स्वाभाविक, उत्तम और संपूर्ण हो, किस प्रकार दी जाय और उसका बोझ कौन उठाये ? बापूनेही इसका उत्तर दिया है।

दूसरा अध्याय

कस्तूरबा ट्रस्टकी शुरूआतके समय जब सेवाग्राममें स्त्री शिक्षा और नई तालीमके विस्तारकी बात चली और यह देखा गया कि कस्तूरबाका कार्य देहातकी स्त्रियों और ७ साल तकके बच्चोंके लिए रहेगा और पूर्व बुनियादी तालीमका काम भी इसी क्षेत्रमें ज्यादा फैलेगा तो उस समय नई तालीमके उस विस्तृत रूपका प्रयोग सेवाग्रामके देहातमें शुरू हुआ। यह जन्मसे लेकर बुढ़ापे तक चलनेवाली शिक्षाका स्वरूप था। बापूजी स्वयं यह देखना चाहते थे कि देहातमें जहाँ खर्चीली व्यवस्थाका प्रभाव है यह कार्य किस प्रकार सफल होता है।

सन् १९४५ के आरंभमें एक दिन सुबह मैंने बापूसे पूछा कि सेवाग्रामके ढाई सालके छोटे बच्चोंकी शिक्षा कैसी होनी चाहिए?

बापू ने कहा—

हमारा प्रयत्न तो यह होना चाहिए कि जितने बच्चे हैं उन सबको हम खींच लें। जो नहीं आते उनके लिए हम स्वयं दोषी हैं। इन बच्चोंको खींचनेके लिए हमें काफी आकर्षण पैदा करना होगा। जितने बच्चे हमारे पास हैं वे सब हमारे ही लड़के हैं, यह समझकर चलना है। उनका शरीर तगड़ा हो जाय, उनका मन तगड़ा हो जाय, उनमें सामान्य सभ्यता आ जाय तो हमारा काम होगया, ऐसा मानना चाहिए। मैं नहीं मानता कि बच्चे तोड़ना फोड़ना सीखते हैं। मैंने बहुत लड़कोंको सिखाया है, किसीको तूफान नहीं करने दिया। अगर वे मेरे हाथमें रहें

तो मैं ऐसी तालीम दूं कि वे बचपनसे ही तूफान नहीं करना विध्वंस नहीं करना, यह सीखें। लेकिन जो कुछ करें वह सृजनात्मक हो, इसी में कला है।

मैं यह नहीं मानता कि बच्चे जन्मसे अच्छे या बुरे होते हैं। हाँ, स्वाभावमे तो जरूर कुछ भिन्न होते हैं, लेकिन उसे तो हम ठीक करेंगे। इससे ज्ञात होता है कि जब बच्चा माँके पेटमें आता है तभीसे उसकी तालीम शुरू होती है। इसी पर प्रौढ़ शिक्षा खड़ी है। प्रौढ़ोंके संस्कार बच्चों पर पड़ते हैं। बच्चेका संस्कार भी वहींसे शुरू होता है। बच्चेके हाथ पैर हरदम हिलते डुलते रहते हैं और समय पर वह अपनेसे कुछ न कुछ करता रहता है। उसे यह पता नहीं होता कि वह क्या कर रहा है लेकिन उसकी हरेक क्रिया रचनात्मक रहती है, विध्वंसक नहीं।

दो-ढाई सालके बच्चे हमारे हाथमे आवें और अपने हाथ पॉव हमारे बताए रास्तेसे इस्तेमाल करे तो ये कहाँ तक जायगे, मैं उसकी हद नहीं बाँध सकता। उन्हें मारकर नहीं, बल्कि प्रेमसे ही सिखाना है।

सिखानेकी मेरी पद्धति तो यह होगी कि पहले रंगोंकी पहचान कराकर चित्रसे शुरू करें। अक्षर भी तो चित्र ही होते हैं। कोई तोतेका चित्र बनाएगा, कोई सूतका, और कोई अक्षरका। इस प्रकार सबके अलग-अलग चित्र होंगे। लिखना चित्र द्वारा शुरू किया जाय। १,२, अलीफ, बे, अ, आ आदि चित्र रूपमें सिखाया जाये। जब वे अक्षर चित्र रूपमें सीखेंगे तो अलगसे उन्हें सिखाने की आवश्यकता नहीं होगी। पहले अ या १ का चित्र सीखें, सब अक्षर चित्रमय हो जायें, तब उनका ज्ञान दिया जाय। "थ्री आर्स" बादमें आवेंगे। आजकी तरह "थ्री आर्स" नहीं सिखाए

जायेंगे। पहले पढ़ना आ जाएगा तब चित्ररूपमें लिखना शुरू किया जायगा। जेलमें मैंने एक प्रायमरी रीडर लिखी थी। मालूम नहीं कहाँ खो गयी। इसी तरह बच्चेकी बुद्धि बढ़ती जाती है, हाथ भी चलते हैं, पैर भी चलते हैं और वह सब खेलते खेलते सीखता है।

काम और खेल, दो विभाग नहीं हैं। वह आगे बढ़ता है तो इसी तरह उसकी जिन्दगी खेल या काम बन जाती है। मेरे पास चन्द घंटा काम और चन्द घंटा खेल, ऐसा कोई विभाजन नहीं है। मैं बचपनसे ऐसेही चला हूँ। मुझे कभी ख्याल नहीं आता कि अब खेलका समय हुआ। मेरे लिए लिखना भी खेल था। बारह साल तक इसी प्रकार रहा। आज मैं तो कोशिश करता हूं कि दोनों लिपियाँ साथ सीख लूँ। बच्चोंको तो मैं दो साल पहले सिखा दूंगा। मेरे लिए यह काम आज कठिन मालूम होता है किन्तु बच्चोंके लिए तो यह बिल्कुल आसान है। बच्चेके लिए यह सब खेल होगा और जैसे जैसे वह आगे बढ़ता जाये यह सब खेल ही बनता जायगा। मेरे लिए तो सच्ची नई तालीम वही है कि बच्चे खेलते खेलते सीख लें। विदेशी भाषा सीखनेमें जितना समय दिया जाता है उतने समयमें बच्चे दूसरी दस लिपियाँ सीख सकते हैं।

यहाँ यह याद रखना है कि सरकारी मदर्सोंके लिए वातावरण पैदा करना पड़ा था। सत्ता रहते हुए भी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा था। हमें तो वातावरण पैदा करना है। यही पुनरुद्धार है। हमारी सब प्रकारकी अच्छाईयाँ जो मिट चुकी हैं उन्हें नई तालीम द्वारा फिरसे फैलाना है। इस तरहसे काम करना हमें आसान होना चाहिए। अभी तक हमने गाँवोंमें सही दृष्टिसे सच्चा प्रवेशही नहीं किया है। इसलिए हमें यह काम आसान—

नहीं लगता। नई तालीममें वह शक्ति है जो ग्रामोत्थानका काम बड़े चमत्कारके साथ पूरा करेगी।

बचपनसे ही यदि लड़के लड़कियाँ हमारे हाथमें आवें और सात साल या उससे भी अधिक समय तक हम उन्हें शिक्षित करें फिर भी यदि उनमें स्वावलम्बन शक्ति न आवे तो हमें यह मानना पड़ेगा कि नई तालीमका पूरा पूरा अर्थ हमने ग्रहण नहीं किया है। जो आधुनिक शिक्षा हमें दी जाती है उसीके कारण हमारे मनमें दुविधा होती है कि शिक्षा स्वावलम्बी हो ही नहीं सकती। मेरा दृढ़ विश्वास है कि यदि नई तालीम द्वारा हम बालकको पूर्ण स्वावलम्बी नहीं बना सके तो ऐसा मानना होगा कि शिक्षक समुदाय उसे समझता ही नहीं है। मेरी रायमें नई तालीमके जितने लक्षण हैं उनमें स्वावलम्बन एक मुख्य अंग या लक्षण है। अगर यह बात छोटे लड़के लड़कियोंके लिए सही है तो फिर प्रौढ़ शिक्षामें तो स्वावलम्बन होनीही चाहिये। अगर ऐसा माना जाय कि प्रौढ़ शिक्षा मुश्किल काम है तो मैं यह कहूंगा कि यह सिर्फ वहम है। बच्चोंको जिस प्रकार "थ्री आर्स" सिखानेके पक्षमें हम नहीं हैं ठीक उसी प्रकार यह नहीं भूलना चाहिए कि नई तालीममें सम्पूर्ण सहयोग आरम्भसे ही अमलमें लाना चाहिए। सहयोगका पूरा अर्थ जो जानता है उसके मनमें स्वावलम्बनका प्रश्न उठही नहीं सकता।

बापूका यह वक्तव्य पूर्व बुनियादी और सयानोंकी तालीमका सिद्धान्त रूप है। बालककी शिक्षा उसकी माँ की शिक्षासे सम्बन्धित है, यह भी सिद्धान्तही है। माँ—बापके परम्परागत संस्कार बच्चेके स्वभाव और प्रवृत्तिको बनानेवाले होते हैं। जिस घरमें वह पैदा होता है वहाँका वातावरण ही उसके शिक्षणका साधन है। यह स्वाभाविक है कि बच्चेका शरीर, बुद्धि, और मन उसी

वातावरणमें निर्मित होता है। नयेसे नये वैज्ञानिक और शिक्षा विशारद भी यह बात मानते हैं कि बालकका विकास और शिक्षा उसके घरेलू वातावरण और उसकी वास्तविक सृष्टिपर निर्भर करते हैं। कृत्रिम वातावरणमें उनका पूर्ण विकास नहीं हो सकता। शाला और घरके लालन-पालनमें विरोधी भाव नहीं होना चाहिए क्योंकि उसका उसके जीवनपर असर होता है। इसी उम्रमें बच्चेका शारीरिक और ऐन्द्रिक विकास होता है। अनेकों प्राकृतिक शक्तियों और भावोंका उसमें प्रादुर्भाव होता रहता है। उसे समझनेकी जिम्मेदारी माँ-बापमें आनी चाहिए। बच्चेकी परवरिशके वे जिम्मेदार हैं। उन्हें उनकी जिम्मेदारीका ज्ञान देना जरूरी है। इसीमें प्रौढ़ शिक्षाका एक हिस्सा है। हमने इसी लिए प्रौढ़ शिक्षा और पूर्व बुनियादीका गहरा सम्बन्ध माना है। जब हम किसी बालककी शिक्षाका भार अपने हाथमें लेते हैं तो उसके माँ-बापको अपना सहयोगी बनाना बहुत जरूरी हो जाता है। बालकके विकासके लिए क्या जरूरी है, इसे समझते हुए उन्हें हमारे कार्यमें मदद करना जरूरी है। शिक्षक और पालकका यह स्नेह सम्बन्ध बालकके जीवनमें आनन्द भर देता है।

दूसरा प्रश्न यह है कि इस शिक्षामें स्वावलम्बन कहाँ है? शुरूमें ही कहा गया है कि हमारी शिक्षा खर्चीली नहीं होनी चाहिए, वरना खर्चका बोझ कौन उठायेगा? इसके लिए माँ-बाप, शिक्षक और समाजका सम्बन्ध इस तरह हो कि बच्चेकी शिक्षा अनिवार्य है, ऐसा सब मानने लगें। शिक्षणका तरीका इतना सीधा-सादा और सरल हो कि उसमेंसे स्वावलम्बनका पाठ बच्चे के साथ साथ माँ-बाप और समाजको भी मिले। देहातका जीवन स्वावलम्बी होता है। इसी जीवनको असली रूप देते हुए हमें आगे बढ़ना है।

तीसरा अध्याय

बालक, पालक और सामाजिक वातावरण

बच्चेके घर और सामाजिक वातावरणका सम्बन्ध एक दूसरे से चोली दामनका सा है। बच्चेकी तालीम जन्मसे ही कैसे शुरू होती है, यहाँपर इसे थोड़ा स्पष्ट कर देना लाजिमी है। जब हम किसी बच्चेमें गुण या अवगुण देखते हैं तो चट कह उठते हैं "जैसा बाप वैसा बेटा" या माँ यदि फूहड़ हो तो बेटी कैसे चतुर होगी। इसका मतलब यह है कि जो संस्कार माँ—बापमें पहलेसे विद्यमान रहते हैं उनका असर बच्चोंके स्वभाव और व्यक्तित्व द्वारा प्रकट होता है। उसके चाल-चलन, रहन-सहन, बोल-चाल आदि को देखकर आप कह सकते हैं कि उसमें अमुक वंशगत विशेषता दादा, नाना, माँ—बाप आदिके स्वभाव, प्रकृति, आहार-विहार रहन-सहनके असर बच्चोंमें वंशगत विशेषता बनती जाती है। यदि हम उपरोक्त बातोंको समझ लें तो माँ बापको समझे बिना या उनकी कठिनाइयों या प्रश्नोंको समझे बिना एक बच्चेकी शिक्षाका दावा नहीं कर सकते, यह मानना पड़ेगा। इसी कारण हमारा सम्पर्क खासकर माँ के साथ तो अवश्य ही होना चाहिए।

जन्मके बाद जबसे बच्चा माँकी गोदमें पलता है तभीसे वह उसका आश्रय स्थान बनती है। समझदार माँ अगर बच्चेकी परवरिश करे तो वह तन्दुरुस्त और खुशमिजाज होगा। इसका मतलब यह नहीं कि वह उसे हमसे ज्यादा लाड़ प्यारसे बिगाड़ दे। यदि वह ठीक ठीक उसकी देखभाल करती है, साफ रखती

है, समय पर खाना देती है, ढगसे समयके अनुकूल कपड़े पहिनाती है, उसके स्वतंत्र खेलकूदमें बाधा नहीं डालती और बीमारीमें किस तरहकी दवा देनी चाहिए यह जानती है तो इतनेमें ही वह अपनी जिम्मेदारीका पूर्णरूपसे निर्वाह कर लेती है। धीरे धीरे वह उसके शारीरिक और मानसिक विकासकी जरूरतको समझने लगती है और यही उसकी प्रगति है।

पहले कुछ महीने माँकी गोद बच्चेका आश्रय स्थल बनती हैं। वहाँ वह निर्भयता पाता है। धीरे धीरे उसका व्यवहार बढ़ता है। वह अपने घरको आश्रय स्थान बनाता है जिसमें माँ—बाप, भाई-बहन, सभी हैं। यदि उस आश्रय स्थानमें शिक्षाप्रद और सुखमय वातावरण नहीं होगा तो बच्चेका स्वभाव बिगड़ेगा। वातावरणके मुताबिकही बच्चा पनपता है। अगर हम किसी जगह जायें और वहाँका वातावरण दिलको लुभानेवाला या हमें पसन्द हो तो हम तुरन्त कह उठते हैं "बिलकुल घर जैसा लगता है"। उसमें हम स्नेह पाते हैं, अपनापन पाते हैं। घरका स्नेह-भाव और अपनापनही बच्चेके सुखी और समृद्धशाली जीवनकी नींव है और वही उसे आगे बढ़नेकी शक्ति प्रदान करता है। ऐसे घर बनानेवाले माँ बाप होते हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि बच्चोंके प्रति माँ-बापकी जिम्मेदारी महान है।

प्रौढ़ शिक्षामें पालकोंकी जिम्मेदारी महत्वका विषय होनी चाहिए। इस जिम्मेदारीको समझकर बच्चेकी देखरेख, पालन पोषण किस तरह करना चाहिए यह उन्हें समझाना चाहिए। आजकल मामूली घरोंमें गरीब बच्चोंसे जो काम लिया जाता है उसे काम सिखाना नहीं कह सकते। उसे तो बिना पैसेकी गुलामी कहना चाहिए। वहां वह बचपन भूलकर बड़ा बूढ़ा बन जाता है, खासकर गरीब घरकी लड़कियाँ तो घरका पूरा

भारही उठा लेती हैं। अतः माँ-बापको समझाना एक अनिवार्य बात है। उन्हें यह समझाना चाहिए कि आगे आनेवाला समाज यदि शक्तिशाली बनाना है तो आजके माँ बापको चाहिए कि बच्चा ऐसा काम करना सीखे जिससे उसकी बुद्धि काम द्वारा विकासकी ओर जाय। उसे स्वतंत्र इन्सानकी तरह आगे बढ़ना चाहिए, गुलामकी तरह जिन्दगीका बोझ नहीं ढोना चाहिए। एक तरफ जहाँ काम करानेवाले माँ-बाप जानवरोंकी तरह बच्चोंको निर्ममताकी चक्कीमें पीसते हैं दूसरी ओर वे माँ-बाप हैं जिन्होंने अत्यन्त लाड़-प्यारसे उन्हें बिगाड़ रक्खा है। हमारी प्रौढ़ शिक्षा का मूल उद्देश्य यही है कि माँ-बापको सुधारकर हम उन अड़चनों को दूर करें जो बच्चोंके आत्मप्रकाशमें बाधक हैं।

छोटे बच्चोंको शालाके वातावरणमें घरका आभास मिलना चाहिए। जब घर और शालामें स्नेहभाव रहेगा, आपसमें समानता रहेगी, तो बालक शालाकी कई एक अच्छाईयां घर लावेगा। वह घरमें भी शालाका वातावरण भरनेकी कोशिश करेगा। परन्तु अगर घर और शालाके वातावरणमें परस्पर विरोध रहेगा तो वह बच्चेके विकासमार्गमें बाधा डालेगा। उसपर दो भिन्न-भिन्न वातावरणोंका प्रभाव समानरूपसे नहीं पड़ेगा। फिर दोनोंमें अच्छाई या बुराई जो ज्यादा शक्तिशाली होगी वही अपना ज्यादा असर उसके जीवनमें डालती रहेगी। इसलिए रक्षक और शिक्षक, दोनोंही पारस्परिक स्नेहसे बालकके जीवन पर सुसंस्कार डालें ताकि उसके जीवनमें विरोधात्मक विचारही न पैदा हों। उसकी जिम्मेदारी रक्षक और शिक्षक दोनों पर समान रूपसे है।

जैसे शाला और घरकी एकता और शिक्षित वातावरण बच्चेके समृद्ध जीवनके पोषक हैं वैसेही समाजका भी वातावरण होना चाहिए। हमारे देशमें देहाती समाजही शिक्षाके केन्द्र हैं। एक

एक प्राणी इस सामाजिक शासनके दायरेमें रहता है। वह सरकारी कानून तोड़ सकता है लेकिन सामाजिक कानूनके विरुद्ध कुछ करनेकी हिम्मत नहीं कर सकता। फिर चाहे वह कितना ही पढ़ा लिखा और विद्वान क्यों न हो अगर उसे अपने कुटुम्बके साथ रहना है तो उसे समाज शासनके अन्तर्गत चलना ही होगा। अब हमें इसपर विचार करना है कि इस समाजिक शिक्षा केन्द्रको हम किस प्रकार हाथमें ले सकते हैं।

हरेक व्यक्तिके वैयक्तिक और सामाजिक जीवनमें मधुर संयोग रहना जरूरी है। आजके बालक कलके नागरिक हैं। यदि कोई समाज अपने शासनसे व्यक्तिके जीवनको दबानेवाला रहेगा तो वह समाज जिन्दा नहीं रहेगा। ठीक इसी तरह अगर कोई आदमी सामाजिक जीवनके विपरीत चलेगा तो वह अपने पैरोंमें आप कुल्हाड़ी मार लेगा। कहनेका मतलब यह है कि समाजसे व्यक्ति और व्यक्तिसे समाज है। दोनों एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं, एक दूसरेके पोषक हैं और एक दूसरेकी शक्ति बढ़ाते हैं। अच्छे, समझदार और शिक्षित नागरिकोंका समाज प्रभावशाली समाज होता है। यदि रक्षक (माँ-बाप) और शिक्षक, दोनों समझ लें कि हमारे पारस्परिक सहयोगसे प्रभावकारी समाज बननेवाला है, हम समाजके हिस्से हैं, और यदि इस दिशामें उनका सच्चा प्रयत्न होगा तो बालकोंकी शिक्षा पूर्ण और उनका भविष्य उज्वल होगा। यही वजह है कि पूर्व बुनियादी पाठ्यमें प्रौढ़ शिक्षाका स्थान बड़े महत्त्वका है। अगर बच्चेके लिए हमें वातावरण तैयार करना है तो समाज और कुटुम्बियोंमें मेल बढ़ाना होगा क्योंकि हमारे पास आनेवाला बच्चा कुटुम्ब और समाजका उत्तरदायित्व उठानेवाला है।

अब आगे स्वावलंबनकी बात आती है। कोई पूछ सकता है

कि स्वाश्रयी या स्वावलम्बन का क्या अर्थ है। इसका अर्थ यदि कमाई है तो दो तीन सालका बच्चा क्या काम कर सकेगा? बात बिलकुल ठीक है। इतने छोटे बच्चेसे कमाईकी अपेक्षा नहीं की जा सकती। परन्तु इतना सत्य है कि उसका हिलना, चलना, खेल-कूद—सभी सृजनात्मक होते हैं। उसमें अगर प्रगति हो तो उसकी क्रिया-शक्ति उत्तरोत्तर बढ़ती जायगी। खेल खेलमें वह हरेक काम करनेका आदी हो जाये तो उसे आगे चलकर कोई काम बोझ नहीं मालूम होगा। कामके साथ वह उस काममें दिमाग भी लगायेगा जिससे उसकी क्रियात्मक प्रवृत्ति अधिक बढ़ती जायगी। जिस परिवारमें माँ-बाप काम करनेवाले होते हैं वहाँ बच्चा भी कुछ न कुछ करता ही रहता है। कामके साथ साथ बुद्धि भी तैयार होती है। इसलिए आगेकी शिक्षा संस्थाओंकी नींवही स्वावलंबनकी बुनियाद पर डालनी है। बापूजी हमेशा देहातकी दृष्टिसे सोचते थे यानी पूरी दुनियाके समाज को देखते थे। आजकी हमारी सामाजिक हालत देखकरही उन्होंने कहा था—प्रौढ़ शिक्षाके मानी प्रौढ़ोंको उनकी जिम्मेदारी समझाना और उनमें कमानेकी शक्ति बढ़ाना है। एक कमाए और सौ खाए ऐसा नहीं हो सकता। हरएक कमाये और हरएक खाये, यही समग्र जीवनका मूल मंत्र है। मुझे मरीजके मरनेका डर नहीं है। मैं उसे मरीज बननेसे रोकूँ, इतनाही बस है। अच्छे समाजमें पंगु बहुत कम रहते हैं। बच्चोंको तो माँ बाप खिलातेही हैं। अच्छे कुटुम्बमें बच्चे भी लम्बे अरसे तक भार नहीं होते। बच्चा जहां ४, ५ सालका हुआ कि कुटुम्बकी मदद करना प्रारम्भ कर देता है। यही हमारी नयी तालीम है और यही हमारी नयी तालीमके स्वावलम्बनका अर्थ है।

चौथा अध्याय

पूर्व बुनियादीके चार विभाग

माँकी गर्भावस्थासे लेकर सात सालके बच्चेका जीवन बड़ा महत्त्वपूर्ण है। यह समय चार भागोंमें बांटा जा सकता है: १—गर्भावस्थासे जन्म तक, २—जन्मसे लेकर दो या ढाई साल तक, ३—ढाई सालसे लेकर चार साल तक, ४—चार सालसे लेकर सात साल तक। इसी समयको हम पूर्व बुनियादी काल कह सकते हैं।

पहलेकी दो अवस्थाओंमें माँ और बच्चा दोनोंका हमारी शिक्षासे सम्बन्ध रहता है। इस वक्त शरीर शास्त्र और आरोग्य, इन्हीं दो बातोंपर ज्यादा जोर देना है। कस्तूरबा ट्रस्टके वैद्यकीय विभागने इसके कार्यक्रमकी रूप रेखा बनाई है। कहीं कहीं उसका प्रयोग भी हो रहा है।

माँके आरोग्य और हिफाजत पर बच्चेका आरोग्य और हिफ़ाजत निर्भर है। लड़कियोंकी तरफ हम ज्यादा ध्यान नहीं देते। खाने पीने और संगोपनमें लड़कोंके तरफही ज्यादा ध्यान दिया जाता है। आज हमें यह समझना जरूरी है कि इसीका कुपरिणाम लड़कीको आगे चलकर भुगतना पड़ता है। उम्रके पहले पांच सालमें शरीरकी हड्डियाँ मजबूत होती हैं। इन दिनों यदि लड़कीके शरीरको कैलशियम (चूना) न मिला या खुराकमें प्रमाणतः कमी रही तो हड्डियाँ कमजोर और सिकुड़ी हुई रहती हैं। इसका पता किसीको नहीं रहता लेकिन जब माँ बननेका अवसर आता है तो उसे अपनी जानको कुर्बान करनी पड़ती है।

इसलिए हम जितना लड़केके आरोग्यकी ओर ध्यान देते हैं उससे ज्यादा या कमसे कम उतनाही लड़कीके आरोग्यका भी ध्यान रखें। स्त्रियोंको इन बातोंका ज्ञान कराना आवश्यक है। गर्भिणी स्त्रीके आरोग्यपर दृष्टि रखते हुए उसे यह भी समझना चाहिए कि जो बच्चा पेटमें है उसे माँ की हड्डी और खूनसे पोषण मिलता है। वह माँके भोजनसे भोजन प्राप्त करता है। इसलिए नौ मास तक उसे अपनी हिफाजत बच्चेकी हिफाजतको मद्देनजर रखकर करनी चाहिए। बच्चेकी रक्षा करते हुए उसे अपनी जान की रक्षा करनी है और कई रोगोंसे जो खासकर इसी समय होते हैं अपनेको बचाना है। उसे नियमित आहार और विश्रामकी जरूरत है। उसे सफाईकी आदत डालनी चाहिए। उसे भोजनमें ऐसी चीजें इस्तेमाल करनी चाहिये जिनसे उसका स्वास्थ्य ठीक रहे और बच्चेका पूरा पूरा पोषण हो।

डाक्टरोंका कहना है कि इस अवस्थामें धीरे धीरे माताको ३००० कैलोरिक उष्णता उत्पादक परिमाणमें आहार लेना चाहिए। भोजनमें फल, दूध, साग, सब्जी और थोड़ी मात्रामें घी या मक्खन लेना चाहिए। दाल, भात और रोटी जो रोजका भोजन है वह भी नियमित हिसाबसे लेना चाहिये। दूध और साग-सब्जी, जैसे गाजर, टमाटर, मूली, गन्नेका रस या नीरा (जहाँ मिलती हो) युक्त प्रमाणमें आहारमें ले तथा नियमित व्यायाम और विश्राम करे तो माँको बच्चेके जन्मका सच्चा आनन्द मिल सकेगा। पर्याप्त पोषक भोजन न पानेसे ज्यादातर गरीब या परदेमें बंद रहनेवाली स्त्रियाँ पीली और शक्तिहीन होजाती हैं और प्रायः उनकी हड्डियाँ सिकुड़ी हुई होती हैं। ऐसी अवस्थामें अक्सर जच्चे और बच्चे, दोनोंका प्रसवकालमें

ही अपने जानसे हाथ धोना पड़ता है। यदि माँ इस बातको समझ ले और उसके परिवारवालोंको भी इस खतरेका ज्ञान हो तो हर साल अगणित माँ और बच्चे मर जानेसे बच जायँ। बीमार माँका बच्चा भी कमजोर होता है और जन्मके बाद साल भरके अन्दरही दुनियासे कूच कर जाता है। हिन्दुस्तानमें इस प्रकार बालकोंकी मृत्यु संख्याको देखकर आज दुनियाके आगे हमारा सिर नीचा है। हर डेढ़ या दो साल बाद इतने परिश्रम और कुर्बानीके बाद माँको अपने खून और हड्डियोंसे निर्माण किये हुए बच्चोंको हाथसे खोना पड़ता है और खुद भी एक भार सम जीवन बिताना पड़ता है। अफसोस है कि यह सब केवल हमारे अज्ञानके कारण होता है।

पूर्व बुनियादीशालाके साथ एक आरोग्य केन्द्र होना अनिवार्य है। यदि वह पूरी तरह न भी रखा जाय तो भी एक ग्रामसेविका की हैसियतसे माताओंको इन बातोंका ज्ञान देना जरूरी है। जो शिक्षक या शिक्षिका गांवमें काम करने लग जायें उन्हें इन विषयों की थोड़ी जानकारी होना आवश्यक है।

जन्मके बाद पहले दो साल बच्चा अगर अच्छी तरह पनप गया तो उसके आगेके विकासका काम आसान है। धीरे धीरे वह स्वतंत्र होता है। लेकिन जन्मके बादके दो ढाई साल बड़े खतरनाक हैं। शुरूमें जब वह माँके पेटमें था तो वह स्वस्थ अवस्थामें था उसका जीवन माँके जीवनसे बंधा था। उसीसे परवरिश पाता था, कोई चिंता न थी। जन्म पाकर वह एक स्वतंत्र अस्तित्व रखने लगा और यह स्वतन्त्रता भी उसे अचानक मिली। अब हर चीजके लिए परिश्रम करना है, हर बातकी आदत डालनी है, सर्दी गर्मी बरदाश्त करनी है, खानेके लिए परिश्रम करना है,

अपरिचित दुनियासे परिचय प्राप्त करना है। जीवनमें यह परिवर्तन अचानक आता है। वह कितना बरदाश्त करके आता है! बेचारा प्रवासके मारे थका रहता है। आराम चाहता है लेकिन हम अज्ञान माँ-बाप इन बातोंको कहाँ समझते हैं? हम तो पुत्रके जन्मके आनन्दमें मग्न रहते हैं।

अबतक बच्चेके लिए कुदरती तौरसे मुलायम स्थल और गरम वातावरण तैयार था पर बाहर आतेही बेचारेको जमीन या चटाईपर सुला दिया जाता है। एक फटा-पुराना चिथड़ा लपेट दिया जाता हैं। पहले माँ घूमती फिरती थी तो उसे स्वच्छ हवा भी मिलती थी। अब तो वह धुआँ भरी अंधेरी कोठरीमें पड़ा रहता है। यदि माँको भगवानने दूध दे दिया तो अच्छाही है, नहीं तो माँकी कमजोरीके कारण दूधके अभावसे उसे भूखोंही चिल्लाना पड़ता है। जहाँ तहाँसे दूध लाया जाता है। गन्दे ढंगसे उबाला जाता है और किसी भी चिथड़ेको उसमें भिगोकर बच्चेके मुँहमें लगा दिया जाता है। पिया तो पिया, नहीं तो कोई क्या करे। पानी पिलानेको कहता है तो दूसरा बच्चेको सर्दी लगजाने का डर बताता है। इस तरह बेचैनोंकी जिन्दगी बिताते हुए छः माह गुजर जाते हैं। लेकिन इन दिनों भी माँ यदि समझ ले कि अबतक मैं गलत तरहसे इसकी हिफाजत करती थी, अब इसे जानकारीसे संभालूँगी, तो बच्चेका जीवन आनन्दमय होजाये। आज माँको यह सब समझना है कि बच्चेको स्वच्छ हवा चाहिए, साफ कपड़े चाहिएँ ताकि वह नन्हासा जीव बीमारियोंसे बचा रहे। उसके लिए दूधका किस प्रकार इन्तजाम होना चाहिए, कितनी बार पिलाना चाहिए ताकि न उसकी भूख मारी जाय, न उसे बदहजमी ही हो, उसको कैसे कपड़ोंमें रखें कि उसका कोमल शरीर ठंड

और गरमीसे बचा रहे, कब नहलाना चाहिए और कब सुलाना चाहिए—इन सब बातोंकी जानकारी माँको होना जरूरी है। जब वह इन सब बातोंपर भलीभांति ध्यान देगी तभी वह धीरे धीरे बच्चेमें अच्छी आदतें डालनेमे सफल होगी और उसके शरीर के पूर्ण विकासमें भी सहायक होगी। आठ नौ माह बाद बच्चा बाहरी जीवनमें घुसने लगता है और तभी दांतोंकी शिकायत शुरू होती है। धीरे धीरे बच्चेके सभी दाँत निकल आते हैं। मगर सभी दांत निकलने तक बच्चेको बड़ी परेशानी उठानी पड़ती है। यदि शरीरमें चूना (कैलशियम) या खूनकी कमी रहती है, या पहलेसे पूरा खाना नहीं मिलता है तो ऐसी हालतमें उसका जीवनही खतरेमें रहता है। छूतकी बिमारियोंसे बचाना चाहिए। पहले दो साल बच्चा यदि पनप गया तो उसका आगेका पालन पोषण आसान है। धीरे धीरे वह स्वतंत्र होने लगता है, स्वयं चल सकता है, थोड़ा बहुत बोल सकता है, अपने चारों ओर की चीजों और परिवारके लोगोंको समझने लगता है। इस समय बाहरी वातावरणका अच्छा असर डालना हमारा काम हो जाता है और यहींसे हमारा पूर्व बुनियादी वर्ग शुरू होता है।

अब शालाका काम शुरू हो जाता है। दो सालका बच्चा अभी माँसे ज्यादा हिला मिला रहता है। शालामें आता है परन्तु अधिक देर माँसे दूर रहना पसन्द नहीं करता है। उसका खिंचाव घरकी ओर रहता है जो स्वाभाविक है। लेकिन अगर घर और शालाका वातावरण एकसा रहेगा, माँ—बाप और शिक्षकमें कोई भेद नहीं दिखायी पड़ेगा, तो बच्चा निर्भयतासे बड़ी आसानीके साथ शालाके अनोखे वातावरणमें हिल-मिल जायगा इसलिए शुरू से ही बच्चोंको तालीम देनेवाले शिक्षकको अपने कामके घंटेसे

निश्चित समय बच्चोंके घर जाने और उसके माँ बापसे बातचीत करनेके लिए देना जरूरी है। बच्चोंमें इस प्रकार शिक्षकके प्रति आत्मीयता बढ़ती है और उसे शाला आनेमें झिझक नहीं होती।

अब, शरीर विकासके साथ बच्चेका सम्पूर्ण विकास किस तरह होगा, इसे सोचना है। इन्द्रिय विकास तथा आत्मप्रकाश द्वारा बच्चा सम्पूर्ण विकासकी ओर आता है। सक्रिय जीवनकी नींव यहींसे शुरू होती है। हाथ पैर चलानेकी इच्छा शुरूसे रहती है। अब वह हाथ पैरका उपयोग बुद्धिके साथ करनेको अधीर होता है। उसके लिए हर चड़ी काम है। उसका खेलही काम है। अब शिक्षकको यह जानना चाहिए कि सक्रिय जीवन क्या है। एक दो या ढाई सालके बच्चेसे हम क्या काम करवा सकते हैं। बुद्धिमान शिक्षक जानता है कि बच्चे जब बहुत तंग करते हैं तो माँ उसे बहलानेके लिए कितने काम बताती है, जैसे "कटोरी रख आ, थोड़ा पानी दे, छोटे भाई या बहनका कपड़ा ला दे" इत्यादि। बच्चा खुशी खुशी सारा काम दौड़ दौड़कर करता है। माँके साथ कभी रोटी बेलता है तो कभी बर्तन माँजता है, कभी बापके काममें हाथ लगाता है। कामकी दृष्टिसे तो काम कुछ नहीं होता लेकिन बच्चेके लिए यह शिक्षा है, उसकी क्रियात्मक प्रवृत्तिको बढ़ावा देना है।

हमारे देहातका वातावरण इस क्रियात्मक प्रवृत्तिका पोषक है। बच्चा सीधा निसर्गके सम्पर्कमें रहता है। माँ-बापका काममें लगा रहना बड़े गौरसे देखता है। आजका देहाती जीवन ठीक नहीं है। उसीको हमें बनाना है। बच्चेकी इस क्रियात्मक प्रवृत्तिको शास्त्रीय ढंगसे आगे बढ़ानेके लिए वातावरण घरमें ही पैदा करना होगा। शहरके बनिस्बत गाँवके बच्चे छोटी उम्रमें ज्यादा

फुर्तीले, तल्लख और खुशमिजाज होते हैं। यदि कोई बीमारी भी है तो स्वस्थ और उसे साफ रहना सिखाया जाय। कामके साथ साथ ज्ञान भी बढ़ेगा। खाने पीनेमें हिफाजतकी जानकारी और बीमारीमें देखभाल करनेका तरीका यदि ठीक ढंगसे रहे तो बच्चे कहाँ तक बढ़ेंगे इसे कहा नहीं जा सकता। उनके हाथ तैयार हैं, उनमें दिमाग डालना हमारा काम है।

सक्रिय जीवनकी तरह गुण विकासकी भी जरूरत है। आज देहात जिस तरह कूड़ोंसे भरा रहता है उसी तरह देहाती जीवन भी रूढ़ि, बुरी आदतों, आलस आदि कूड़ोंसे भरा रहता है। इसका खराब असर बच्चोंपर पड़ताही है। हमें छुटपनसे ही उनमें गन्दी आदतसे नफरत पैदा करनी है, बुरी बातोंसे बचाना है, आलस्यको दूर करना है। मतलब है कि उनमें ऐसा स्वभाव पैदा करना है कि ये बातें स्वयं हट जायें। यही बच्चे ८, १० सालमें गाँवके कामकी जिम्मेदारी उठाने लायक होंगे और अपने माँ-बापको सिखाएँगे।

गुणविकासके लिए मुख्य बात है : आदत। जब किसी चीजकी आदत हो जाती है तो वह स्वभावमें दाखिल हो जाती है यानी स्वभाव आदतसे ही बनता है। छुटपनसे ही खाने पीने या रहने-सहनेकी जैसी आदत डाली जाती है उसे छोड़नेमें बड़ी कठिनाई होती है। हम कहते हैं यह हमारा स्वभाव बन गया है। इसलिए शिक्षा शास्त्रमें आदत और वातावरणको भी वंशपरम्परागत गुण का महत्त्व देना जरूरी है।

यहाँ मामूली व्यावहारिक मनोविज्ञानकी दृष्टिसे दो चार बातें कहना जरूरी है।

पाँचवाँ अध्याय

बालकोंकी गुणविकास सम्बन्धी कुछ मोटी मोटी बातें

यह तो पहले ही बता दिया गया है कि गुणविकासके लिए बालकोंमें अच्छी आदत डालना जरूरी है। दूसरी दूसरी आदतोंके साथ संयम आदि गुणोंको बढ़ाना है। बच्चोंका जीवन भावना-प्रधान होता है। उनकी अधीरता और उनका अशिष्ट हठ इन्हीं कारणोंसे बढ़ता है। यदि शिक्षक यह जान ले कि बच्चा धीरे-धीरे आत्म-संयमकी आदत किस प्रकार डालता है तो वह आगे चलकर देखेगा कि बच्चेका भावनामय जीवन ऊँचे दर्जेके जीवनके रूपमें ढल जाता है। हम बच्चोंमें आत्म-संयम धीरे-धीरे छोटी-मोटी बातों द्वारा पैदा कर सकते हैं। शिक्षा-कालकी अच्छी आदतों द्वारा ही बच्चा आगे चलकर चरित्रवान, समझदार, और जिम्मेदार नागरिक बन सकता है। आदत डालनेका काम प्यारसे ही हो सकता है। डर दिखाकर या डाँटकर काम लेनेसे बच्चेके मनपर बोझ पड़ता है। उसका मानसिक आरोग्य नष्टहो जाता है।

सफाईकी आदते शरीरके आरोग्यके लिए हैं। लेकिन उनका असर मन पर भी पड़ता है। चित्त प्रसन्न रहता है। नियमित जीवनसे जीवन सुखमय हो जाता है और शिक्षाका काम बहुत आसान हो जाता है। नियमित जीवन मानसिक आरोग्यके लिए लाभदायी है। इसका मतलब यह नहीं कि जीवन यंत्रमय हो जाय। परन्तु व्यवस्थित जीवन तो जरूरी है ही।

नियमित जीवनमें सफाईकी आदत जिस तरह बचपनमें ही डालनी चाहिए उसी तरह सक्रिय जीवन भी छुटपनमें ही

होना जरूरी है। छुटपनसे ही अगर सक्रियताकी आदत पड़ गयी तो वही बच्चा आगे चलकर उत्साही और जिम्मेदार नागरिक बन सक्ता है। बच्चा धीरे धीरे वातावरणसे कई प्रकारकी शिक्षा लेता है। सक्रिय जीवन मानसिक स्वास्थ्यके लिए एक महत्वका विषय है; निष्क्रियता जीवनको नष्ट करदेती है। निष्क्रियताकी आदत अगर शुरूसे ही होगयी तो वह बच्चा आगेके जीवनमें निष्क्रिय, निर्बल और निरुपयोगी इन्सान होगा और सामाजिक जीवनका बोझ बना रहेगा।

आज्ञापालन एक बड़ा भारी प्रश्न है। बिना आज्ञापालनके बच्चे किस तरह शिष्ट होंगे? इस स्वतंत्रताके युगमें किसी पर किसी प्रकारका दबाव भी नहीं डाला जा सकता। ऐसी हालतमें बच्चोंको आज्ञापालनका काम सिखाना टेढ़ी खीर है। बच्चेकी स्वतंत्रताकी रक्षा करनेवाले तथा उसके व्यक्तित्वके स्वतंत्र विकास-के समर्थक लोग तो इसका विरोध ही करेंगे कि बच्चेपर हम किसी प्रकारका दबाव डालें। उनकी बात सच भी है।

जबरदस्ती आज्ञापालन कराना बच्चेके जीवनको नष्ट कर देता है। बड़ोंमें हुकूमतकी आदत होती है। हुकूमतके कारण बच्चेका विकास रुक जाता है। लेकिन जिस तरह अस्वाभाविक ढंगसे आज्ञापालन न कराया जाय ठीक उसी तरह अस्वाभाविक स्वतंत्रतासे भी बच्चेको चलने देना उसके जीवनको नष्ट करना है। बच्चा अगर मनमाना चलने लगता है तो कौटुम्बिक जीवनमें कितनी हलचल मच जाती है, इससे सभी परिचित हैं। फिर सम्पूर्ण आज्ञापालनकी अपेक्षा करना भी बुरी बात है। इससे बच्चा यंत्र बनजाता है।

इसके लिए कुछ मोटी मोटी बातें ध्यानमें रखना और नियम बना लेना आवश्यक है। स्वाभाविकरूपसे बच्चा बड़ोंकी आज्ञाका

पालन करे, ऐसा वर्ताव बड़ोंके ही जीवनमें होना चाहिए। बच्चेसे हम कुछ कहें और खुद कुछ करें तो हमपरसे उसका विश्वास हट जाता है। आज्ञापालनकी आदत डालनी हो तो बड़ोंको वह चाहे माँ हो, बाप हो या शिक्षक, अपना वर्ताव और जीवन आदर्श और आदरयोग्य बनाना चाहिए।

दूसरी बात एक यह भी है कि बच्चेसे हम हर वक्त आज्ञापालनकी अपेक्षा नहीं कर सकते। कई बार ऐसा होता है कि बच्चा सुनता है पर मानता नहीं। उस वक्त उसका कुछ न कुछ कारण रहता है। वह थका हो, तबीयत उदास हो, या हमने जो कहा वह बात उसकी समझमें ही नहीं आयी हो, या उस समय कोई दूसरी बात हो जिसके लालचमें वह पड़ा हो। हममें स्थितिकी जाँच करनेकी शक्ति होनी चाहिए। बच्चेको आज्ञापालनका काम सिखाना आसान है मगर शुरूसे ही उसका उचित मार्ग दर्शन होना चाहिए। स्वाभाविक शिक्षा और नियमित व्यवहारसे चलनेका वातावरण हो। हम कोई बात कहें तो बच्चा उसे समझकर करे। हमारे कहनेका ढंग शान्तिपूर्वक और दृढ़तापूर्वक हो ताकि बच्चा अमुक काम करनेको बाध्य हो जाये। आदत लगानेसे स्वाभाविक आज्ञापालन सहज ही साध्य हो जाता है।

जैसे आदत बच्चेके गुणविकासका साधन है उसी प्रकार खेल उसके व्यक्तित्वको प्रकट करता है। खेलसे ही पता चलता है कि किसमें क्या गुण भरा हुआ है। उसमें कुछ गुण तो आनुवंशिक हो सकते हैं लेकिन अधिकतर गुण वातावरण और संगोपनसे विकसित होते हैं। इसलिए घर हो या शाला हो उसमें जो खेलके साधन रहें सभी बच्चोंके गुणविकास, और सक्रिय जीवनको बढ़ानेवाले हों।

खेलमें हरदम बच्चोंके आत्मप्रकाशन तथा सामाजिक जीवनके साथ चलनेकी भावना भरनेमें हमें मदद देनी चाहिए। हम मददगार रहें लेकिन हम जैसा चाहें वैसा ही खेल बच्चे खेलें, ऐसा नहीं होना चाहिए।

खेलके साधन सक्रिय जीवन बनानेवाले हों—

व्यक्तित्वको प्रदर्शित करने लायक हों—

बुद्धिके विकासमें मददगार हों—

जीवनसे सम्बन्धित इर्दगिर्दके वातावरणसे मिलते हुए हों।

सृजन शक्ति बढ़ानेवाले हों।

बच्चोंको अच्छे साफ सुथरे कपड़े पसन्द होते हैं, सजना पसन्द होता है। रंग विरंगी फूल पत्तियोंको देखकर वह आनन्दित होता है, नाचना और गाना उसके हर्षका विषय है। यानी बालक उत्सव प्रिय या उत्सव देवता हैं। इन बातोंको वे खेल द्वारा प्रकट करते हैं। उपर्युक्तबातें बच्चोंके आत्म प्रकाशन और अनेक कलापूर्ण गुणोंका प्रकाश करनेवाले हैं। ऐसे खेलोंकी योजना उनके सामुदायिक और सांस्कृतिक जीवनकी नींव है। उसे अच्छे मार्गदर्शन तथा योजनाके अनुसार बढ़ाया जाय तो बच्चेके जीवनमें ललित कला भर जायगी और आनन्दका निर्माण होगा। ढोलक या घुँघरूकी आवाज सुनकर बच्चा नाचने लगता है। गाना सुनना पसन्द करता है और स्वयं नकल करता है। चित्र खींचना तो स्वयं स्फूर्तिसे ही करता है। रंग भरना, माला बनाना आदि सभी कामोंमें हिस्सा लेना चाहता है। इन्हीं प्रवृत्तियोंको सामने रखकर हमें पूर्व बुनियादी शालाके साधन जुटाने हैं। उसमें वास्तविक जीवन और स्वाभाविक प्रवृत्तिके ज्ञानकी दृष्टिसे ही काम करना है।

———

छठा अध्याय

पूर्व बुनियादी शालाके साधन

पूर्व बुनियादी वर्गमें साधनोंकी आवश्यकता जरूर है लेकिन वे साधन बच्चोंके सजग इन्द्रिय और बुद्धिको बढ़ानेवाले हों। देहाती बच्चा तो अपना शिक्षक आपही बनता है। पेड़, पत्ती, कीचड़, मिट्टी, धूल, कंकड़, पत्थर इत्यादि सभी चीजें उसके खेल और शिक्षाके साधन हैं। श्री आशादेवीने अपने एक भाषणमें बताया था कि बच्चेकी जेबमें कई चीजें रहती हैं जो हमारी दृष्टिसे निकम्मी हैं परन्तु वेही बच्चोंके विकासमें सहायक होती हैं।

पूर्व बुनियादीका शिक्षक जब किसी देहातमें जाकर बालघरका प्रबन्ध करता है तो साधन कैसे जुटाये, कहाँसे लाये या बनाये, कौन से साधन शालामें रखने लायक हैं और कौन नहीं—ये सारे प्रश्न उसके सामने हरदम रहें क्योंकि उसके साधन किसी बाजारमे बने बनाए नहीं मिलेंगे।

शिक्षकको बच्चेके इर्दगिर्दकी वास्तविकताको नहीं भूलना चाहिये। जो भी साधन हों वे बच्चेके स्वाभाविक जीवनसे सम्बन्धित हों। उसकी सब क्रियाएँ प्रत्यक्ष, उपयोगी और ज्ञान बढ़ानेवाली हों। देहातमें खर्चीले और शहरी ढंगके साधन सच्ची शिक्षाके साधन नहीं बन सकते। देहातके स्वाभाविक वातावरणमें जुटाए हुए साधन, मामूली ही क्यों न हों, यदि वे बच्चोंकी बुद्धिके विकासके लिए उपयुक्त हों और उन्हें खेलका आनन्द दे सकें तो इतना बस है।

साधन बच्चेकी प्रवृत्तिके पोषक होना चाहिये। वे उसकी उत्सुकता बढ़ानेवाले तथा इन्द्रिय-शिक्षा देनेवाले हों। पूर्व बुनियादीके पाठ्यक्रममें बताए साधन पाँच विषयोंमें विभाजित हैं: सफाई, भोजन, पानी, दस्तकारी और बागवानी। ये सब खेल से ही हैं। दांतोन, कंघो, तेल, रीठा, साबुन, सफेद मिट्टी या केलेकी राख, जिससे शरीर और कपड़ेकी सफाई आसानीसे हो सके। उसके बाद शालाकी सफाईके-साधन जैसे झाड़ू, टोकरी, बाल्टी आदि। ये सब साधन बच्चोंके उपयोगके लिए हैं। इसलिए आकारमें उनकी सहूलियतको समझकर उनके माफिक बनावें और बच्चेको स्वयं उपयोग करना सिखावें। पानी साफ पीना है इसलिए पीनेके पानीको हिफाजत बच्चे और शिक्षक मिलकर करें। भोजन हम शालामें नहीं दे सकेंगे लेकिन नियमित और संतुलित भोजन करनेकी जानकारी देना जरूरी है। अनाजोंकी पहचान भी सिखाना जरूरी है। देहातके बच्चे अनाज, देहाती फल, साग सब्जी आदि चीजोंको खूब जानते हैं लेकिन खानेका तरीका या प्रमाण नहीं जानते। यदि घरसे थोड़ा नाश्ता जो वे ला सकें उन्हें लानेको कहें और सबके साथ बैठकर ठीक ढंगसे खाना बतावें तो यह एक अच्छा पाठ हो सकता है। यदि शालामें प्रबन्ध होनेकी गुंजाईश हो तो नाश्ता या एक वक्त भोजन या दूध बच्चोंको देना बहुत ही अच्छा है, बहुत जरूरी भी है।

जैसे सफाई और भोजनके साधन हैं वैसे ही कामके भी साधन हैं। लेकिन बच्चा उस उमरमें काम और खेलको अलग अलग नहीं समझता। वह तो घर या पास पड़ोसमें जो होवे देखता है उसीकी नकल करता है। जैसे बढ़ईकी तरह चीजें

बिठायेगा, बनियाकी तरह बोलेगा, कपास साफ करेगा, ओटेगा, तकली बनायेगा, घुमायेगा, मिट्टीके बर्तन या कई चीजें बनायेगा, रंग भरेगा, बर्तन धोयेगा, पिरोयेगा, गिनेगा, चीजें उठाके सजायेगा। इतनी चीजें काम करनेकी प्रवृत्तिको बढ़ानेके लिए पर्याप्त हैं और इन्हें साधन रूपमें रखना चाहिये। पर इसका ध्यान रखना चाहिये कि इन चीजोंमें कोई भी चीज ज्यादा खर्चीली या बाहरकी न हो। देहातके जीवनमें ये सब चीजें रोजके काममें आनेवाली हैं। बाँसकी तराजू बन सकती है। बाँसके छोटे टुकड़े बनाकर रंगकर माला बना सकते हैं, बाँसके टुकड़ोंसे घर जमानेके ब्लाक बना सकते हैं, टोकरी और चटाई बना सकते हैं, झाडू बन सकती है, मिट्टीकी तकली और बाँसकी डंडी लगाकर सूत निकालना बड़ा आसान है, उसमें ज्यादा गति न होनेके कारण सूत बारीक निकलता है। कपास तौलना, बिनौला तौलना आदि काम हो सकता है। बच्चोंके खिलौने जैसे गाड़ी, बैल, चाक और डंडा वगैरह सामान तैयार करें जिससे वे अपनी बढ़ईगिरीका अच्छा उपयोग कर सकें। मिट्टीके बर्तन आकार ज्ञानके लिए अच्छे हैं। उन्हें देखकर बच्चे भी मिट्टीसे अपनी चीजें बना सकेंगे। ओटाईकी सलाई, पटरीका उपयोग, चार सालका बच्चा खूब अच्छी तरहसे कर सकता है और तोला दो तोला कपास भी ओट लेता है।

बगीचेका काम, पानी लानेका काम, पीसनेका काम, कपड़े धोना, बर्तन माँजना, बच्चोंके प्यारे काम हैं। ५, ६ वर्षका बच्चा रसोईके काममें खासा दिलचस्पी लेता है। इसलिए इनमेंसे सहूलियतके मुताबिक जितना जुटा सकें जुटायें। अभी हम सिर्फ साधन के बारेमें सोच रहे हैं। इसमें माँ-बाप जितना सहयोग

हमें दे सकें उतना हम उनसे लेनेकी कोशिश करेंगे। बच्चेका कपड़ा उतारना, खोलना, बांधना, धोना, सुखाना, तह करके रखना और पहनना—सभी क्रियाएं शालामें हो सकें, ऐसी गुंजाइश शाला में होना जरूरी है। वैसे ही एक चर का पाखाना और पेशाब घर ऐसा बनाया जाय जिससे संयुक्त खाद बनानेकी प्रक्रिया बच्चे देख सकें। खेलके लिए सीढ़ी, झूला घसरंडी आदि हो तो लगाना अच्छा है नहीं तो खेल कूदके दूसरे कई खेल बच्चोंको सिखा सकते हैं।

सब साधनोंको जुटानेकी कोशिश हम जरूर करें और इनका उचित उपयोग करनेकी शिक्षा भी हम बच्चोंको दें। लेकिन अगर इनमेंसे कुछ ही साधन हमारे पास हैं तो और साधनोंके अभाव में बच्चोंकी शिक्षा रुकनेवाली चीज नहीं है। हमारी यही कोशिश रहनी चाहिए कि बच्चे हमारे हाथ आ जायें। उन्हें पाखानेका उपयोग करना, दातौनका उपयोग करना तथा कंघीका उपयोग करना सिखा दें। गाना और खेल सबके साथ मिलकर करें। इतना भी शुरूमें सीखें तो काफी है। इन्द्रिय ज्ञान और बुद्धिके विकासमें देहातके बच्चे शहरके बच्चोंसे ज्यादा फुर्तीले और चतुर होते हैं लेकिन कुछ समयके बाद इर्दगिर्दके वातावरणके कारण इनकी बुद्धि मंद होती चली जाती है। इसलिए हमें शुरूसे ही उन्हें हाथमें लेना है।

यदि शिक्षक साधनोंपर निर्भर रहता है तो धीरे धीरे शिक्षामें साधनही मुख्य स्थान ले लेता है। बच्चेके लिए साधन बननेके बदले साधनोंके लिए बच्चा बन जाता है।

बच्चोंकी जरूरतोंके साधन जुटानेमें ही शिक्षककी कुशलता है। पूर्व बुनियादी या बुनियादी शालाओंमें शिक्षकसे हदसे ज्यादा

अपेक्षा की जाती है। यहाँ शिक्षक तो माता, पिता, मित्र, बंधु, सहायक और सेवकके रूप में ही आते हैं और उन्हें अपनी जिम्मेदारी भलीभाँति समझकर चलना है। इसलिए पूर्व बुनियादी बालघरोंमें बच्चोंकी शिक्षामें साधनों की अपेक्षा शिक्षककी कार्यकुशलताको ही ज्यादा महत्व है।

सातवाँ अध्याय

कामके तरीके और साधनोंका उपयोग

इस शालामें वर्गकी व्यवस्था, समय पत्रक, साधनोंका उपयोग कैसा हो, यही प्रश्न अब बाकी रह जाता है। ढाई साल से लेकर छः साल तकके बच्चे पूर्व बुनियादीमें होंगे। उनके दो विभाग करना जरूरी है। बिलकुल छोटे बच्चोंके सामने कोई निश्चित काम या खेल नहीं रख सकते। उनके चारों तरफका वातावरण ऐसा बनाया जाय कि वे मनचहे ढंग से खेल सकें और खिलाये जा सकें।

जिस जगह यह वर्ग हो वह चाहे खुली जगह ही क्यों न हो, काफी लम्बी चौड़ी और साफ सुथरी होनी चाहिए। इसका प्रमाण बच्चोंकी संख्या पर निर्भर है; ऐसा हो कि सब बच्चे आसानीसे घूम फिर सकें। हरेक साधन अमृत समान और स्वच्छ हो तथा व्यवस्थित रूपमें रखा हो। इनकी रचनामें ही कुशलता है। यदि हम चाहते हैं कि बच्चा खेल या काममें मग्न हो जाय तो उन चीजोंको सजानेका तरीका बड़ी समझदारीका होना चाहिये, ताकि बच्चा देखते ही अपने मनका काम उठा ले। कोई भी चीज वहाँ ऐसी न हो जो बच्चेके उपयोग की न हो या उसके चलने फिरने में बाधा डालनेवाली हो। चीज़ें ऐसी जगह में रखी जायँ कि बच्चेके लेनेमें दिक्कत न हो, किसीसे मांगना न पड़े। चीजें इस ढंगकी हों कि देखते ही बच्चेको पता लग जाये कि अमुक वस्तुका अमुक उपयोग है।

शिक्षकका काम सिर्फ इतना ही है कि वह बच्चोंको चीजोंके उपयोगका ठीक तरीका बताये। एक दो बार बताने पर बच्चा खुद उसे दोहराता रहता है। वही उसकी शिक्षा है। शिक्षक-को हमेशा सतर्क रहना चाहिये कि बच्चा किसी चीजका दुरूपयोग तो नहीं कर रहा है। चीज बिना रोक टोकके लेकर खेले और फिर उन्हें यथा स्थान रख दे, ऐसी आदत डालनी चाहिए। चीज उठाकर फेंका करे और जहाँ तहाँ छोड़कर चला जाय, यह आदत बुरी है। यह विध्वंसक प्रवृत्ति है। शिक्षकको शांन्तिसे लेकिन दृढ़तापूर्वक चीजोंके ठीक उपयोग करनेका तरीका बताना चाहिए और उपयोग करनेकी आदत डालनी चाहिए।

चार से छः साल के बच्चे थोड़ा नियमित काम कर सकते हैं। शाला सफाई, बर्तन सफाई, बागवानी, नापतोल, कपास ओटाई, चित्रकलाका ज्ञान मिट्टीका काम, आदि आसानीसे कर सकते हैं। उनकी हैसियत के मुताबिक शिक्षक उन्हें थोड़ा-थोड़ा काम दे तो वे बड़ी खुशी से और जिम्मेदारी के साथ कर सकते हैं। उनमें भी टोली नायक बनाकर वर्ग की व्यवस्था, पानी की व्यवस्था, चीजों की व्यवस्था और सजावट, सफाई की व्यवस्था आदि कामों को बाँट देना चाहिए। एक बार आदत बन जाय और काम का तरीका बच्चे समझ लें तो शिक्षक के लिए बहुत कम काम रह जाता है। लेकिन सिर्फ काम लेना या करवाना यह शिक्षक का उद्देश्य नहीं होना चाहिए। बच्चों में जिस काम की प्रवृत्ति या स्वाभाविक गुण हों उन्हीं के प्रकाशन का अवसर देकर उनके विकास में मदद पहुँचाना है। कभी कभी ऐसा देखा जाता है कि बच्चा ऊबकर काम छोड़कर चला जाता है: इसका कारण समझते हुए बच्चे से वह काम करवाना जरूरी था या नहीं, यह बात शिक्षक को समझना है। कभी-कभी

बच्चा भावनावश काम छोड़ देता है तो शिक्षक को क्षमा भाव से उसे बर्दाश्त कर लेना चाहिए। लेकिन आलस्य या नफरत के कारण छोड़ता है तो काम करवाने का तरीका सुधारकर उस काम को करवा लेना चाहिए।

समय पत्रक के बारे में तो हमें खूब सोचना है। दूसरी शालाओं में तो बच्चे निश्चित समय पर आते हैं और निश्चित समय पर चले भी जाते हैं। वहाँ कुछ ही घंटों का सवाल रहता है पर यहाँ तो बच्चों का जीवन शाला के जीवन से सम्बन्धित है। हमारा समय पत्रक दस से पाँच तक ही नहीं बल्कि सुबह से शाम तक है। बच्चा सुबह कब उठता है, पाखाना कहाँ जाता है, कब मुँह-हाथ धोता है, कब और कैसे नहाता है, किस तरह नाश्ता करता है, आदि सभी बातों पर ध्यान देना है और उनके माँ-बाप को समझाना है। इसलिए हमारा गाँव में जाना जरूरी है। शहरों में यह काम नहीं हो सकता पर छोटे देहात में यह काम आसानी से हो सकता है। इससे हमारा घर-घर से परिचय होता है। कौन बच्चा बीमार है, उसकी देखभाल किस तरह हो रही है, इन सब की जानकारी हमें होती है। हफ्ते में एक दिन ग्राम सफाई का भी काम रहे और उसमें बड़े बच्चे भी भाग लें। इस काम में आध या पौन घंटे से अधिक समय देने की आवश्यकता नहीं है।

बाल वर्गके बच्चे ८॥ बजे या १०॥ तक शाला में रहें। उनकी सफाई, खेल, गान आदि जो निश्चित कार्यक्रम हों उसके बाद यदि वे घर जाना पसन्द करें तो उन्हें घर भेज दें या वे स्वयं शाला में खेलना चाहें तो उन्हें खेलने दें। हमारे सम्पर्क में बच्चा दो घंटे भी रहे तो काफी है। बाकी समय हम उसके घर का वातावरण बनाने में लगा दें।

जब शाला में काम शुरू होता है तब उसके समय का बंटवारा बच्चों की उमर के मुताबिक और काम के तरीके को समझकर करना जरूरी है। काम बच्चे की जरूरतों को समझकर कराना है। हमारे पास इतना समय है और इतना काम है, इसलिए ऐसा समय पत्रक बनाया है, ऐसा नहीं होना चाहिए। हमें काम और बच्चों की मनोवृत्ति के मुताबिक समय पत्रक बनाना चाहिए। सबसे पहले बच्चों की जरूरत को समझकर ये बातें होनी चाहियें। समय पत्रक में अदल बदल होना जरूरी है लेकिन वह बहुत जल्दी जल्दी बदला जाय या बहुत देर तक एक ही ढंग पर चले, ऐसा नहीं होना चाहिए। समय पत्रक ज्यादातर मौसम और देहाती जीवन की स्वाभाविकता से मेलजोल रखने वाला हो, नहीं तो माँ-बापका काम और शालाका काम इनमें मेल नहीं बैठता। हरदम देखा जाता है कि देहात की शालाकी हाजिरी मौसम के अनुसार बदलने वाले माँ - बाप के काम पर निर्भर करती है। हमें इनको भी समझना है।

साधनों का उपयोग हर क्रिया से सम्बन्धित है जैसे दातौन का उपयोग दाँत साफ करने के लिए है। अगर बच्चा दाँत साफ करके आता है तो फिर दातौन की क्या उपयोगिता है? लेकिन यह प्रश्न उठता है कि घर में माँ को इतना समय कहाँ कि वह बच्चे को दातौन करना सिखाए। दाँत साफ करना अलग बात है और दाँत किस तरह साफ किया जाता है यह सिखाना अलग बात है। दातौन या दंतमंजन करवाना और उसका उपयोग समझाना चाहिए। कंघी करना, नहाना, कपड़े धोना—समय-समय पर शालामें इन कार्यों के द्वारा इनके महत्त्वको समझाते रहना चाहिए। उपरोक्त बातोंका महत्व और उनका ज्ञान बढ़ाते रहना हमारा कर्तव्य है।

ऊपर दी हुई क्रिया अब भी घर घर में होती है, लेकिन कपड़े साबून लगाकर या उबालकर धोने के ज्ञान का उपयोग बहुत कम लोग करते हैं। लड़कियों के सर से जूँए तो मिट ही नहीं रही हैं। नहाना तो इस तरह होता है कि आज देहात में खुजली और गजकरण (दाद) घर घर में फैले हैं। इन बुराइयों को यदि हमें दूर करना है तो बच्चों द्वारा सफाई स्नानादि प्रक्रिया का प्रचार करना है। बच्चे इन बातों को सीखेंगे और अपने माँ बाप को भी सिखाएँगे। इसी तरह साधनों के द्वारा ज्ञान बढ़ाना ही हमारा उद्देश्य होना चाहिए। यह उद्देश्य सिद्धान्त बताने से नहीं, काम कराने से ही पूरा होगा। प्रत्यक्ष काम द्वारा ही शाला की शिक्षा का कार्यक्रम बढ़ता रहेगा।

झाड़ू और टोकरी का उपयोग कौन नहीं जानता लेकिन चहारदिवारी के बाहर भी इसका उपयोग है, इसे कौन जानता है? देहात में कूड़ों के ढेर इसी के प्रमाण हैं। उन्हें मिटाना है।

शिक्षक

पूर्व बुनियादी शालाके शिक्षककी हैसियत क्या है, यह तो कहने की बात ही नहीं है। जब उसे किसी ट्रेनिंग के लिए जाना है तब उसकी काबलियत की जाँच दूसरे ढंग से होगी। लेकिन यदि देहातमें जाना है तब तो शिक्षकको सर्वव्यापी और स्नेहयुक्त होना जरूरी है। उसे ऐसा नहीं समझना चाहिए कि वह किसी निश्चित समाज का निश्चित कार्य करने जा रहा है बल्कि वह देहात के हरएक बच्चे का चाहे वह शाला में आता हो या नहीं, मित्र, सहायक, सेवक और सच्चा शिक्षक बनकर जा रहा है। वहाँ का वातावरण बदल देने की क्षमता उसमें होनी चाहिये। स्वयं उदाहरण रूप से माँ-बाप तथा अन्य प्रौढ़ों को उनकी जिम्मेदारी की जानकारी देने जा रहा है। इसलिए उसे खुद आदर्श जीवन बिताने की कोशिश करनेवाला होना चाहिये।

आज हम जानते हैं कि देहात में हम जिस शिक्षा का प्रचार करना चाहते हैं वह कितना धीरजका कार्य है। दूषित वातावरण फैला है। कूड़े के ढेर के साथ गंदी आदतें भी भरी पड़ी हैं। आलस्य तो प्रौढ़ों के जीवन का साथी बन गया है : उसीके साथ भेदाभेद, जात पाँत, अमीर गरीब—सभी लगे हैं। बच्चों की दुनिया में प्राकृतिक प्रवृत्तियाँ एक सी होती हैं, भेद भाव नहीं रहता। वह एक सच्चे साम्यवाद का समाज है। पर धीरे धीरे भेदभाव के कारण सात आठ साल का बच्चा भी भेदभाव मानने लगता है, अमीर गरीब समझने लगता है। इस तरह वह भी दूषित वातावरण फैलाने में मददगार होता है।

जो शिक्षक गाँव में जाय वह यह समझ ले कि हमें दृढ़ता के साथ भेदभाव मिटाकर समता के साथ सब तरफ एक सा कदम बढ़ाना है और ऐसी हालत में विरोध सहने की भी शक्ति उसमें होनी चाहिए और बच्चे में शारिरीक और बौद्धिक विकास के लिए वातावरण निर्माण करने की शक्ति भी होनी चाहिए। उसे देहात के जीवन से परिचित होना चाहिये, उसकी कमियों और शक्ति की जानकारी रखने वाला और उत्साही कार्यकर्ता होना चाहिये।

उसके चरित्र और वातावरण के सम्बन्ध में मोटे रूप से ऊपर लिखी बातें बतलानेके बाद प्रत्यक्ष कामका ढंग कैसा हो, यह भी बताना जरूरी है। जिस गाँव में हम काम करने जाते हैं वहाँ की जनता के व्यवहार से तुरत यह पता चल जाता है कि वे हमारा स्वागत करते हैं या हमें सशंकित नजरों से देखते हैं।

गाँव में प्रवेश का सबसे उत्तम साधन है बच्चा। यदि बच्चे हमारे पास आने लगे और उनसे हमें स्वागत मिला तो डरने की कोई बात नहीं रहती है। बच्चे के साथ ही धीरे-धीरे माँ-बाप से भी परिचय हो जाता है। हम एकदम पूरे देहात को हाथ में नहीं ले सकते, इसलिए दो चार कुटुम्ब से अच्छा परिचय बढ़ा लें, जिससे वह हमारे काम में सहयोग देनेवाले तथा हमारे काम से सहानुभूति रखने वाले बन जाँयें। इस तरह गाँव के कुछ लोगों का समर्थन प्राप्त कर लेने पर काम करने की हिम्मत बढ़ती है। धीरे-धीरे उन्हीं के द्वारा पूरे गाँव का परिचय हो जायगा और दूसरे लोगों को भी हमारे काम की जानकारी हो जायगी। शिक्षक का हरदम यह प्रयत्न रहे कि मित्रों की संख्या ज्यादा से ज्यादा बढ़े लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हम मित्र बनाने के कार्य में अपने उद्देश्य को भूल जायें। हमारा उद्देश्य तो है देहातों को

सजग करना और इस कार्य के लिए जितने मददगार मिलें, उन्हें जुटाना। हमें गाँव का वातावरण बनाना है।

इसके बाद शाला का काम शुरू होता है। हमें बच्चों को जुटाना है। सभी माँ-बाप इसका महत्व नहीं समझते। उनके सम्पर्क में आने के लिए बच्चों के घरका निरीक्षण करने का तरीका अच्छा है। शिक्षक सुबहके समय बच्चों के घर पर चक्कर लगाए, उन्हें जगाए और शाला में आने को कहे। माँ-बाप की घरेलू बातों में भी थोड़ा हिस्सा ले। बच्चेके सम्बन्ध में दो चार बातें कह दे। इसतरह बच्चे के घर और कुटुम्ब के निरीक्षण का उसे मौका मिलता है। बच्चा क्या खाता है, कब सोता है, कब और क्यों बीमार हुआ, घर तथा उसकी आदतें आदि सभी बातें इस तरह मालूम होजाती हैं। बाद में धीरे-धीरे आरोग्य, सफाई, खाना, कपड़ा आदि के बारे में चर्चा कर सकते हैं।

कभी कभी किसी घर. उत्सव, त्यौहार पर ऐसा कार्यक्रम रखकर माँ-बाप को निमंत्रित करें या रोजाना चलनेवाले शाला के समय आकर सहजभाव से देखने को बुलाएँ। वे जब देखेंगे कि बच्चे कौन सा खेल खेलते हैं, क्या काम करते हैं, गुरूजी उनकी देख-भाल किस तरह करते हैं तो उसका असर अच्छा होगा। इससे माँ-बाप को भी बच्चों की जरूरतों का थोड़ा ज्ञान होगा। माँ-बाप और शिक्षक के इस मेल का अनुभव कर बच्चे का शाला के प्रति स्नेह ज्यादा-ज्यादा बढ़ता जायगा। इस तरह अगर माँ-बाप हमारी विचारधारा मे सहयोग करनेवाले हो गए तो शिक्षा का काम ही आसान हो जायगा। बच्चे के साथ मित्रभाव बढ़ाने की चतुराई और नई समाज रचना का दृष्टिकोण होगा तो शिक्षक के लिए यह सब सहज साध्य हो जायगा।

अब बच्चों के साथ के व्यवहार की भी बात सोचनी होगी। शिक्षक बालक का मददगार है, वह उन्हें कोई नई बात नहीं सिखा सकते जब तक कि उनकी जिज्ञासा वृत्ति जागृत न होगी।

अपने प्रत्यक्ष काम द्वारा शिक्षक बच्चों का आदर्श बनता है। बच्चे बड़ों की नकल करते हैं। इसलिए शिक्षक का काम में लगे रहना बच्चों के लिए आदर्श बन जायगा। शिक्षक जो काम बच्चों से करवाने की अपेक्षा रखता है उसकी व्यवस्थित रचना या योजना बच्चों के सामने रखने की कुशलता उसमें होनी चाहिए। जो काम नहीं कराना चाहते हों उसके बारे में किस तरह बताया जाय इसे समझाने की भी बुद्धि होनी चाहिये। शिक्षक की वृत्ति हरदम शांत और उल्लसित रहनी जरूरी है। छोटे बच्चे गम्भीरता बर्दाश्त नहीं कर सकते। निरर्थक हुक्म देना या जो कुछ बतलाना हो उसके बदले कुछ और बतला देना, ठीक नहीं है। बच्चे सच्चा जवाब चाहते हैं और ऐसे शिक्षक पर उनकी श्रद्धा होती है, चाहे वह शिक्षक कठोर ही क्यों न हो। इस तरह बच्चे की मनोवृत्ति को समझ कर शिक्षकको शाला के वातवरण में श्रद्धा और स्नेह लाना चाहिये तथा अपने वर्ताव से बच्चे को अपना लेना चाहिये।

बाल-शिक्षा

क्रिया	साधन	विषय ज्ञान
शरीर सफाई— दाँत, हाथ, पाँव, मुँह धोना। बाल सँवारना— नाखून काटना।	डोला पानी दाँतौन तौलिया साबुन मंजन आदि। तेल, कंघी, शीशा, जूआँ मारने की दवाई, कैंची, चाकू।	दाँत कैसे माँजना और धोना. नाक,मुँह और कान कैसे साफ करना, कुल्ली करना, धोना, पोछना, नहीं करने से बीमारियाँ, बाल कैसे सँवारना, धोना।
कपड़े की सफाई, कपड़ा धोना—	साबुन, सोडा, रीठा, हिंगानबेट, राख, गमला,बाल्टी, रस्सी।	कपड़े कैसे धोना सुखाना, तह करना पहनना, धोने की चीजों की पहचान और इस्तेमाल करने का तरीका।
शाला सफाई— झाड़ना।	झाड़ू, टोकरी, खराटा, फावड़ा।	मिलजुल कर काम करना, साफ-सुथरे स्थान और वातावरण में रहना और उसका शरीर और बुद्धि पर असर।

अनाज सफाई— फटकना, चुनना	सूप, टोकरी, नपना अनाज	अनाजों की पहचान, नापना, तौलना, भरना खेती की कुछ बातें जानना।
पानी भरना, छानना—	ढकना, मटका, रस्सी, बालटी, डोला, बर्तन साफ करना, छानने का कपड़ा, गिलास।	पानी कैसे साफ रखा जाय, गंदे पानी से बीमारियाँ फैलती हैं, बीमारियों के नाम।
कताई, कपास सफाई, ओटाई, धुनाई	चटाई, कपास, लसाई पटरी, गत्ता, ओटाना, तकली, टोकरी, तराजू धनुषतकली।	सामान्य विज्ञान, गणित, भाषा, समाजिक व्यवहार का अभ्यास।
रचनात्मक खेल	खपरैल के टुकड़े, रंगीन पत्थर, शंख, सीप, हंडी, मिट्टी के बर्तन, लकड़ी के टुकड़े, बैलगाड़ी, गुरगुड़ी, बाँस मणी, फूल, पत्ती, बाँस की तराजू, चक्की, थैलियाँ	सजाना, तकलीबनाना, तोलना, मिटी के बर्तन बनाना, अलग-अलग हिस्से खोलकर बैठाना, पिरोना, पीसना, भरना।
बागवानी— बगीचा लगाना	कुदाली, पावडी, खुरपी, बीजझारा, रस्सी।	बीज बोना, खोदना, गोड़ना, पानी देना, बीज की पहचान, नापना, नालियाँ बनाना।

संगीत गाना	ढोलक, खंजरी, कर-ताल, एकतारा, रंग।	संगीत, भजन, अभि-नय, नृत्य, टिपरी।
चित्रकला—	खड़िया मिट्टी का खपड़ा, लकड़ी की पटरी, मिट्टी की कटोरी, रंग, देहाती पेड़ या बाँस की बनाई कुंती, रंगीन सूत, कागज, कपास इत्यादि।	चित्रकला, रांगोली, अल्पना इत्यादि कला: हस्त कौशल।

बालवाड़ी की पूर्व तैयारी

बच्चों की सफाई:—

शिर की सफाई:—कंघी बड़ी ३, छोटी ३
शीशा बड़ा १
तेल का कटोरा १
चम्मच तेल के लिए ३
चोटी के लिए सुतली, रंग की
टोकरी १
शीशा टाँगने की खूँटी १
तौलिया २
रीठा, आँवला

नाखून सफाई:—कैंची छोटी ५
तौलिया २

हाथ धोना:—बाल्टी २
गिलास १
स्टूल १
बोरा २
तौलिया १

नहाना:— बाल्टियाँ छोटी ८
गिलास ८
तौलिया ८

कपड़ा धोने का सामान :—बछोना बड़ा १
सोडा
रेह
थापी १०
कपड़ा सुखाने को
तार ६० फूट
बाँस तार बाँधने को
कुएँ के पास अहरी बाँधना

बच्चों द्वारा सफाई के लिए साधन :—

आँगन सफाई के लिए :—झाड़ू
खुरपी १०
फावड़ा ५
कुदाल ५
झव्वली १०

कमरे की सफाई के लिए :—झाड़ू बाँधने को बाँस
छोटा झाड़ू १०
लोहे की सूप ५

उद्योग के साधन :—

मिट्टी का काम :—खिलौने बनाने को पटरी १०
मिट्टी छानने को दो कुंड
ईंट का फरमा ६

रंग का काम :—चूल्हा, गेरू, पीली मिटी
सफेद मिट्टी, काजल का खलबल
कुप्पी १०
मिट्टी के बरतन
रंग भिगोने को मटके

कताई :—सलाई पटरी ५
तकली २०
पूनी की सलाई १०
धनुष तुनाई ५
वराईची चरखा ५
गत्ते

सिलाई :—टाट, सुतली, सूया १०
सुतली रंगने को रंग
छेददार गत्ते या
पटरी, कैंची १

अनाज सफाई के लिए :—तश्तरी १२
थाली २
टोकरी या मोढनी
कंकड़ डालने को टीन का डाला

सब्जी काटने को :—छूरी ५
पंहसुल २
पटरे ७
टोकरी ३
चक्की ५
सीलबट्टा ३
मूसल १
सूप ५
चलनी ५
मोढनी

इन्द्रिय शिक्षा के साधन —

आँख के लिए :—प्रकृति परिचय द्वारा वस्तु
और रंग का परिचय
आँख की पट्टी के लिए २ गज कपड़ा

कान के लिये :—अवाज की डिब्बियाँ

स्पर्श के लिए :—स्पर्श के गच्चे तैयार करना
काँच पेपर, अलग अलग
कपड़े के टुकड़े ६ जोड़

स्वाद के लिए :—फिटकरी, नमक, गुड़,
काली मिर्च, नीम की पत्ती,
इमली

गंध के लिए :—फूल, पत्ती आदि

हाथ की अँगुली की शिक्षा के लिए :— बटन फ्रेम २
नाड़े का फ्रेम २
चोटी का फ्रेम २

अक्षर ज्ञान के लिए :—शब्दों के लिए दफ्ती १००
टीन के या लकड़ी के डिब्बे १०

पानी पीने के साधन :—फिल्टर स्टैन्ड ४
पानी निकालने की परी ४
मटके के नीचे रखने को
मिट्टी के बरतन या बाल्टी ४
मटके, ढक्कन के साथ १२
गिलास ५

रसोई बनाने का एक पूरा सेट
नाश्ता समिति देगी

खेल कूद के साधन —

गरवे (नृत्य) के लिए :—डंडे　２४

मॅजीरा　३ जोड़ी

ढोलक　१

खंजरी　१

छोटे छोटे २ घड़े

घसीटना　२

झूला　२

कूदने की रस्सी　३

हाई जंप　२॥ फूट का १

सिंगल बार　१

पेड़ के साथ सीढ़ी

बीच में चार पटरे लगे हुए

फर्नीचर :—रेक—तीन फुट × छः फुट × दस इंच　४

टाट के आसन　२४

चक्की स्टूल　१२

डेस्क　१

खूँटी अरगनी की ४' × २। इंच १२

कैंची बड़ी १	सूप
सुतली	टाट २० गज
गोंद	रजिस्टर
कलम दावात	पेंसिल
सूई तागा	फाईल　३

प्रत्यक्ष काम

पूर्व बुनियादी तालीम के पीछे एक बहुत बड़ी विचारधारा है और फिर इन सब को लेकर एक योजना बनती है— पिछले भाग मे हमने इसे विस्तार के साथ देखा है। परंतु इन विचारों को, इन सिद्धांतो को व्यवहार में लाने की कैसे की गयी है, इस भाग में उसी का खुलासा मिलेगा।

बच्चों की तालीम का एक साल का प्रयोग

(जुलाई १९४५ से अप्रैल १९४६ तक)

पूर्व-बुनियादी शाला, सेवाग्राम

[मई १९४४ में जब गांधीजी जेल से बाहर आए तो उनके पहले बयानों में से एक बयान नई तालीम के बारे में रहा। इसमें उन्होंने कहा—"अपनी क़ैद में मैं नई तालीम की मुन-किनात (संभावनाओं) के बारे में बराबर सोचता रहा और मेरा दिमाग बेक़रार हो गया। हमको अपनी मौजूदा हासिलात से संतोष मानकर अपने काम पर यहीं नहीं ठहर जाना चाहिए। हमको बच्चों के घरों तक पहुँच जाना चाहिए। उनके माँ-बाप को शिक्षा देनी चाहिए। नई तालीम तो जीवन भर की तालीम होनी चाहिए। यह अब मुझे बिल्कुल स्पष्ट हो गया है कि नई तालीम का क्षेत्र अवश्य बढ़ना चाहिए। इसमें ज़िन्दगी की हरेक हालत में हरेक व्यक्ति की शिक्षा का प्रबंध होना चाहिए।…… नई तालीम का शिक्षक सबको तालीम देनेवाला शिक्षक हो।"

अब तक तालीमी संघ की तरफ से सिर्फ ७ साल से १४ साल तक के बच्चों की तालीम का काम चलता था। लेकिन हम सबने यह महसूस किया था कि जब तक हम ७ साल से छोटे बच्चों की तालीम के काम को हाथ में नहीं लेते तब तक नई तालीम का काम अधूरा ही रहता है। इसलिए हमने पहले सेवा-ग्राम के बच्चों को लेकर ही इसका पहला प्रयोग करने का निश्चय किया। श्रीमती शांता नारूलकर के मार्ग-दर्शन में नवंबर १९४४ से यह काम शुरू हुआ। लेकिन नवंबर १९४४ से अप्रैल १९४५ तक इसको पूर्व तैयारी का समय समझा जा सकता है। जुलाई

१९४५ से ही निर्दिष्ट ध्येय (मक़सद) को सामने रखकर इसका बाक़ायदा काम शुरू हुआ।

एक बात ध्यान में रखने की यह है कि हमने, प्रयोग के पहले दिन से ही, बच्चों की तालीम और उनके माँ-बाप की तालीम, दोनों एक ही कार्यक्रम के दो पहलू हैं, ऐसा मानकर काम किया है।

[शिक्षक के एक साल के अनुभव का विवरण नीचे दिया जाता है। इस क्षेत्र में काम करनेवालों से प्रार्थना है कि वे अपने अनुभव 'नई तालीम' (अब 'खादी जगत') द्वारा दूसरों के सामने रखें।—सं०]

मैंने १९४२ से सेवाग्राम में श्रीमती शांता नारूलकर के मार्ग-दर्शन (देख-रेख) में सात साल से छोटे बच्चों की तालीम का काम शुरू किया। उस समय मेरे पास ६—७ साल की उम्र के १५—२० बच्चे थे। पहले मैंने खासकर गाँव, गाँव के बच्चे और उनके पालकों से परिचय लेने का काम किया। सफाई, खेल, गाने, कपास-सफाई, रुई-सफाई और थोड़ा तकली पर कातना, इन्हीं बातों को लेकर बच्चों को तालीम देने की कोशिश की।

जुलाई १९४५ से एक विशेष मक़सद के मुताबिक़ वर्ग का काम शुरू हुआ। वर्ग के उद्देश्य के मुताबिक़ २॥ से ६ साल के बच्चों की फिहरिस्त बनायी और वे बच्चे स्कूल में कैसे आयें, इसकी कोशिश की।

बच्चों के घर—इस साल हर रोज़ स्कूल शुरू होने से पहले एक घंटा वक्त दिया गया। इस समय में बच्चों की तालीम का मक़सद और पालकों के कर्त्तव्य, इस बारे में पालकों से बातचीत की। उसका उचित परिणाम हुआ। घर से बाहर निकलनेवाले बच्चे भी स्कूल आने लगे।

हाज़िरी—बच्चों के दाखिल होने के लिए वर्ग वर्ष भर खुला

था। इस तरह साल के आखीर तक कुल ७२ बच्चे शाला से परिचित हो गए। काम के २१४ दिनों मे हाज़िर रहनेवाले बच्चों की संख्या अलग-अलग इस तरह है—

१०० से २०० दिन तक	१२ बच्चे
३० से १०० दिन तक	३६ बच्चे
१० से ३० दिन तक	१३ बच्चे

बाक़ी ११ बच्चे १० दिन से भी कम हाज़िर रहे। वर्ष-भर में वर्ग की औसत हाज़िरी २२ रही।

बच्चों का आरोग्य—सात साल से छोटे बच्चों की तालीम में उनका शारीरिक विकास सबसे बड़ी बात रहती है। इसलिए छोटे बच्चों के विद्यालय के साथ-साथ एक आरोग्य केंद्र की भी ज़रूरत रहती है। हमारे लिए सौभाग्य की बात यह थी कि सेवाग्राम के 'आरोग्य-मंदिर' की तरफ से एक 'बाल-आरोग्य केंद्र' गॉव में ही खोला गया। उसमें श्रीमती बारबरा हार्टलैंड नाम की अंग्रेज बहन काम करती थीं। उनके साथ मेरी पत्नी इस काम की ट्रेनिंग लेने गयी।

मेरा काम फिर इतना रह गया कि बच्चों की तंदुरुस्ती का हिसाब रखना और जैसे-जैसे ज़रूरत पड़े उनके पालकों को समझाकर बच्चों को आरोग्य-केंद्र मे ले जाकर उपचार कराना। इसके साथ-साथ साथी के रोग से दूर रहने के लिए बच्चों को और पालकों को समझाने की कोशिश की।

हमारा सबसे पहला काम था मामूली देहात के छोटे बच्चों की तंदुरुस्ती की जाँच करना। इसमें उनके घर की हालत, घर की खुराक, नींद व आराम के घंटे, वज़न, ऊँचाई आदि का हिसाब और उनके साल-भर की और हर साल होनेवाली बीमारियों का विवरण तैयार करना ज़रूरी है।

इन बातों को लेकर सेवाग्राम के बच्चों की जाँच करने की जो कोशिश की उसका थोड़ा-सा नमूना नीचे दिया जाता है :—

शारीरिक विकास नं० १

(बाल-वर्ग, सेवाग्राम, सन् १९४५-४६)

क्रम	नाम	जन्म-तारीख	नींद का वक्त, रात से सवेरे तक	नींद के घंटे	घर का रोज़ का भोजन	स्कूल में हाजिरी के दिन	स्वास्थ्य
१	श्रीराम	६-७-४०	९ से ७	१०	सादा आहार, मांस, मछली	१२५	रक्त की कमी
२	देविका	१-३-४१	९ से ६	९	,, ,, सवेरे दूध	२०३	नाक बहती है
३	मधुकर	१६-४-४१	८ से ७	११	,, ,,	१५१	आँव पड़ता है, रक्त की कमी
४	बेबी	१-७-४१	९ से ६	९	,, सवेरे दूध, दो बार चाय	८२	ठीक
५	गिरिधर	९-११-४१	८॥ से ६॥	१०	सादा भोजन	१५८	पेट साफ नहीं
६	रामराव	१७-२-४२	८॥ से ७	१०॥	,, ,, सवेरे चाय	१५१	हमेशा खुजली रहती है
७	ज्ञानराव	२४-६-४२	८ से ६	१०	,, ,,	१७७	ठीक
८	बाबा	७-६-४२	८ से ७	११	,, ,,	८७	हमेशा खुजली रहती है

सूचनाः सादा आहार—दाल, ज्वारी की भाकरी (रोटी), भाजी, तेल। मांस-मछली हफ्ते में एक बार (बाजार के दिन) खाते हैं।

शारीरिक विकास नं० २

बाल-वर्ग सेवाग्राम, १९४५-४६

क्रम	नाम	जन्म तारीख	छाती इंच	ऊँचाई इंच	वज़न									पसंदगी का खेल (प्रकार)
					जुलाई	अगस्त	सितंबर	अक्टू०	नवंबर	दि०	ज०	फ०	मार्च	
१	श्रीराम	६-७-४०	२१	३८॥	—	—	२६	२५	२८	२८॥	२७	२८	३०	बैठने का खेल
२	गेगिका	१-३-४१	२०	३९	२५	२६	२६	२५	२७	२७	२७	२९	२७	,,
३	मानुहर	१६-४-४१	—	—	—	२९	२५	२६	२५	२८	२८	—	२८	दौड़ने का खेल
४	गेबी	१-७-४१	१९	३९	—	—	२१॥	२५	२६	२७	—	२७	२७	बैठने का खेल
५	गिरिधर	९-११-४१	२१	३८	२८	२९	३०	३०	३०	३०	२८	२९	२९	दौड़ने का खेल *
६	रामदास	१२-२-४२	१०	३६	२५	२५	२५	२९	२५	२६	२५	—	२७	बैठने का खेल
७	आनदास	२४-६-४२	२०	३५	२५	२५	२६	२६	—	२६	२६	२७	२७	दौड़ने का खेल
८	बाबा	७-६-४२	१८	३६॥	२२	२५	२४	२४	—	२५	२४	—	—	दौड़ने का खेल

नमूने के तौर पर सिर्फ़ ८ बच्चों की जानकारी दी है।

बीमारियों का तख्ता

१॥ से ७ साल तक के बच्चों की बीमारियाँ (सन् १९४५-४६)

अप्रैल	आँख की बीमारी, गोवर, कांजण्या, माता, खुजली, खवड़ा (इंपिटायगो) दाद, खांसी, बुखार, पतला दस्त, कृमि, कान बहना
मई	आँख की बीमारी, गोवर, कांजण्या, माता, खुजली, खवड़ा, दाद, खाँसी, बुखार, पतला दस्त, कान बहना
जून	मलेरिया, खुजली, खवड़ा, दाद, खांसी, पतला दस्त
जुलाई	मलेरिया, खुजली, खवड़ा, दाद, मल-बद्धता, पतला दस्त
अगस्त	मलेरिया, आँख की बीमारी, खुजली, खवड़ा, दाद, पतला दस्त, आँव और उलटी, निमोनिया
सितंबर	मलेरिया, आँख, खुजली, खवड़ा, दाद, खाँसी, पतला दस्त, निमोनिया
अक्टूबर	मलेरिया, आँख की बीमारी, खुजली, खवड़ा, खाँसी, मल-बद्धता
नवंबर	आँख की बीमारी, खुजली, दाद, बुखार, खाँसी, पतला दस्त, खवड़ा
दिसंबर	आँख, खुजली, दाद, खवड़ा, बुखार, खाँसी, पतला दस्त, कान बहना, गला फूलना, जलना
जनवरी	आँख, खुजली, दाद, खवड़ा, बुखार, खाँसी, पतला दस्त, कान बहना, उलटी, जलना
फरवरी	आँख, गोवर, खुजली, दाद, खवड़ा, बुखार, पतला दस्त, कान बहना, जलना, कृमि
मार्च	आँख, गोवर, कांजण्या, माता, खुजली, खवड़ा, दाद, इन्फ्लुएंजा, खाँसी, गला फूलना, कान बहना, नाक से खून बहना

यह तो हुई बच्चों के आरोग्य की स्थिति। हमारे स्कूल का काम यह था कि इन बच्चों का समग्र रूप से हम शारीरिक विकास

किस तरह करें। इसके लिए पहला सबसे बड़ा साधन था उनके माँ-बाप की शिक्षा। इसकी तरफ हमने पूरा-पूरा ध्यान दिया।

बच्चों के साथ पालकों की तालीम—बच्चों के द्वारा जैसे-जैसे पालकों का संबंध हमारे साथ बढ़ता गया वैसे-वैसे मौके के अनुसार उन्हें सफाई, बच्चों की शिक्षा, बच्चों के आरोग्य, बाल-संगोपन, ग्रामोद्योग और खेती—इन विषयों के बारे में समझाया।

शिक्षक के लिए बच्चा ही प्रौढ़ शिक्षा की कुञ्जी है। वह बच्चों के साथ और उनके संबंध से पालकों के दिल में तथा उनके आँगन से चौके तक पहुँच सकता है। बिना स्वार्थ के अगर सेवा-भावसे वह प्रवेश करे तो फिर उसे हर जगह आशा ही आशा नजर आयेगी।

जीवन शिक्षण—पालकों के जीवन से बच्चों के जीवन में प्रवेश करने के लिए नीचे लिखी बातों का खास संबंध आता है—

(१) खाना-पीना (२) कपड़े (३) सेहत, बच्चों की हिफाज़त (४) खेती-गो-पालन (५) सफाई और (६) पढ़ाई का शौक।

(१) खाना-पीना—बच्चों के लिए कौन-सी खुराक ज़रूरी है, कितनी बार देना चाहिये. भोजन में सफाई, साफ पानी. बीमारी में क्या देना चाहिये, बीमारी से बचना—इन विषयों को मौका आने पर चर्चा करके समझाना।

(२) कपड़े—अनाज और कपड़ों की ज़रूरत और उसमें खादी के स्थान की चर्चा। बच्चों की मार्फत घर में चर्खे और खादी का प्रवेश कराना।

(३) सेहत—बच्चों की बीमारियाँ, छूआ-छूत के रोगों की चर्चा। घरेलू दवाइयाँ और दवाखाने में जाँच और इलाज—इनके बारे में चर्चा और सलाह।

(४) खेती और गो-पालन—अगर मुमकिन हो तो इस पर गहरी बहस करने का मौका तो आता ही है। यह आर्थिक सवाल होने के कारण पालक इस पर अधिक चर्चा करते हैं।

(५) सफाई—

(क) निजी सफाई—बच्चों को वक्त पर पाखाने भेजना, हाथ-पैर, मुँह धोना, दाँत साफ करना, बाल सँवारना, हरेक अवयव की सफाई कैसे करना—इसकी चर्चा और अमली तौर पर उसे समझाना। कपड़ों की सफाई के महत्व और स्थानिक साधनों के उपयोग।

(ख) आम सफाई—घर कुआ और इर्द-गिर्द की सफाई के बारे में चर्चा करना और खुद, अकेले या उनके साथ मिलकर, काम करके समझा देना।

(६) पढ़ाई का शौक़—बच्चों को स्कूल में भेजने के लिए रुचि निर्माण करना।

इस काम के लिए रोज़ सुबह स्कूल के समय से पहले एक घंटा दिया गया। शिक्षक का सच्चा समाज-शिक्षण इसी समय होता है।

नाश्ता—बच्चों के शारीरिक विकास का दूसरा बड़ा साधन है उनका भोजन। ऊपर दिए गए तख्ते से यह बात स्पष्ट है कि बच्चों के घर में जो भोजन मिलता है, वह उनके विकास के लिए पर्याप्त नहीं होता। बहुत ही थोड़े बच्चे हैं जिन्हें दूध मिलता है और फल का तो कहना ही क्या ? यह कमी शाला के जरिये पूरी करने की कोशिश की गयी। हरेक दिन दूध या केले-संतरे नाश्ते के तौर पर दिये गये। जो दूध मिलता था, सब बच्चों को बाँट देते हैं। साल-भर में दूध का हर बच्चे पीछे औसत प्रमाण

प्रतिदिन ७॥ तोले रहा। हरेक को एक-एक फल दिया गया। हर बच्चे पीछे नाश्ते का औसत खर्च पाँच पाई हुआ।

बच्चों का वजन—हर महीने बच्चों का वजन लिया गया। जिनका वजन कम हुआ उनके बारे में डाक्टर से सलाह लेकर वजन बढ़ाने की कोशिश की। कुछ दिन 'शार्क लिवर आइल' दिया, लेकिन वह सब बच्चों को रुचा नहीं।

तन्दुरुस्ती की जाँच—हर तीन महीनों में डाक्टर से बच्चों की तंदुरुस्ती की जाँच कराई गयी। बीमार बच्चों की दवाखाने से दवा करायी गयी।

साल के आखीर में बीमार बच्चों की सालाना कैफियत को देखकर यह जाहिर हुआ कि पिछले वर्ष के मुकाबले में बच्चों के रोग, खासकर खुजली कम हुए।

शरीर की सफाई

उद्देश्य—बच्चों में अच्छी आदतें डालना।

ज़रूरत—बरसों से चलते आए हुए रीति रिवाज, आदतें ही सच्चा जीवन है, ऐसा लोग मानते हैं। बच्चों को बुरी आदतों से छुड़ाना और अच्छी आदतें सिखाना, यह हमारा पहला काम था। हमारे पास आनेवाले बच्चों में ७५ में से ४९ खुजली, खवड़ा (इम्पिटाइगो) और दाद—ये चमड़े की बीमारियाँ पायी गयीं। इनमें से २२ बच्चों को यह बीमारी साल-भर रही। इसीलिए हमारे कार्यक्रम में शरीर-सफाई को पहला स्थान दिया गया।

घर में सफाई—बच्चे चार घंटे छोड़कर बाकी बीस घंटे घर या घर के आस-पास ही बिताते हैं। इसलिए हर रोज़ शाला शुरू होने के पहले एक घंटा गाँव में दिया जाता है। बच्चों के

घर जाकर बच्चों की सफाई के बारे में जानकारी हासिल की। मौक़ा पड़ने पर बच्चों के माँ-बाप के सामने उन्हें खुद साफ किया। इसी तरह बच्चे घर से ही साफ होकर शाला में आयें, ऐसी कोशिश की गयी।

शाला में सफाई—जो बच्चा किसी कारण से शाला में गंदा आता था उसको मैं तुरंत साफ करता था। जरूरत के मुताबिक़ बच्चों को नहलाया भी जाता था। हफ्ते में दो बार सामूहिक सफाई की जाती है, जिससे बच्चे शरीर के हरेक अवयव (हिस्से) और सफाई के बारे में समझें और उन्हें साफ रहने की आदत हो जाये। बच्चों के कपड़ों की सफाई भी हफ्ते में एक बार शाला में करते हैं।

नतीजा—साल के आखिरी में सफाई का उद्देश्य कुछ हद तक पूरा हुआ-सा दिखायी पड़ा।

कपड़े की सफाई—

देहाती साधन और तरीके-(१) रीठा (बज़ार से लाये हुये)-बच्चों ने रीठे फोड़े। बीज खेल के लिए रखे। छिलका रात-भर पानी में भिगोया। सबेरे मिट्टी के बर्तन में २० मिनट तक गरम किया, थोड़ा ठंढा होने के बाद हाथ से मलकर फेन (झाग) तैयार किया। बाद में जरूरत के अनुसार गरम पानी में डालकर उबाला। उसमें कपड़े डाले। नीचे उतारकर बर्तन में एक घंटे तक कपड़े रखे। फिर धोकर साफ किए। कपड़े साफ निकले।

प्रमाण—१ सेर रीठा, ६ तोले छिलका। छोटे कपड़े ४५ धोये।

(२) हिंगणबेट (हिंगोट)—(खेत से लाये हुये)—ऊपर का

छिलका फेंक दिया। गुठली १५ मिनट पानी में भिगोयी, कपड़े गीले करके साबुन की तरह लगाया। आधे घंटे तक पानी में डालकर उबाला। फिर धोकर सुखाया। कपड़े साफ हुए।

(३) राख—(खेत से)—गाँव के आस पास मुफ्त मिलने वाले अघाड़ा और गोखरू के पौधे लाये गये। जलाकर राख बनायी। रात को पानी में भिगोयी, जिससे क्षार पानी में घुल गया, और चीजें नीचे बैठ गयीं। ऊपर का क्षार पानी छान लिया। इसमें और अधिक पानी डाला, और कपड़े डालकर आध घंटे तक उबाला। फिर धोकर सुखाया। कपड़े साफ निकल आये।

(४) सोडा और साबुन—ऊपर की चीजें छोड़कर सोडा और साबुन का भी हमेशा जैसा उपयोग किया।

बच्चों का स्वावलंबन—बच्चा अपनी अंतर-वृत्ति से स्वावलंबी ही होता है लेकिन योग्य वातावरण के अभाव में वह परावलम्बी बन जाता है। हमारे पास आनेवाले बच्चे थोड़े ही दिनों में अपनी जरूरतें अपने आप पूरी करने की कोशिश करते हैं, जैसे—सफाई के लिए पानी लेना, तौलिए से शरीर पोंछना, खेलने का सामान लेना और काम खतम करके उन्हें जगह पर रख देना, अपनी कटोरी लेना, दूध पीना, कटोरी धोना, फल छीलना व खाना, घर जाना और आना, अपना खुद का सामान सँभालना और घर ले जाना—यह सब बच्चों का स्वावलम्बन की तालीम है।

सामाजिक तालीम—

(अ) ठीक बैठना, सीधे खड़े होना, रास्ते में ठीक तरह से चलना, समाज में व्यवस्थित और शांत बैठना या खड़े रहना, एक साथ नाश्ता या भोजन के पहले मंत्र पढ़ना, बड़ों को और अतिथियों को प्रणाम करना, गाली-गलौज न करना,

अपने से छोटे बच्चों की मदद करना, हर रोज़ प्रार्थना करना, दो मिनट शांत रहना—स्कूल की प्रार्थना, तालीमी संघ के साप्ताहिक झंडा-वंदन, उत्सव-त्यौहार, भोजन के वक्त व गाँव के दूसरे कार्यक्रमों में प्रत्यक्ष रूप से शामिल होकर ये आदतें बच्चों में डाली गयीं।

(ख) बाल-समाज और उनके नायक—बच्चों का एक बार परिचय हुआ और उनकी जरूरत-भर साधन उन्हें मिल गए कि फिर उन्हें बड़ों की जरूरत नहीं रहती। इस तरह उनमें से ही चुने हुए टोली-नायक उनका पूरी तरह नेतृत्व करते हैं। इसमें आजतक देविका, गिरिधर, वसंत—ये बच्चे आगे आये हैं।

रचनात्मक प्रवृत्तियाँ और उनके साधन—बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए कौन-सी प्रवृत्तियाँ अनुकूल हैं और उसके लिए देहात में मिलनेवाली चीजों से हम कैसे साधनों का संग्रह करते हैं, इस दिशा में अभी तक कुछ भी काम नहीं हुआ। हमें तो प्रयोग करके ही सीखना है।

सबसे पहले छोटे कंकड़-पत्थर, मिट्टी और खपरैल के टुकड़े—यही चीजें बच्चों को दीं। इन्हीं साधनों से बच्चे खेलने की ख्वाहिश (इच्छा) पूरी करते थे। धीरे-धीरे गाँव में ही मिलने-वाले, लेकिन बिना खर्च वाले, साधन बच्चों को दिये। कुछ चीजें तो गाँव में ही तैयार करा लीं। इसके बाद जरूरत के मुताबिक़ साधन भी बढ़े। इन साधनों के ज़रिये बच्चों के शरीर, मन और बुद्धि के विकास की ओर ध्यान दिया गया।

बच्चों के खेल—गाँव के दूसरे खेलों में से बच्चों के खेलों को चुनकर उन्हें बच्चों को सिखाया। इसके जरिए उनमें निर्भय-वृत्ति, शारीरिक हलचल, चपलता और पाली से खेलने का अभ्यास कराया।

भाषा—गाने व कहानियाँ—खासकर दैनिक कार्यक्रम में आनेवाले प्रसंगों, खेल के साधनों, गानों और कहानियों के द्वारा बच्चों का शब्द-भंडार बढ़ाया। गानों व कहानियों का चुनाव ग्रामीण साहित्य से किया।

गणित—अभी तक प्रत्यक्ष अंक-ज्ञान नहीं दिया; लेकिन वस्तुओं के आकार के मुताबिक छोटा-बड़ा, ऊँचा-ठिंगना, लंबा-चौड़ा, हलका-भारी—इनकी कल्पना प्रत्यक्ष निरीक्षण और उपयोग से उन्हें हुई।

सैर-सपाटे—धीरे-धीरे बच्चे गाँव में और गाँव के नजदीक के बगीचे में घूमने के लिए गये। प्रसंग के अनुसार जानवर-पक्षी, वृक्ष और फल-फूलों का निरीक्षण किया।

एक दिन का काम :

समय—७ से ७॥ बजे तक, स्थान—बच्चों का घर।

प्रौढ़-शिक्षा और प्राथमिक सफाई—सोकर उठना, पाखाने जाना, मुँह धोना, नहाना और नाश्ता करना—ये क्रियाएँ बच्चे घर में पूरी करते हैं। उस वक्त गाँव में जाकर शिक्षक निरीक्षण करते हैं। साथ-साथ सफाई, बच्चों की हिफाजत, भोजन, कपड़े आदि विषयों पर प्रसंगानुसार चर्चा होती है।

७॥ से १०॥ बजे तक—(शाला में)—

(क) शाला की व्यवस्था (सफाई)—शाला और मैदान की सफाई, कचरा उठाना, घूरे पर ले जाना, चटाई बिछाना, साधन की सफाई और रचना—ये क्रियाएँ शिक्षक और बच्चे, दोनों करते हैं। छोटे बच्चे निरीक्षण करते हैं।

(ख) प्रार्थना—पहले और दूसरे वर्ग की प्रार्थना एक साथ होती है। ठीक बैठना, दो मिनट तक शांत रहना और प्रार्थना करना।

(ग) शरीर-सफाई—ज्यादातर बच्चे घर से ही साफ होकर आते हैं। जो बच्चा गंदा आता है, उसकी सफाई शाला में होती है। लड़कियों के बाल सँवारते हैं; खुजली, फोड़ा-फुंसीवाले बच्चे 'बाल-आरोग्य-केन्द्र' में भेजे जाते हैं। छोटे बच्चों की सफाई बड़े बच्चे और शिक्षक करते हैं।

(घ) रचनात्मक खेल—बच्चे अपनी रुचि के अनुसार साधन लेते हैं और खेलते हैं। साथ-साथ उनके मन और बुद्धि का विकास होता है।

(ङ) भाषा—रचनात्मक खेल के साथ बच्चों को आत्म-प्रकाशन (अपने को जाहिर करने) की शक्ति बढ़ती है। वे खेल के साथ भाषा भी सीखते हैं।

(च) गाने और कहानियाँ—बच्चों को बाल गति और बाल कहानियाँ बताई जाती हैं।

(छ) सामाजिक तालीम—नाश्ता करने में बच्चों को कटोरी साफ करना, लाइन से आना, ठीक और शांत बैठना, मंत्र कहना फिर दूध पीना या फल खाना, बाद में मुँह धोना और कटोरी साफ करके रखना—ये बातें आ जाती हैं। शाला में अपना सामान ठीक रखना, घर जाते वक्त चटाई लपेटकर रखना, लाइन में खड़े होना, एक साथ नमस्ते करना और घर जाना—इन क्रियाओं के जरिये उनमें अनुशासन और व्यवस्थित रहने की आदत डाली जाती है।

१॥ से २॥—(घर पर)

स्नान, भोजन, आराम और खेल में बच्चे अपना वक्त गुजारते हैं।

दोपहर के बाद २॥ से ५ तक—(शाला में)

(क) वर्ग-व्यवस्था—झाड़ू लगाना, चटाई बिछाना, सामान ठीक से रखना।

(ख) रचनात्मक खेल—सवेरे जैसे।

(ग) भाषा—गाने और कहानियाँ, सवेरे जैसे।

(घ) खेल—कुछ मनोरंजक, मैदानी खेल।

शाम को ५ से ८ तक—(घर पर)

खेल-कूद और भोजन के बाद आम तौर पर सब बच्चे रात को ८ बजे तक सो जाते हैं और सवेरे ७ बजे उठते हैं।

हफ्ते में १ दिन सैर के लिए बच्चे जाते हैं। वैसे तो गंदे कपड़े उसी समय साफ किए जाते हैं लेकिन हफ्ते में एक दिन तो खासकर कपड़ों की सफाई के लिए ही रहता है। जुलाई, '४५ से जुलाई '४६ तक बच्चे हर सोमवार को झंडा-वंदन के लिए तालीमी संघ में जाते थे।

एक साल का काम

(जुलाई १९४५ से अप्रैल १९४६ तक)

वर्ग पहला

सेवाग्राम बुनियादी शाला

१. स्कूल की व्यवस्था—हर दिन पहला पौन घंटा स्कूल की व्यवस्था में जाता है। उसमें बच्चों को बुलाना, स्कूल साफ करना, आँगन का कूड़ा-कचरा उठाना, पाखाना उठाना, पाखाने पर मिट्टी डालना, पानी भरना और चटाइयाँ बिछाना - ये काम बच्चों की मदद से किए गए।

२. प्रार्थना—पहले दो मिनट की शांति रखी जाती है। फिर रोज़ की प्रार्थना होती है। प्रार्थना में 'गीताई' से कुछ श्लोक, सरल भजन, रामदास के श्लोक व सरल 'धुन'—ये शामिल रहते हैं।

प्रार्थना में शांति रखना, ठीक तरह से बैठना, सबके साथ एक स्वर से प्रार्थना करना, बीच में न बोलना—ये आदतें डालने का प्रयत्न किया गया।

३. हाजिरी—प्रार्थना के बाद बच्चों की हाज़िरी ली जाती है। हाजिरी के समय बहुतसे बच्चे हाजिर रहते हैं। कुछ-एक बच्चे ही देर से आते हैं। उनसे देर से आने का कारण पूछा जाता है।

वर्ग में औसत—कुल २० बच्चे दाखिल हुए।

वर्ग के आखिर तक—१८ बच्चे क़ायम रहे।

औसत हाजिरी : १३

वर्ग के १८ बच्चों में से १४ बच्चे दूसरे वर्ग में आसानी से चल सकने योग्य थे।

४. सफाई—

(क) *शारीरिक सफाई*—सफाई-मंत्री बच्चों को सफाई देखता है। उसमें नाखून निकालना, दाँत साफ करना, मुँह धोना, गन्दे कपड़े बदलकर साफ कपड़े देना, बालों को कंघी से सँभालना—ये प्रत्यक्ष काम कराये गये।

गंदे रहने की वजह से खाज होती है, बीमार पड़ते हैं, जुएं होते हैं, और सिर में फुंसियाँ हो जाती हैं—इन बातों पर धीरे-धीरे चर्चा के रूप में जानकारी दी गयी।

(ख) कपड़ा-सफाई—पहले बहुत-से बच्चे गंदे कपड़े पहनकर स्कूल में आते थे। इसके बारे में पालकों को समझाने का प्रयत्न किया। बच्चों को साफ कपड़े पहनने की आदत लगाने के लिए उनके मैले कपड़े निकालकर स्कूल के स्वच्छ कपड़े दिये जाते हैं। मैले कपड़े स्कूल में ही धोये जाते थे।

कभी स्कूल में कपड़े धोना, कभी सोडा साबुन का पानी देकर घर में कपड़े धोने के लिए कहना, कभी माँ की मदद से कपड़े धोने को कहना—इन तमाम कोशिशों से बच्चों को कपड़े धोने और स्वच्छ रहने की आदत पड़ी और दिन-ब-दिन बहुत से बच्चे साफ होकर आने लगे। इसके लिए उन्हें सोडा, साबुन, रीठे की मदद दी गयी।

५. आरोग्य—

(क) हर महीने बच्चों का वजन लिया गया। वजन कम होने के कारण खोजकर उन्हें बच्चों को समझाने की कोशिश

की। उसी तरह बीमार बच्चों की दवा की व्यवस्था मुख्य दवाखाने के जरिये करायी गयी और धीरे-धीरे बच्चों की डाक्टरी जाँच हो गयी।

बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार हुआ। इतना ही नहीं, हैजा और चेचक के टीके (इन्जेक्शन) लेने से इन बड़ी-बड़ी बीमारियों से उनका बचाव हुआ।

(ख) *पीने का पानी और नाश्ता*—बच्चों में साफ पानी पीने की आदत पड़ी। नाश्ते के लिए दूध व फल दिये गये। हर विद्यार्थी के पीछे प्रतिदिन के नाश्ते का खर्च ५ पाई हुआ।

बुनियादी दस्तकारी—*कताई* : काम के दिन—२३२
काम के घंटे—३१७

नीचे लिखे काम किये गये :—

काम	वजन		समय
(क) कपास चुनना—	४ सेर,		२ घंटे
(ख) कपास सफाई—	१२ „	४५ तोला	२१ „
(ग) ओटाई (सलाई-पटरी से)	११ „	४४ „	७७ „
(घ) रुई-सफाई—	६ „	० „	
(ङ) धुनाई (शिक्षक ने की)	५ „	२० „	
(च) पूनियाँ बनाना—	५ „	२० „	
(छ) कताई (तकली से)	५ „	४० „	२१७ „

कुल सूत—७७ गुंडी, ६२ तार।

कुल मजदूरी—१६ रुपये २ आने।

एक नया प्रयोग : इस साल हमने एक खास प्रयोग यह किया कि क्या बच्चों के सूत को उसी वर्ग का शिक्षक बुन सकता है या

नहीं। इसलिए बच्चों के दुबटा किए हुए सूत का बाल-कक्षा के शिक्षक ने थान बुना। उनका यह पहला थान है। इस काम की तफसील इस तरह है—

(क) ओटाई—बच्चों ने सलाई-पटरी से ओटाई की।

(ख) शिक्षक ने मध्यम-धुनकी से धुनाई की।

(ग) *पूनियाँ बनाना*—बच्चों ने बारी-बारी से पूनियाँ बनायीं।

(घ) *कताई*—बच्चों ने तकली से कताई की।

(ङ) *दुबटना*—(१) बच्चों ने बारी-बारी से परेते पर सूत खोला।

(२) पहले साबली-चर्खे पर और फिर किसान-चर्खे पर सूत दुबटा किया।

(च) *ताना*—यह और इसके आगे का सब काम बाल-कक्षा के शिक्षक ने किया। बच्चों ने अपनी ताकत के अनुसार मदद दी।

ताना—८ गज × २७ इंच × ७॥ पुंजम। समय—२॥ घंटे।

(छ) *बय बाँधना*—गाफा करना, बय बाँधना और तार भरना, परसना, ताना फैलाना, मांढी लगाना, पांजन करना—इन कामों में ५ घंटे लगे।

(ज) *साँध करना*—

(झ) *बुनाई* (शिक्षक ने की)—सुबह ११ से १२ तक, दोपहर को ४ से ५॥ बजे तक और छुट्टी का पूरा समय। — कुल ४८ घंटे

(ञ) *धुलाई*—धुलाई और कुंदी करने में समय—३ घंटे।

(ट) *दीग़र बातें*—(१) कुल सूत—ताना ५ गुंडी बटा हुआ।
वाना ६॥ गुंडी बटा हुआ।
कुल ११॥ गुंडी। वजन—१ सेर छः छटाँक।
(२) कपड़ा—८ गज × २७ इंच × ७॥ पुंजम।

यह कपड़ा पहले दर्जे के पहले दो महीनों में काते हुए सूत से बुना गया। शिक्षक के बुनने का यह पहला ही मौक़ा था।

सिखाये गये विषय : कपास कैसे चुनना कैसे साफ करना, जल्दी साफ करने का तरीक़ा, सलाई-पटरी से कपास ओटने का ठीक ढंग, रुई-सफाई के वक्त चुटकी का क्या स्थान है, पूनियाँ कैसी बनानी चाहियें, हाथ और सलाई की पकड़ कैसी होनी चाहिये।

पहले तकली कैसे घुमाना, पूनी कैसे पकड़ना, धागा कैसे लगाना, कुकड़ी कैसे भरना। अच्छा सूत किसे कहते हैं। सूत की मजबूती और समानता। सूत क्यों टुवटते हैं।

मातृभाषा—

(क) मौखिक—दस्तकारी, समाज और प्रकृति के सम्बन्ध से बात-चीत।

(ख) लिखकर—रोजाना कताई का हिसाब लिखना, सामान की फिहरिस्त रखना, बच्चों के नाम लिखना, छोटे-छोटे वाक्य लिखना और पढ़ना जैसे—'कताई की', 'पूनी बनाई', 'तार काते' 'ओटाई की' वग़ैरह।

(ग) कथा-कहानी—पुराण व इतिहास की कहानियाँ, बाल श्रावण, बाल चिड़िया, नामदेव, गणेश, एकनाथ, कृष्ण, राम-रावण युद्ध (दशहरे पर) बंधु-प्रेम (रक्षा-बंधन पर) आदि।

काल्पनिक किस्से और प्राणियों के जीवन के बारे में, जैसे— मनुष्य और साँप, खरगोश और कछुआ, बहादुर चिड़िया, बुढ़िया और शेर आदि।

लोक-कथाएँ बच्चों ने सुनायीं—गिरगिट, बुढ़िया, शेर आदि।

(घ) गीत—राष्ट्रीय—झंडा-गीत, वंदेमातरम्, प्रभात-फेरी के गीत, कूच-गीत, बच्चों ने मौक़े आने पर सीख लिये।

प्रार्थना-गीत, सरल भजन और श्लोक। काम करते-करते गाये जाने वाले कुछ गीत, जैसे 'तकली', 'सूत काते चलो', 'मेरी तकली' आदि।

गणित :—

(क) कताई के द्वारा—काते हुए तार गिनना और लिखना। १, २, ३ पूनियों के तार अटेरना और जोड़ करना। सुबह काते हुए तारों का जोड़ करना।

(ख) ओटाई के द्वारा—तोला, छटाँक, पाव से कपास तोलना। तोल कर लेना और तोलकर देना। बिनौले और रुई तोलना। हिसाब करना।

(ग) पूनियाँ बनाने के द्वारा—पूनियों का वजन करना, तोलों और आनों में लिखना।

मासिक हिसाब के द्वारा—तार, लटी का हिसाब, आने, पैसे के भाव।

(ङ) नाश्ते के द्वारा—बच्चों की संख्या गिनकर नाश्ता देना, फल गिनना, १२ फल का एक दर्जन। दूध—तोला, पाव और सेर। हरेक बच्चे के लिए १० तोले दूध देना।

हर महीने बच्चों का वजन लिया। उसके बारे में कम-ज्यादा की कल्पना। पौंड का माप।

(च) वर्ग की व्यवस्था के द्वारा—समान की जाँच, उपयोग की चीजों को जैसे तकली, अटेरन, कपास, सूत, खुरपी, टोकरी आदि को गिनना और तोलना।

वर्ग के कमरे की लम्बाई-चौड़ाई और बच्चों की ऊँचाई; इंच, फुट का कोष्टक तैयार करना।

(छ) समय के बारे में ज्ञान—२४ घंटे का १ दिन, ७ दिन का एक हफ्ता, ४ हफ्ते का १ माह और १२ माह का १ साल।

सामाजिक तालीम

(क) स्कूल का जीवन—आपस में हिल मिलकर काम करना, बालसभा करना, काम का बँटवारा करना; अपना काम पूरा करना; एक-दूसरे की मदद करना; भद्दी बात न करना; सभ्यता से रहना, माँ-बाप और गुरु-जनों का आदर करना; मेहमानों का स्वागत करना, उनको प्रणाम करना; अपनी बारी के लिए ठहरना, सामान जहाँ रखना चाहिए वहाँ रखना, आदि आदतें डालने की कोशिश की गयी।

(ख) गाँव का जीवन—गाँव में होनेवाले धंधों का बच्चों ने निरीक्षण किया:—टोकरी बनाना, झाड़ू बनाना, चटाइयाँ बुनना; नीरा से गुड़ बनाना, खपरैल और ईंटे बनाना।

(ग) उत्सव त्योहार—बच्चों ने स्कूल में राखी, दशहरा, बाल-स्नेह-सम्मेलन, वर्ष-प्रतिपदा और हनुमान-जयंती के उत्सव मनाये।

तिलक-पुण्यतिथि, ठाकुर जयंती, गांधी-जयंती, स्व० महादेवभाई और स्व० कस्तूरबा के श्राद्ध-दिन,—ये राष्ट्रीय उत्सव तालीमी संघ में मनाये गये। बच्चों ने इन मौक़ों पर होनेवाले कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

झंडा-वंदन—हर सोमवार को झंडा-वंदन में बच्चों ने भाग लिया। नियम से पूरा करना, ठीक ढंग से खड़े रहना, गाना गाना, कतार में चलना, नमस्ते करना—सिखाने की कोशिश।

(घ) नागरिकता की अमली तालीम—बाल-सभा का संघठन किया गया। साल-भर में नीचे लिखे मंत्री हर माह चुने गयेः

१ वर्ग मंत्री—पांडुरंग, गणपत, ताई, रामराव, रंगू और यमू।

काम—समय पर स्कूल खोलना घंटी बजाना, वर्ग गंदा हो तो साफ करानाः ब्लैक बोर्ड, पेंसिल रखनाः चटाई बिछाना, बच्चों को एक क़तार में क्लास में लाना और छुट्टी के समय बाहर ले जाना।

२-सफाई मंत्री— शंकर, मंजुला, लीला, माणिक, सेवकराम, बापू और कृष्ण।

काम—वर्ग की सफाई, चटाइयाँ झाड़ना, स्कूल में कहीं कचरा हो तो साफ करना, पाखाने पर मिट्टी डालना।

३-व्यक्तिगत सफाई मंत्री—यमू, मंजुला, रामराव, गणपत, और शेरखाँ।

काम—नाखून काटनाः कपड़े गंदे हो तो उन्हें साफ करना, और दूसरों से करवाना; हाथ मुँह, शरीर की सफाई रखना और वर्ग के तमाम बच्चों का पूरा-पूरा ध्यान सफाई की ओर रखना।

४-प्रार्थना-मंत्री—रामराव, पांडुरंग, शंकर, शेरखाँ, लीला, गणपत, यमू और वामन।

काम—प्रार्थना की जगह साफ करनाः चटाई बिछानाः बच्चों को ठीक बैठानाः प्रार्थना में भजन बोलने की पाली निश्चित करनाः प्रार्थना शुरू करना।

५-कताई मंत्री—गणपत, शेरखाँ, लीला, सेवकदास, रामराव और वामन।

काम—कताई का सामान वर्ग में लाकर रखना; ज़रूरत पड़ने पर बच्चों को देना, पैसों तथा रुई का हिसाब रखना, ज़रूरत पड़ने पर कताई में दूसरों की मदद करना।

६-ओटाई-मंत्री—गणपत, ताई, शंकर, पांडुरंग, माणिक, रामराव, जानकी और यमू।

काम—ओटाई का सामान वर्ग में लाना; कपास और बिनौलों का हिसाब रखना, वर्ग समाप्त होने पर सब समान ठीक जगह पर रखना।

७-नाश्ता-मंत्री—रामराव, पांडुरंग, मंजुला, गणपत, यमू और लीला।

काम—नाश्ता बाँटने की पाली लगाना; नाश्ता लाना; बच्चों को ठीक तरह से बिठाना।

८-कपड़ा मंत्री—यमू, मंजुला, रामराव, पांडुरंग, नानी और सेवकुमारी।

काम—कपड़ों का हिसाब रखना; ज़रूरत होने पर बच्चों को कपड़े देना और उनकी सफाई का इंतज़ाम करना।

९-खेल-मंत्री—रामराव, पांडुरंग, वामन, गणपत और यमू।

काम—खेल के समय सीटी देकर सबको इकट्ठा करना; एक क़तार करवाना; फिर पाली-पाली से खेल करवाना।

१०-पानी-मंत्री—गुरुजी, पांडुरंग और रंगू।

पानी लाने के बारे में बाल-सभा में निश्चित हुआ कि गुरुजी की मदद से दो लड़के पानी भरेंगे, क्योंकि अकेले कुँए से पानी लाना बच्चों के लिए बहुत कठिन है।

बच्चों को घर से बुलाने के लिए भी एक मंत्री का चुनाव किया गया, लेकिन फिर सबकी एक राय से यह तय हुआ कि बच्चों को बुलाने कोई नहीं जायगा, वे स्वय आयेंगे।

खुलासा—

(क) सभा का नियम—बाल सभा क्या है, उसको जरूरत क्या है, सभा में नियम न होने से क्या होगा—आदि बातें समझायी गयीं।

(ख) सभापति का चुनाव—सभा की कार्रवाई करनेवाले को सभापति कहते हैं। सभा के काम के पहले इसका चुनाव होता है। जो नाम सुझाता है उसे सूचक या प्रस्तावक कहते हैं। उसका अनुमोदन दूसरे व्यक्ति के जरिये होने पर सभापति का चुनाव होता है और उसके कहने के अनुसार सभा का काम चलता है।

(ग) विवरण देना—हर-एक मंत्री अपने काम का जबानी 'बाल-सभा' में देता है।

(घ) चुनाव और मत-दान—खुद इच्छानुसार काम लेना, मत देना, समान मत मिलने से चिट्ठी डालकर चुनाव करना।

सामान्य-विज्ञान : सफाई के द्वारा—

(क) (स्कूल में)—खुद की और समाज की सफाई का महत्व। सफाई की ज़रूरत, सफाई का तरीक़ा।

कक्षा का कमरा, आँगन, पेशाब-घर, कुँआ और आस-पास की जगह क्यों साफ रखना चाहिये। गंदे रहने से कौन-कौन-सी बीमारियाँ फैलती हैं। पीने का पानी कैसे रखना। उसे साफ क्यों रखना चाहिए। नाश्ता करने से पहले हाथ-पाँव धो लेने की जरूरत।

ख—(गाँव में)—गाँव के रास्ते साफ रखना, रास्तों पर पाखाना नहीं करना, पाखाने पर मिट्टी डालना, जूठन गाँव के बाहर डालना, कुएँ की नाली साफ करना, खुद का मकान और आस-पास की जगह साफ रखने की कोशिश करना, गाँव में सोख-गड्ढा का महत्त्व, सोख-गड्ढे बनाने में मदद करना।

इन सब कामों में बच्चों ने हिस्सा लिया। इतना ही नहीं; एक मरी हुई बिल्ली शाला के पास पड़ी थी। गंदगी फैलने का डर था। बच्चों ने खुद अपने आप खुशी-खुशी उसे गाँव के बाहर ले जाकर दफना दिया।

भोजन के द्वारा—गाँव में पैदा होने वाली फसलों के नाम। हर तरह की सब्जी। हर घर का भोजन। दूध और फलों की कमी। शाला में हर रोज दस तोला दूध या एक फल नाश्ते में देकर भोजन की कमी पूरी की गयी।

प्राकृतिक परिचय के द्वारा—बादल, ठंढ, धूप—इनका हमारे जीवन और रहन-सहन पर असर।

सैर-सपाटों के द्वारा—हर मौसम में बाहर सैर के लिए जाते थे। पेड़, पत्ते और फूलों का निरीक्षण किया गया। पवनार गाँव में जाकर पूज्य विनोबाजी के दर्शन किए। वहाँ नदी के किनारे से वर्ग के संग्रहालय के लिए कुछ चीजें लाये।

चित्रकला—रंगों की पहचान। लाल, पीला, हरा, काला, सफेद, पत्तों का आकार, तकली, अटेरन, झंडा, खुरपी—इनके चित्र खींचना।

फूल और पेड़ों के नाम, फूलों के रंग। पेंसिल से स्लेट पर और उँगली से मिट्टी पर चित्र बनाना।

संगीत : संगीत में कुछ भी प्रगति नहीं हुई । मामूली भजन, श्लोक, और सरल गीत सिखाये ।

खेल : ये खेल खेले गये—लंगड़ी, झाड़ो का ख़रगोश, खड़ा खो-खो, गाड़ी, रोकवाली दौड़, तिपाई की दौड़, आँख वंद करके केला खाना, शब्द-वेध, पायलीगुम, हुतूतू, टोली का नायक पहचानना ।

इसके सिवा कतार में चलना, खेल के समय सच कहना, छोटे वच्चों से मिलकर खेलना आदि आदतें वढ़ायी गयीं ।

बच्चों के कुछ प्रश्न और उनके जवाब

नाम	सवाल	जवाब	किस प्रसंग से प्रश्न उठा
१. नीलकंठ—	मेरे लपेटे का वजन क्या है ?	लपेटे का वजन करके दिखाया, ८ तोले हुआ ।	वच्चों का वजन लेते समय ।
२. दादा—	गायके शरीर पर कपड़े नहीं, तो उसे क्या ठंड नहीं लगती ?	ईश्वर ने उसके शरीर पर वाल दिये हैं इससे उसे सर्दी नहीं लगती । वाल ही उसके कपड़े हैं ।	आदिम मनुष्य की रहन सहन और उसके कपड़े की जरूरत कैसे पूरी होती थी, यह वताते समय ।
३. दादा—	गाय के पैर में काँटे नहीं लगते क्या ?	गाय के पैर में खुर हैं, इससे उसे काँटे नहीं चुभते ।	(वही)

४. पंचफूला—६३ दिन का उपवास करने के वाद पूज्य भंसाली भाई कैसे वचे ?	कमला—वे ईश्वर के भक्त हैं।	पूज्य भंसाली भाई चिमूर गये, उस वक्त आत्म प्रगटन में।
५. गंगाधर—अभी हम सव टुकड़े-टुकड़े करके पूनी क्यों कातते हैं ?	जोतू—थोड़ा-थोड़ा करके लिखना आने के लिए। गंगाधर—एक पूनी काती तो तार गिनना नहीं आता; लिखते भी नहीं वनता।	दस्तकारी-कताई-के शुरू में।
६. रामराव—क्या वापूजी जेल में सूत कातते थे ?	(इसका जवाव शिक्षक ने वच्चों को खुद वताने को कहा) रामचंद्र—जेल में तो हाथ वँधे थे, सूत कैसे कातेंगे ? आत्माराम—नहीं, मेरे पिताजी तो वहुत-सा सूत कातकर लाये थे। (उसके पिता सत्याग्रह में जेल जाकर आये हैं)	वापूजी के जेल से आने के वाद चर्चा करते समय

७. सीता— पू. महादेव भाई की मौत हुई उस समय बापू जी को कैसा लगा ?	(इसका जवाब सवाल पूछने वाली लड़की से ही पूछा गया) सीता—उन्हें खूब बुरा लगा होगा ! बापू जी रोये होंगे ?	स्व. महादेव भाई के श्राद्ध-दिन ।
८. पांडुरंग—आज दूध ज्यादा क्यों मिला ?	यमू—आज दूध ज्यादा आया है। शिक्षक—नहीं, दूध रोज जितना ही है; लेकिन बच्चे कम आये इसलिए दूध ज्यादा मिला।	नाश्ते के समय।
९. अंजनी—ज्वारी से भी गेहूँ में ज्यादा मिट्टी क्यों रहती है ?	पंचफूला—ज्वारी के भुट्टे काटते हैं और गेहूँ को नीचे से काटते हैं।	अनाज सफाई के समय।
१०. लीला—रात को मेरे घर में पत्थर किसने फेंके ?	ताई—मेरे भाई और बापू ने।	
११. चरणदास—किस कारण से ?	शिक्षक—पुरानी बुरी पद्धति है कि गणेश-	दोनों स-वाल गणे-

	चतुर्थी के दिन घरों पर पत्थर फेंकने से कोई गाली नहीं देता। जो गाली देगा उससे गण-पति नाराज हो जायँगे। लेकिन यह अच्छा नहीं।	श-चतुर्थी की चर्चा के समय उठे।
१२. सुदाम—उनके मुँह में कितना थूक रहता है ?	देखो तो, तमाखू खाने वालों के मुँह में कितना थूक रहता है ! थूकने का मौक़ा न मिला तो वे उसी जगह पर थूक देते हैं। ऐसी बुरी आदत होती है।	एकनाथ की कहानी और उनके बदन पर थूक डालने की शरारत करने वाले यवन के बारे में बताते वक्त
१३. लीला—तेल का क्या हुआ ?	श्री पवारजी ने समर्थन किया कि तेल पीपा में है, उसका भी एक पत्थर बन गया होगा।	फरीदशाह का जुलूस और गिरड टेकड़ी की कहानी के समय।

१४. शेरखाँ—आधे पिंड का आधा ही लड़का आया होगा ?	एक पिंडधारी ले गया। बाकी दो पिंड बचे। उसके चार टुकड़े किए। आधा पिंड मानो एक टुकड़ा। चार टुकड़ों के चार लड़के हुए—राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न।	यह दोनों सवाल राम-जन्म के अवसर पर कथा चालू थी; उन समय उठे
१५. पांडुरंग—पिंडधारी ले गया तो उसके भी लड़का हुआ होगा ?	शिक्षक—इसका उत्तर आज नहीं देते। तीन-चार दिन बाद देंगे। पिंडधारी ले गया, अभी इतना ध्यान में रखो। (हनुमान-जन्म-दिन पर इसका उत्तर दिया और वह बच्चों की समझ में आया)।	

एक महीने का काम

(अगस्त, १९४७)

बच्चों की तालीम

स्कूल के दिन—

अगस्त महीना राष्ट्रीय, सामाजिक व धार्मिक उत्साह-त्योहारों से भरा-पूरा था। इन सब कार्यक्रमों का बहुत कुछ-संपर्क बच्चों से आया। इसीलिए ता० १ ७, ११, १२, १३, १४, १५, २० और ३१ को नाश्ता देकर बच्चों को छुट्टी दी। पाँच रविवार और एक दिन पानी की झड़ी से स्कूल बंद रहा। बाकी दिन रोज की तरह कार्यक्रम चला।

बच्चों की तादाद—

पिछले महीने बच्चों की संख्या ४५ थी। लेकिन नियमित रूप से स्कूल में आनेवाले बच्चों का असर कुछ पालकों पर पड़ा और आज तक शाला में न आनेवाले ६ बच्चों को लाकर उन्होंने स्कूल में दाखिल करा दिया। इस प्रकार अब कुल ५१ बच्चे हैं। गाँव में कुछ थोड़े बच्चे हैं जो अभी तक दाखिल नहीं हुए। वे भी जल्दी ही शाला में दाखिल होंगे, ऐसी हमारी उम्मीद है।

हाजिरी—तीन वक्त ली जाती है–सुबह, दोपहर और नाश्ते के समय। नाश्ते के समय की हाजिरी में विशेष फरक नहीं रहता क्योंकि बीमार होने के सबब से जो बच्चे गैर-हाजिर रहते हैं उन्हें उसमें शामिल कर लिया जाता है। दोपहर को ज्यादा छोटे

बच्चे सोते हैं, कुछ बड़े बच्चे भी अपने घर के काम--छोटे बच्चों को संभालने आदि--के लिए घर मे रह जाते हैं। आज-कल निंदाई का मौसम होने की वजह से सवेरे की अपेक्षा दोपहर की हाजिरी कम रहती है।

सवेरे की औसत हाजिरी— ४६.६
दोपहर की औसत हाजिरी— २६.७

सफाई—

(क) शाला-सफाई--कमरे की सफाई करना, चटाइयाँ बिछाना, टोकरी में कचरा भरकर घूर पर ले जाना, ये काम बच्चे रोज करते हैं। इसमे स्वच्छता और सजावट कैसे हो इसके बारे में प्रसंगानुसार बच्चों को कुछ जानकारी दी।

स्कूल मे पेशाब जाने के लिए पेशाबघर का उपयोग करना, निश्चित जगह पर थूकना, फटे हुए कागज, टूटन, कचरा आदि निश्चित जगह पर डालना, ये बातें बतायी गयीं। साथ ही साथ यह भी समझाया कि बच्चे गाँव मे घर के पास या रास्ते में पाखाना न करे।

(ख) शरीर-सफाई--रोज सवेरे उठकर पाखाने जाना, मुँह धोना, दाँत साफ करना, नाक, कान, आँख को अच्छी तरह धोना या धुला लेना, बालों में कंघी करना-करवाना और स्नान करना ये सब काम बच्चे घर पर ही कर लेते हैं। लेकिन हरेक कोई उन्हें ठीक-ठीक करता है या नहीं इसकी तरफ ध्यान दिया गया। स्कूल में अव्यवस्थित आनेवाले बच्चों के पालकों से मिलकर उन्हें इस बारे मे समझाया। बच्चे अब पहले से अधिक साफ होकर आते हैं। फिर भी, बरसात के दिन होने से कुछ अव्यवस्था रह जाती है तो वह शाला मे पूरी की जाती है। बच्चे

दाँत साफ करते हैं, मुँह धोते हैं, और किसी ने अगर कंघी न की हो तो तेल लगाकर कंघी कर लेते हैं। (नारियल के तेल के तेज हो जाने व मिलने में कठिनाई होने से बहुत-सी लड़कियाँ घर पर बाल नहीं बना पातीं, वे शाला में तेल लगाकर बाल ठीक कर लेती हैं।)

(ग) कपड़ा सफाई—बरसात का महीना होने की वजह से इस महीने में स्कूल में कपड़े नहीं धोये। दूसरे, बच्चों के कपड़े घर से ही साफ होकर आयें, इस ओर अधिक ध्यान दिया। रामदास सोनू को गुंडियों से कपड़े दिये। अनसूया के पास कपड़े थे ही नहीं, उसे एक चड्डी व बुनयाइन दी। उसकी माँ को फुरसत के समय कातने के लिए कहा।

आरोग्य—पिछले अगस्त महीने के मुक़ाबिले में इस वर्ष इस महीने में कम बच्चे बीमार पड़े। नीचे लिखी बीमारियाँ हुईं :—

बुखार—(१) कौशल्या, तुकाराम—१२ दिन (२) जयत—८ दिन (३) शंकर गणपत— १ दिन (४) गिरिधर—१ दिन (५) सिंधू—१ दिन (६) रुखमा वंकिम—३ दिन और (७) रामराव चंपत—१ दिन।

दस्त—कान्ति—३ दिन।

कान बहना—शांति चंद्र का बायाँ कान बहता है, दवा चालू है।

खुजली-फुसी— मंदा, मधू सीताराम, गिरिधर गंगा, और शंकर—इन बच्चों को मामूली फोड़े हुए।

आँख दुखना— शंकर, रामचंद्र, मैना, इंदु, सावित्री, प्रभाकर त्रि. प्रभाकर गो., शांतिचंद्र, अनसूया म., जानराव बाबू, कमला,

परशुराम, रुखमा वं, सुमित्रा, रामराव, विमला, कांति, सुशीला, गंगा, रामदास सोनू, चंपत प्रह्लाद और रुखमा व.—इन २३ बच्चों की आँखें दुखीं।

उपचार—सब बीमार बच्चों को बाल-आरोग्य-केंद्र से दवा दिलायी गयी। कांति को ३ दिन बड़े दवाखाने में रखा।

नाश्ता—कुल २५ दिन नाश्ता दिया। रोज ४ सेर के हिसाब से कुल १०० सेर दूध दिया। फी रुपया ३ सेर के हिसाब से कुल खर्च ३३ रु. ५ आने ३ पाई आया। नाश्ते के समय की कुल औसत हाजिरी ४८ रही।

हरेक बच्चे को प्रति दिन ६॥ तोले के हिसाब से दूध मिला और हर बच्चे पीछे ५ पैसे रोज खर्च हुआ। बीमार बच्चों को घर पर दूध दिया।

वजन—महीने के आखिर में बच्चों का वज़न लिया। २६ बच्चे हाजिर थे। इनमें से चार बच्चों का वजन पहले लिया नहीं गया था। बाकी २२ में से १२ बच्चो का वज़न बढ़ा, ५ का समान रहा और ५ का कम हुआ। कुछ बच्चे छोटे होने के सबब से और कुछ पानी के कारण नहीं आ सके।

हैजे का टीका—ता. १०, ११ और १२ को गाँव में हैजे का टीका लगाया गया। बच्चो ने भी टीका लिया। इसकी वजह से ३ दिन बच्चों को तकलीफ रही, कुछ को बुखार भी आया।

पालकों की तालीम

(१) बच्चो के पालकों को नये दाखिले के बारे में समझाया। स्कूल में आने वाले बच्चे बिना कारण घर पर न रहें, इस बाबत बताया।

(२) जुलाई में २२ बच्चे बिना सबब गैर-हाजिर रहे। निश्चित नियम के मुताबिक़ उनमें से दस पालकों ने प्रतिदिन एक आने के हिसाब से आज तक का कुल नुक़सान एक रुपया दस आने लाकर जमा कर दिया।

(३) गुंडियाँ देकर बच्चों के लिए कपड़े ख़रीदने की बाबत उन्हें समझाया। रामदास सोनू के पालकों ने ६ गुंडियाँ देकर उसके लिए चड्डी और बुनयाइन लीं। अनसूया के पालकों को कातने के लिए कहा। गुब्बारे और उनके दुरुपयोग के बारे में समझाया।

(४) हैज़े का टीका क्यों लें, उसके साथ ही बीमारी रोकने के दूसरे तरीके—सफाई रखना, भोजन व पानी की हिफ़ाज़त रखना—आदि बातें टीका देने के वक्त समझायीं।

आँखों की बढ़ती हुई बीमारी को देखकर पालकों को बताया कि वे इस छूत की बीमारी से किस तरह और क्यों बचाव करें।

(५) बर्सात में झड़ी लगने और कीचड़ हो जाने से मक्खियाँ खूब बढ़ गयीं। उनसे बचना और इसलिए सफाई रखना, रास्ते में पाख़ाना न जाना, गन्दगी पर मिट्टी डालकर उसे ढक देना—इस बातों की जानकारी पालकों को करा दी।

काम और खेल :

(१) मूलउद्योग—कपास साफ करना, फिरकियाँ बनाना, ओटाई करना, तकली फिराना—ये क्रियाएँ बच्चों ने कीं। बसंत कात सकता है। रुखमा को कातना सिखाया। ३० तोले कपास की ओटाई हुई।

(२) घास निकालना—बगीचा तो बनाया लेकिन बरसात होने से आगे कोई काम नहीं हो सका। जो फूल-पौधे मौजूद हैं

उन्हीं की देख-भाल की, रास्ता व मैदान की घास खुरपी से निकाली और घूर पर डाली—ये काम बच्चों ने ही किये।

(३) खेल – अपने खेल के साधनोंके साथ बच्चे खेले। पत्थर के टुकड़े, लकड़ी के टुकड़े, छोटे सूप, तराजू, छोटे झाडू, टोकरी, थैली, बीज, चक्की, मटकी—इन साधनों का उपयोग खेल मे किया गया।

खास तौर पर बच्चो की दो टोलियाँ बनायीं—एक २॥ से ४ वर्ष तक के बच्चों की, दूसरी चार वर्ष से ऊपर की। छोटे बच्चे जिस वक्त साधनों से खेलते उस समय बड़े बच्चों का मूलउद्योग चालू रहता। नाश्ते के बाद १० बजे छोटे बच्चे घर पर चले जाते. उस वक्त बड़े बच्चे खेलते।

खिलौने—आज-कल वर्धा के बाजार में रबड़ के गुब्बारों की खूब धूम है। उसका असर देहातो में भी हुआ। सेवाग्राम गाँव में एक नया परिवार रहने के लिए आया था (अब वह चला गया)। उसमें एक बच्चा गुब्बारे बेचने लगा। उसे समझाया कि शहर के इस तरह के बेकार खिलौने लाकर गाँव मे न बेंचे साथ ही पालकों को भी बताया कि वे उन्हें खरीदकर अपने पैसों का दुरुपयोग न करें। 'सकाल' अखबार की एक खबर कि "फटे हुए गुब्बारे के दो टुकड़े चबा लेने से एक बच्चे की मृत्यु हो गयी"—पढ़कर बच्चो व पालकों को सुनायी। बच्चों से पूछा कि वे गुब्बारे खरीदेंगे क्या? उन्होने कहा—"नहीं"। यह प्रयत्न आठ दिन तक चालू रखा।

सिखाये गये विषय—

भाषा—बच्चो की रोज की भाषा दुरुस्त की। अपनी दिनचर्या, भोजन, बाजार, त्योहार, अपना नाम. पोशाक. इन सबके

बारे में छोटे-छोटे सरल वाक्य बाल-सभा में बच्चे बड़े सीधे-सादे शब्दों में स्वाभाविक तौर से कहते हैं।

कहानी—'कौआ और बगुला', 'चिड़िया गिर गयी', 'मेंढकों का राजा', 'मेंढक का बच्चा और बैल'—इन कहानियों को अभिनय करके बताया। बच्चों को बहुत पसंद आयीं।

गाने—पुराने गाने को दुहराया।

गणित—मूलउद्योग और खेल में बच्चों व साधनों को गिना, इस तरह २० तक की संख्या की आवृत्ति सहज ही हो गयी। लंबा, चौड़ा, गोल, चौकोन, हलका और भारी—इनकी जानकारी खेल के जरिये करायी।

सामाजिक तालीम—रोज की जिंदगी में भाई-बहन की तरह किस तरह से रहें, छोटे बच्चों की देख-भाल व मदद कैसे करें—इस वृत्ति को बढ़ाने की प्रत्यक्ष कोशिश की।

प्रार्थना में ठीक से चुपचाप बैठना, शांति रखना, झंडा-वंदन के समय कतार बनाकर चलना, कतार में ठीक से चुपचाप खड़े रहना, गाँव की सामुदायिक प्रार्थना में नियम से जाना, शांत रहना—इन बातों को बताना।

नाश्ते के वक्त सबके साथ बैठना, मंत्र होने तक रुकना, क्रम से जाना, पानी लेना—इन सबकी आदत डालीं। उसी तरह गाँव में या संस्था में होने वाले कार्यक्रमों, उत्सव त्योहारों में भाग लेते समय किस तरह बर्ताव करें—यह समझाया। इस तरह सभ्य जीवन की आदत किस तरह पड़े और उसमें किस तरह उन्नति हो, इसकी ओर बराबर ध्यान दिया और समय-समय पर आने वाले प्रसंगों का फायदा उठाया। बाल-सभा में मंत्रियो का चुनाव करना, काम पूरा करना व नियम का पालन करना—इनकी जानकारी हुई।

चित्रकला—बच्चों ने खड़िया से तख्ते पर और जमीन पर चित्र निकाले। चित्रकला मंत्री का काम था सबको खड़िया देना और बाद में इकट्ठी कर लेना। काम होने पर खड़िया टोकरी में रखें, इसकी आदत डाली। मिट्टी के रंग से कागज पर चित्र निकाले। लाल, पीला, नीला, हरा और भूरा, ये रंग दिये। चित्र निकाल चुकने पर बच्चों से चित्र समझे, और काम में लाए हुए रंगों के नाम पूछे। फूल के पौधे मे लाल रंग के फूल हैं, ऐसा बच्चों ने बताया। चित्र काढ़ते समय रंग सँभालना, हाथ नवाना, जिस रंग की कूँची हो उसे उसी रंग मे रखना ये बातें बार-बार बतायीं।

शारीरिक हल-चल व खेल—वर्षा के कारण तख्ता और घोड़े की पाटी नहीं लगाई। बच्चे घसरंडी पर खेले। गुड्डा गुड्डी से भी खेले।

उसी तरह रोजाना काम के पहले, छुट्टी के बाद और अशांति के समय 'खड़े हो', नीचे बैठो', 'हाथ आगे', 'हाथ पीछे'. 'हाथ नीचे', ये हलचलें करायीं। शब्द चटपट बोलने की दृष्टि से एक ही तुक वाले शब्दों—जैसे 'उंच उडी', 'पाण्यांत बुडी' 'शिपाई गुडी'—का प्रयोग किया। बच्चो को व्यवस्थित करने व उनमे स्फूर्ति लाने लिए उनका उपयोग हुआ। ठीक से बैठना, उठना, चलना—इन बातों की ओर ध्यान दिया।

इस महीने में नवीन साधनों में बढ़ती नहीं हुई।

प्राणी-जीवन—मेंढक का निरीक्षण किया। ता० २७ को बच्चो ने चुहिया व उसके सात पिल्ले देखे। कुछ लंबे कीड़े निकले, उन्हें भी देखा।

———

छुट्टियों में पूर्व-बुनियादी शाला के काम का

विवरण

[यह एक नियम-सा हो गया है कि प्रायः सभी शिक्षा-संस्थाओं में गर्मियों के दिनों में छुट्टी रहती है। लेकिन नयी तालीम में तो छुट्टी क्या? गाँव के बच्चे तो गाँवों में ही रहते हैं। इस समय उन्हें गर्मी में घूमने-फिरने से बचाने और उनकी हिफाज़त करने की ज्यादा जरूरत है, क्योंकि यही समय ऐसा होता है जब बच्चों में बुख़ार, चेचक, आँखें आना, खुजली आदि बीमारियाँ जोर पकड़ती हैं। दूसरे, बच्चों के माँ-बाप या पालकों को भी इस समय फुरसत रहती है और बच्चों के बारे में शिक्षक को उनसे चर्चा करने के लिए यह अच्छा मौका मिलता है, क्योंकि उधर जुलाई मे जब स्कूल खुलते हैं तो वर्षा के शुरू हो जाने से पालक अपनी खेती आदि धंधों में लग जाते हैं और इधर अधिक ध्यान नहीं दे सकते।

इस दृष्टि से इस साल पूर्व-बुनियादी के बच्चों का स्कूल गर्मियों में भी चालू रखा गया। इसका एक महीने का विवरण नीचे दिया जाता है। —सं०]

काम की योजना—पिछले सालों का अनुभव था कि गर्मियों मे छुट्टी देना बच्चों के विकास की दृष्टि से हानिकारक है। गर्मी में बच्चों को स्कूल से छुट्टी देकर खुला छोड़ देने से वे धूल में खेलेंगे और गर्मी में इधर-उधर फिरेंगे। इसके सिवा, इसी समय (मई-जून में) विषम ज्वर, आँख, माता, गोवर

आदि बीमारियाँ रहती हैं। इसलिए बच्चों के विकास की दृष्टि से यही अच्छा रहेगा कि गर्मियों में स्कूल खुला रखा जाय। और मौसम तथा बच्चों की जरूरतों को सामने रखकर कार्यक्रम में कुछ अदल बदल किया जाय।

बच्चों की भर्ती करने की दृष्टि से भी मई-जून का वक्त ही अधिक उपयुक्त है। ऐसा करने से जुलाई से एकदम व्यवस्थित काम शुरू किया जा सकता है, नहीं तो मई-जून में छुट्टी और जुलाई-अगस्त तैयारी में—इस तरह चार महीने बेकार चले जाते और पहले छः माह में जितना काम होना चाहिये उतना नहीं हो पाता।

बच्चों को यह छुट्टी फसल आने के मौकों पर दी जाय। उस वक्त बच्चे खेतों में फिरेंगे तो भी कुछ फायदा ही होगा। कार्यकर्ता अपनी जरूरत के मुताबिक़ छुट्टी लें।

कार्य-क्रम—बच्चों को इकट्ठा करना और पालकों से संबंध स्थापित करना—ये दो कार्यक्रम के मुख्य अंग रहे।

स्कूल के कार्यक्रम में तबदीली—स्कूल के रोज के कार्य-क्रम में फेर-बदल करके गर्मी में उसे इस तरह रखा—

सवेरे ७॥ से ९॥—स्कूल-सफाई, प्रार्थना, शरीर-सफाई, आरोग्य, नाश्ता, कहानियाँ, गाना, वर्ग-व्यवस्था और छुट्टी।

९॥ से ११—बच्चों का घर जाकर स्नान व भोजन करना।

दोपहर ११॥ से ४—

११॥ से १२ तक बच्चों का घर से शाला में आना.
१२ से २ तक सोना
२॥ से ३ कहानियाँ, गाने
३ से ३॥ नाश्ता (छाछ)
३॥ से ४ सूत्र-यज्ञ और छुट्टी।

इस तरह १८ अप्रैल से ३१ मई तक यह कार्यक्रम रहा। फिर आकाश में बादल घिरने लगे और डेढ़ महीने में डाली हुई बच्चों की आदत घर पर कायम रहेगी इस उद्देश्य से दोपहर में बच्चों को घर पर सोने के लिए छोड़ दिया क्योंकि नई तालीम का असल ध्येय तो है बच्चों को स्वस्थ और शुद्ध जीवन की ऐसी आदतें डालना जो घर में भी क़ायम रहें। इस तरह फिर सवेरे ७॥ से १० तक के कार्यक्रम के बाद छुट्टी हो जाती थी।

बच्चों का संगठन—ढाई से दस वर्ष के सब बच्चों की सूची तैयार की। पालकों से मुलाक़ात की। नई तालीम में शारीरिक विकास का क्या स्थान है, यह उन्हें समझाया। पहले प्रतिष्ठित व जवाबदेह लोगों से चर्चा की, उसके बाद बच्चों के सब पालकों को अपना कार्यक्रम समझाया।

शाला में नियमपूर्वक आनेवाले और न आनेवाले बच्चों के स्वास्थ्य का अन्तर पालकों को दिखाया। नीरोगी बनना हमारा काम है। इसके लिए बच्चों को शाला में दूध दिया जाता है, उनके आराम और खेल की व्यवस्था की जाती है—यह बात पालकों को समझाई और उन्होंने मान ली। बच्चों के ग़ैर-हाज़िर रहने के प्रति भी उनका ध्यान खींचा।

शरीर-सफाई—जो बच्चे पहले से ही शाला में आते थे वे घर से ही साफ होकर आने लगे। इसलिए उन्हें साफ करने की जरूरत नहीं पड़ी। इसके बारे में उनकी माताओं को समझाया। नये बच्चों की सफाई स्कूल में ही की।

सोना—गर्मी में बच्चों को आराम की अधिक जरूरत रहती है। इसलिए इन दिनों बच्चों को दोपहर में सोने की आदत डालने का खास कार्यक्रम रहा।

दोपहर के पहले, स्कूल बंद होने से पहले ही, बिछौनों की

व्यवस्था कर ली जाती थी। बच्चे ११॥ बजे से आना शुरू कर देते थे। बाल वर्ग व पहला-दूसरा वर्ग मिलाकर कुल चालीस बच्चे सोने के लिए आते थे। बहुतसे बच्चे १२॥ बजे तक आ जाते थे। लेकिन घर में भोजन में देर होने की वजह से कुछ बच्चों को १॥ बज जाते थे। इससे फायदे के बदले नुकसान होगा, यह सोचकर बच्चों के घर पर सवेरे न जाकर दोपहर में ही जाना शुरू किया। पालकों से मुलाक़ात की और उन्हें अपना नया कार्यक्रम समझाया। उन्हें बताया कि बच्चों को सोने के लिए स्कूल में भेजना हो तो १२ बजे के पहले ही भेज दें, जिससे बच्चों के पैर नहीं जलेंगे और उन्हें धूप में तकलीफ भी नहीं होगी। पालकों ने यह बात मान ली और बच्चे समय पर शाला में आने लगे।

शुरू-शुरू के कुछ दिन, खासकर एक सप्ताह, बच्चों को स्कूल में आकर सोना—यह एक मजा लगता था। बच्चो से कहते थे कि "सो जाओ" लेकिन वे एक दूसरे को इशारे करके वक्त बिताते थे और कहते थे "गुरुजी, नींद नहीं आती।" उनसे कहा कि "चुपचाप लेटे रहो, बोलो नहीं, जिससे दूसरे सोने वालों को बाधा न पहुंचे।" इस प्रकार थोड़े अनुभव से शिक्षक पहले खुद शांतिपूर्वक लेटकर सो जाते थे। फिर बच्चों को भी नींद आने लगी और वे अपने आप सो जाते थे।

पानी—पीने के लिए ठंढे पानी की व्यवस्था सवेरे शाला बन्द होने के पहले ही कर ली जाती थी। बच्चों को भर-पूर पानी पिलाया।

भोजन—बच्चों को सवेरे नाश्ते में दूध और दोपहर को छाछ दी। बीमार बच्चों को घर पर ही दूध दिया। इससे बच्चो के स्वास्थ्य पर अच्छा असर पड़ा।

पालकों से सम्बन्ध—दोपहर के समय कुछ पालक बच्चों को पहुँचाने के लिए आते थे। वे सब बच्चों को शांतिपूर्वक लेटे हुये देखते और इस नवीन उपक्रम से खुश होते थे। इस समय पालकों को पीने के पानी और भोजन-पूर्ति (नाश्ता) के बावत जानकारी दी। शाला का ठंढा, स्वच्छ पानी पीकर पालक घर जाते थे।

कुछ पालकों को जान-बूझकर बुलाया और दोपहर में सोये हुए बच्चे उन्हें दिखाये। ठढा पानी व कभी कभी छाछ देकर भेज दिया। इसका बहुत फायदा हुआ और पालक इस काम को आदर की दृष्टि से देखने लगे।

बच्चों का आरोग्य—हमेशा के कार्यक्रम की तरह बच्चों के आरोग्य के ऊपर ध्यान तो दिया ही लेकिन इसके पहले जो बच्चे शाला में नहीं आते थे और जिनके प्रति पालक भी ध्यान नहीं देते थे, ऐसे आठ-दस बच्चों को स्कूल में लाना शुरू किया। इन्हें खुब खुजली थी। बाल-आरोग्य-केन्द्र में उनके फोड़े धोकर मरहम लगाया और दूध पिलाया। पहले तो उनके पालक 'नाहीं नूहीं' करते थे। लेकिन उन्हें समझाया कि बच्चों के फोड़े अच्छे नहीं होने तक हम दूसरा कुछ करनेवाले नहीं। बच्चे अगर स्कूल में नहीं आये तो भी उन्हें घर से दवाखाने में लाये और घर ले जाकर दूध पिलाया। एक हफ्ते में सब बच्चे दुरुस्त हो गये। पालकों को भी खुशी हुई और बच्चे भी स्वस्थ हुए।

१ मई व १ जून को बच्चो का वजन लिया। ज्यादातर बच्चो का वजन बढ़ा। छः बच्चे दोपहर में सोने नहीं आते थे; उनका वजन घटा।

पालकों पर असर—हम पहले ही बता चुके हैं कि बुनियादी तालीम का ध्येय है कि एक तो बच्चों का विकास और दूसरा

बालकों को बच्चों के सर्वांगीण विकास के बारे में समझाना। हमारे इस कार्यक्रम में चार बातें मुख्य रहीं—बच्चों को आराम, पानी, भोजन की व्यवस्था और उनके आरोग्य की देख-भाल। इससे बच्चों के स्वास्थ्य पर अच्छा असर पड़ा। गर्मी में उनका वक्त आनन्द और आराम से बीता। इन सब परिणामों को देखकर पालकों पर भी उसका अच्छा प्रभाव पड़ा और हमारे काम के प्रति उनका विश्वास बढ़ा।

तीन साल के प्रयोग के बाद

एक साल का काम—बच्चों की तालीम

१९४७-१९४८ तक

सेवाग्राममें बच्चों की तालीम शुरू होकर दो वर्ष बीत चुके हैं। तीसरे वर्ष का यानी जूलाई १९४७ से अप्रैल १९४८ तक का वार्षिक विवरण हम यहाँ दे रहे हैं। पिछले दो वर्षों के अनुभव से बाल-शिक्षा के काम में हमने कुछ फेरबदल किये। गरमी की छुट्टी में भी स्कूल चालू रखा। स्कूल में उन्हीं बच्चों को दाखिल किया जिनके संरक्षकों ने अपने बच्चों को रोज समय पर स्कूल में पहुँचाने की जिम्मेदारी स्वीकार की।

पालकों से संपर्क—

बच्चों के घर—बच्चों की तालीम का काम जिस दिन से यहाँ शुरू हुआ उसके पहले दिन से ही खेल शुरू होने के पहले हर रोज एक घंटा मैंने बच्चों के घर में देने का रिवाज रखा था, वह वैसा ही चालू रहा। सफाई, आरोग्य, खाना, कपड़ा आदि जीवन की जरूरी बातों पर सोचने की दृष्टि से मुझे व पालकों को, दैनिक जीवन में एक दूसरे से सीखने और सिखाने के काफी प्रसंग आये हैं। इस समय का ठीक उपयोग करने से भी नये संस्कार डालने का काम आसान होता है, ऐसा अनुभव हुआ है। इसीलिए मैंने ग्राम सफाई को भी एक प्रौढ़ शिक्षा का विषय मान कर स्कूल की दिनचर्या में शामिल किया और हर रोज सवेरे ६ से ७ बजे के समय चलाता रहा। साथ साथ

भंगी के काम की श्रेष्ठता, सफाई का महत्व, मैला और कचरे से मिश्रित खाद बनाना और उसका उपयोग—इसकी जानकारी दैनिक दर्शन से बालकों को दी और चर्चा तथा साथ साथ काम करके पालकों को भी समझाया।

बच्चों की हाजरी, नाश्ता खर्च, बच्चों की सफाई और स्वास्थ्य, बीमारी और इलाज आदि विषयों के बारे में पालकों से मिल कर चर्चा की गयी। स्कूल के गणेशोत्सव के सहभोज में पालकों ने हिस्सा लिया और बाल जीवन के प्रदर्शन में उपस्थित रहे। मकर संक्रांति के उत्सव में बच्चों की माताओं ने भाग लिया। समय समय पर होने वाले स्कूल के कार्यक्रमों में पालक उपस्थित रह कर अच्छी दिलचस्पी ले रहे हैं।

सुबह के गाँव भ्रमण का एक खास उद्देश्य यह रहा कि किसी कारण से शाला मे न आ सकने वाले जो बच्चे घर पर ही रहते हैं और जो बच्चे शाला में कुछ घंटे रहते थे, वे सब साथ समय बितायें। वातावरण का भी बच्चों के विकास पर अच्छा या बुरा कुछ असर तो होता ही है। इसलिए जो बच्चे घर पर रहते हैं वे स्कूल के वातावरण से भले ही वंचित रहे लेकिन हर रोज के एक घंटा उनकी ओर कुछ ध्यान देने का मौका मिला और इससे स्कूल में आनेवाले बच्चों के साथ ही घर पर रहने वाले बच्चों पर भी हमारे संस्कारों का अच्छा असर हुआ।

इस अनुभव से "पूरा गाँव मेरा स्कूल बना और गाँव के सारे बच्चे मेरे स्कूल के बच्चे! हरेक बच्चे का घर उसके स्कूल का कमरा है और सारा स्कूल एक आदर्श घर का एक बड़ा कमरा जहाँ आकर बच्चे अपना विशेष विकास करते हैं"।

फिरता स्कूल—शाला में न आने वाले बच्चों के लिए एक फिरता स्कूल भी हमने शुरू किया। इस साल ता० १५ फरवरी

से २ मार्च ४८ तक पू० कस्तूरबा गांधी श्राद्ध सप्ताह था। हमारे पास सीखने के लिए आनेवाली वहनों की मदद से यह काम शुरू किया गया।

कार्यक्रम—प्रथम जो थोड़े वच्चे मिलते थे उनको लेकर गाना गाते गाते वच्चों के घर गये। जो वच्चे मिले उन सबको घर के वाहर निकाला, माताओं को समझाया। जो अपने छोटे वहन भाई की देखभाल करते थे वे अपने उन छोटे भाई वहनों को लेकर आये।

तीन वहनों ने तीन मुहल्लों में ऐसी टोलियाँ वनायीं—

• सफाई—

प्रथम तो सव वच्चों की शरीर सफाई हुई। जिनके कपड़े गंदे थे उन्हें साफ किये। वाल सँवारे। नाखून काटे।

फोड़े फुन्सी वाले वच्चों को वड़े और समझदार वच्चों या पालक के साथ आरोग्य केंद्र में इलाज के लिए भेजा।

प्रार्थना—इसके वाद छोटी सी प्रार्थना होती थी। भजन और धुन सिखाया।

गाना, कहानियाँ और खेल—मनोरंजन के लिए कुछ गाने, कहानियाँ वतलायीं और खेल खेले।

ऊपर का सव कार्यक्रम ऐसी जगह चलता था जहाँ वच्चों की माताएँ अपना दैनिक काम करती थीं। उन्होंने इस काम को देखा; कुछ माताओं को इन वहनों के काम में मदद देने की इच्छा हुई और मदद भी दी।

साथ साथ वच्चों की सफाई के वारे में माताओं को भी कुछ सीखने को मिला।

परिणाम—यह हुआ की हमारे दैनिक काम के प्रति लोगों की श्रद्धा वढ़ी। और उन वच्चों में भी १५ दिन आनन्द का वातावरण भरा हुआ दिखायी देता था। उस सप्ताह के वाद

कई बच्चों ने हमारी शाला में आना शुरू किया। यह कार्यक्रम सवेरे ७ से ९ तक चलता था।

दर्ज संख्या—जुलाई में इस तरह ४५ बच्चे स्कूल में दाखिल हुए। जिनमें ४० बच्चे गाँव के और ५ अन्य गाँवों के थे। ४० में ४ से ६ वर्ष के २७ और २॥ से ४ वर्ष के १३ बच्चे थे। अगस्त में ९ और सितंबर में ४ बच्चे और दाखिल हुये। इस तरह सितम्बर के अन्त में कुल बच्चे ५४ रहे। इसके बाद बीच-बीच में पालकों के स्थानांतर, घरेलू कठिनाइयाँ, अनियमित उपस्थिति आदि कारणों से ९ बच्चे कम हुए और ४ बच्चे नये आये। इसलिए अप्रैल के अन्त में बच्चों की संख्या ५० रही।

उपस्थिति—जुलाई ४७ से अप्रैल ४८ तक बच्चों की औसत हाजरी नीचे लिखे अनुसार रही—

	जुलाई	अगस्त	सितंबर	अक्टूबर	नवंबर	दिसंबर	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
दर्ज संख्या	४५	५१	५५	५४	५१	४७	५०	४६	५०	५०
औसत हाजरी	३२	४६	४४	४१	३१	२९	३३	३५	३०	२२

इस वर्ष बच्चों की हाजरी तीन बार रखी गयी—सुबह, दोपहर और नाश्ता हाजरी। सुबह की और नाश्ते की हाजरी में विशेष फर्क नहीं रहता। बीमार बच्चों को उनके घर पर नाश्ता पहुँचाया गया हो तो उनको नाश्ते में हाजिर लिखा जाता है। दोपहर को छोटे बच्चे सो जाते हैं, और बड़े बच्चे अपने छोटे भाई-बहनों को संभालने के लिए घर रहते हैं। इस वजह से दोपहर की हाजरी सुबह की हाजरी से करीब आधी रही। खास कर अगस्त,

सितंवर और अक्टूवर में निदाई और नवंवर से फरवरी नक खेती का काम होने से इन महीनों में वच्चों की हाजरी कम रही। इस संवंध में पालकों को समझाया गया, लेकिन उससे हाजरी में सुधार नहीं हुआ। छोटे वच्चों को सँभालने के लिए वड़े वच्चों को घर पर रख लेने के सिवा पालकों के लिए कोई चारा नहीं रहता, क्योंकि इसके विना वे अपने काम पर जा नहीं सकते। शुरू में वगैर कारण कोई गैरहाजिर रहा तो उससे प्रतिदिन एक आना नाश्ता खर्च लेने का नियम किया था। उससे १॥=) वसूल हुआ।

वच्चों का स्वास्थ्य—सात वर्ष से कम उम्र के वच्चों की मामूली वीमारियाँ साल भर चलती रहीं। इस वर्ष आँखें आने की संक्रामक वीमारी सभी वच्चों को हुई। वच्चों की अन्य वीमारियाँ इस तरह रहीं—

	मलेरिया	पेचिश	आँखें आना	खुजली	जख्म	कुत्तेका काटना	कान बहना	कृमि	जुकाम	दांत	हड्डी में दर्द
जुलाई	८	४	१	८	२	१	—	—	—	—	—
अगस्त	७	१	२३	५	२	—	१	—	—	—	—
सितंवर	७	—	१४	३	—	—	—	१	—	—	—
अक्टूवर	३	—	१	—	२	—	—	—	१०	१	—
नवंवर	७	—	—	३	—	—	१	—	२	—	—
दिसंवर	४	—	२	५	१	—	१	—	—	—	—
जनवरी	५	—	—	५	२	—	—	—	—	—	१
फरवरी	३	—	३	—	—	—	—	—	—	—	—
मार्च	४	—	२	२	—	—	—	—	—	—	—
अप्रैल	६	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

इन वीमारियों का इलाज 'वाल आरोग्य केन्द्र' में किया गया गया। अगस्त में सब वच्चों को हैजे की सुई दी गयी तथा फरवरी में माता का टीका लगाया गया। आँख की वीमारी

में सब बच्चों की आँखों में हर तीसरे दिन दवा डाली गयी, जिससे अच्छा लाभ हुआ।

बच्चों का वज़न—हर माह ५ तारीख के अन्दर बच्चों का वजन लिया गया। साल में ३ से ४ पौंड तक २ बच्चों का, २ से ३ पौंड तक ५ बच्चों का, १ से २ पौंड तक ३ बच्चों का, ½ से १ पौंड तक २ बच्चों का वजन बढ़ा। वजन की औसत वृद्धि २ पौंड रही। ४ बच्चों का वजन नहीं बढ़ा। बच्चों का वजन कम होने पर पालकों को सूचना दी गयी।

बच्चों की डाक्टरी जाँच इस वर्ष नहीं हुई।

नाश्ता—बच्चों को प्रति दिन, प्रति बालक करीब करीब १० तोले दूध देने की योजना थी। लेकिन ७॥ तोले दूध दिया गया। दूध का भाव प्रति रुपया ३ सेर लगाया है। साल में दूध का कुल खर्च २५८-)॥। हुआ। इसमें पहले और दूसरे दर्जे के बच्चों का खर्च भी शामिल है।

	जुलाई	अगस्त	सितंबर	अक्टूबर	नवंबर	दिसंबर	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
औसत हाजरी	४१	४८	३७	४२	३०	३१	२२	३५	३०	२२
कुल नाश्ते की कीमत	रु. २५=)॥	रु. ३३।-)।	रु. ३२	रु. ३२	रु. २१	रु. ३०	रु. २४॥।)	रु. १६॥)	रु. २१।=)	रु. १=
दूध, प्रति बालक	तोले ७॥।	तोले ६॥	तो. ६	तो. ७	तो १०	तो. ८	तोले ८	तोले ७	तो. ८	तो. ७
खर्च, प्रति बालक	पाई ६	पा. ५॥	पा. ५॥	पा. ५॥	पा. ७	पा. ६	पा. ६॥	पा. ६	पा. ६॥	पा. ६

दूध के अलावा बच्चों को बीच-बीच में संत्रा, केला, छाछ व नीरा भी नाश्ते में दिये गये। हर बुधवार को सैर और सहभोज के लिए अतिरिक्त खर्च किया गया जो वह कुल १२॥=)॥ का हुआ।

कुल नाश्ता खर्च २६६॥≡)। हुआ। प्रतिदिन प्रति विद्यार्थी औसत खर्च ६ पाई आता है।

पीने का पानी—बच्चों को पीने के लिए पानी रोज ताजा और छान कर घड़े में रखा गया। घड़े से पानी लेने के लिए डंडीवाला बर्तन रखा गया, जिससे घड़े में गिलास और हाथ डाल कर पानी न लेना पड़े और पानी साफ रह सके। बच्चों को पीने का पानी साफ रखने का ज्ञान हुआ तथा उनमें सफाई की आदत पड़ी। वर्षा के दिनों में पानी में लाल दवा डाली गयी।

शाला सफाई—शाला में आते ही बच्चे शाला की सफाई में मदद देते हैं। स्कूल और आहाता झाड़ू लगाकर साफ करना, कागज, कचरा आदि उठा लेना, टोकरी में कचरा भर कर गड्ढे में डालना—इन कार्यों को बच्चे स्वाभाविक तौर पर करने लगे हैं। चटाइयाँ बिछाना और स्कूल खतम होने पर उन्हें लपेट कर रखना तथा साधनों को व्यवस्थित रूप से रखना तथा व्यवस्थित रूप से काम करना—ये बातें बच्चों ने खुद कीं। हर शनिवार को स्कूल लीपने के काम में गोबर, मिट्टी, पानी आदि लाने में बच्चों ने मदद दी।

शरीर सफाई—पिछले वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष बच्चों के शरीर की सफाई में काफी सुधार हुआ। सब में साफ कौन है, इसकी रोज प्रतियोगिता रखी गयी। स्कूल में आने के पहले स्नान कराये तो बच्चे रोते हैं, बहुतेरे पालकों की ऐसी शिकायत रहती थी।

इस होड के कारण वह शिकायत कम हुई। हर रोज प्रार्थना के बाद सब बच्चे कतार में खड़े होते हैं। वे अपना सफाई-मंत्री चुनते हैं। जो साफ होगा वह सफाई मंत्री चुना जाता है। सफाई मंत्री सब बच्चों की सफाई देखता है। बच्चो के बाल, दाँत, नाक, आँख, और नाखून साफ न हों तो उन्हें घर पर या स्कूल में साफ करने की सूचना दी जाती है। सफाई मंत्री इसके लिए बच्चों को पानी, तेल, राख, तौलिये देता है। छोटे बच्चों की मदद करता है। सफाई को स्कूल के दैनिक कार्यक्रम में महत्त्व का स्थान दिया गया है जिससे बच्चो में सफाई की आदतें पड़ रही हैं और चमड़े की बीमारी में कमी हुई है।

कपड़ा सफाई—पहले बच्चों को घर से कपड़े साफ धोकर लाने की सूचना दी जाती थी और हफ्तेमें एक बार स्कूलमें कपड़े साफ कर लिये जाते थे। इस वर्ष इसके अलावा जो बच्चे स्कूल में मैले कपड़े पहन कर आते उनके कपड़े स्कूल में धोने का नियम रखा गया और उनको तब तक स्कूल के कपड़े पहनने को दिये गये। स्कूल मे जो कपड़े धोये गये उनके लिए साबुन का उपयोग किया गया।

सूत कताई—५ से ७ वर्ष के बच्चे कपास साफ करते हैं, सलाई-पटरी से ओटते हैं और तकली पर सूत कातते हैं। खेत मे जाकर एक बार बच्चो ने कपास की चुनाई भी की। इसमें उन्होंने कपास, चटायी, सलामी-पटरी, तकली, गत्ता, लपेटा, तराजू, बाँट—इन साधनो का उपयोग किया।

बागवानी—स्कूल के पीछे क्यारियाँ बनाकर बच्चों ने पौधे और शाकभाजी लगायी। जमीन खोदना, खाद देना, बीज रोपना और कंद लगाना, पानी देना, घास निकालना, पौधों की देखभाल

करना—ये सारे काम बच्चों ने किये। झारी से पानी देने में उनमें होड़ लगती थी। फूल देखकर उन्हें बड़ा आनंद होता था। बागबानी में बच्चों ने कुदाली, खुरपी, टोकरी, रस्सी, झारी—इन साधनों का उपयोग किया।

चित्रकला—इस वर्ष चित्रकला में अच्छी प्रगति दिखायी दी। खड़िया मिट्टी से काले तख्ते पर एक साथ मिलकर चित्र बनाना, खड़िया मिट्टी से खपड़े पर व्यक्तिगत चित्र खींचना और कूंची से रंग द्वारा कागज पर चित्र निकालना, इन तीन तरीक़ों से बच्चों ने काम किया। खड़िया और रंगों का ठीक उपयोग करना बच्चों ने सीखा। इनमें काला तख्ता, खड़िया, खपरैल, रंग, कागज, खजूर की कूंची, और कपड़ा—इन साधनों का उपयोग बच्चों ने किया।

मिट्टी का काम—मिट्टी से खेलने में बच्चों को स्वाभाविक रुचि होती है। इसलिए मिट्टी का काम उन्हें बहुत पसंद रहा। बच्चों ने खुरपी से मिट्टी ढीली की, कंकड़ और कचरा निकाल कर उसे साफ किया। कागज के टुकड़ों को सड़ा कर कूटा और मिट्टी में मिला कर मिट्टी तैयार की। बच्चों ने अपनी रुचि के अनुसार मिट्टी की चीजें बनायीं। खास कर गाय, बछवा, बैलगाड़ी, कौवा, चिड़या, साँप, बिच्छू, रसोई के घरेलू बर्तन और तरह तरह के घरेलू खाद्य पदार्थ मिट्टी से तैयार किये। मिट्टी का काम करते वक्त हथेली से ऊपर हाथ में तथा कपड़े में मिट्टी न लगे इसका बच्चों ने खयाल रखा। मिट्टी की चीजें सूखने पर उनसे खेलने में बच्चों को बड़ा आनन्द आया। इस काम में मिट्टी भिगोना, कंकड़ निकालना, कागज सड़ाना, कूटना तथा मिट्टी में मिलाना, गीले कपड़े से ढक कर मिट्टी गीली रखना आदि क्रियाओं का बच्चों को अभ्यास हुआ। उसके लिए

टोकरी, कागज, घमेला, पटिया, राख, पानी का वर्तन आदि साधनों का उन्होंने उपयोग किया।

शिक्षा के साधन—२॥ से ४ साल की उम्र के बच्चों ने खेल और शिक्षा के साधन के तौर पर नीचे लिखी चीजें इस्तेमाल कीं-खपरैल के टुकड़े, शंख, सींप, लकड़ी के गुटके, रीठा, गुंजा, महुआ बीज, बाघनख, लकड़ी की रंगीन तराजू आदि। रंग परिचय के लिए रंगीन थैलियाँ, मिट्टी के वर्तन, बैलगाडी, सरकंड, खजूर के पत्ते, वृत्ताकार, तिकोनी, और चौकोनी आकार के लकड़ी के टुकड़े आदि का उपयोग किया।

बच्चों ने 'बालपोला' का त्योहार मनाया। उन्होंने उसमें पालकों से १।~) चंदा प्राप्त किया। इस रकम से खिलौने खरीदे गये।

बच्चों को ये सब चीजें बहुत प्रिय हैं। वे उन्हें संभाल कर रखते हे। एक बच्चा दूसरे गाँव गया था, उस वक्त नदी से वे शंख और सींप लेकर आया और उन्हें स्कूल में दे दिया।

स्वावलम्बन—अधिकांश बच्चे अपना काम स्वयं कर लेते हैं। जो कर नहीं सकते उन्हें बड़े बच्चे मदद देते हैं। सैर के समय उनकी ओर देखने की जरूरत नहीं रहती; वे जिम्मेदारी से काम करते हैं।

सामाजिक आदतें—बच्चों का शाला का जीवन समाज जीवन ही है। स्कूल द्वारा उनमें नीचे लिखी सामाजिक आदतें डाली गयीं।

ठीक तरह से बैठना, समारोह तथा नाश्ता-भोजन और प्रार्थना में शांति से रहना, बड़ों को, गुरु को और मेहमानों को नमस्कार करना, किसी को गाली न देना, छोटों की मदद करना, नाश्ता तथा भोजन के प्रारंभ में मंत्र कहना, वर्ग नायक की आज्ञा पालन करना आदि।

भाषा—बच्चे अपना, पिता का और गाँव का नाम बता सकते हैं। प्रत्येक क्रियावाचक नये शब्द जैसे कपास साफ करना, ओटना, कातना आदि को वाक्य में उपयोग कर सकते हैं। ऋतु के अनुसार प्राकृतिक परिवर्तन और इसको दर्शानेवाले शब्द बच्चों को ज्ञात हुए।

पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के साथ इन छोटे बच्चों को भी बालगीत सिखाये गये। 'काय चाणूं आतां, लहानपण देगा देवा, अवताराचे काम, घरांवरीं बाप, मारो छे मोर, आला बघ नंदीबैल, मामाची संगीत गाड़ा, आमुची शाला—ये गीत मुख्य हैं।

कथाओं में मेंढक और बैल, मेंढकों का राजा, बूढ़ी माँ, तोता भाई, कछुआ और खरगोश, कौआ चिड़िया, खुश कौआ आदि कहानियाँ बतायीं।

गणित—खेल के साथ चीजें गिनना, बच्चों की संख्या गिनना, मतदान के समय काम, ज्यादा मतों को समझना, वजन और तराजू का उपयोग करना, हलके और भारी को पहचानना, त्रिकोण और वृत्त का ज्ञान, बच्चों की संख्या देखकर फल तथा दूध आदि परोसना—इतनी बातें बच्चे कर रहे हैं। खेल और कवायद के समय बच्चे अपनी गिनती स्वयं कर लेते हैं। ५ से ७ वर्ष उम्र के बच्चे २० तक गिनती गिन सकते हैं।

प्रकृति निरीक्षण—इसका तीन हिस्सों में वर्गीकरण होगा।

(१) ऋतु के अनुसार तेज धूप, कड़ा जाड़ा, घास के ऊपर पड़ी हुई ओस, बिजली का चमकना आदि प्राकृतिक बातों का बच्चों ने निरीक्षण किया तथा उनपर चर्चा की।

(२) सैर और बागवानी के समय, अलग अलग पौधों, लता और पेड़ों की पहचान हुई, उसके बारे में चर्चा हुई।

खास करके बरबड़ी के बगीचे में फूल, फल और तरकारीयों के के जो अलग अलग प्रकार देखे उसका बच्चों ने अच्छी तरह से निरीक्षण किया।

बागबानी के समय बच्चों ने फूल के पौधो को गोबर का खाद दिया। खाद मे अंकुर निकले हुए जवार, मक्का, तथा मूँग के जो बीज दिखे, उसे उन्होंने अपने मित्रों तथा शिक्षकों को दिखाये। बच्चो ने उन अंकुरों का निरीक्षण किया। अंकुर की जड़ नीचे, पिंड और पत्ते ऊपर निकलते हैं, इसका उन्हें ज्ञान हुआ। अंकुर निकले बीजो को उन्होंने खाद में से निकाल कर जमीन में लगाया तथा उसे सींचा।

बच्चों ने प्राणियों में मेंढक का संपूर्ण अवलोकन किया। वर्षा ऋतु में स्कूल के अहाते के एक गड्ढे में मेंढ़क ने अंडे दिये। उनसे निकले हुए मछली के आकार के मेंढकों को बच्चों ने पकड़े और उन्हें पानी में रखा। उनसे बने मेंढक के बच्चे तथा पूरे बढ़े हुए चितकबरे, सफेद, पीले आदि रंग के मेंढक उन्होंने देखे। बच्चो ने उनकी आवाज तथा कूदने की नकल की। स्कूल के पास एक पुरानी लकड़ी के पोले हिस्से में एक चुहिया और उसके सात बच्चे बालकों को दिखायी दिये। बालकों ने टोकरी में सूत की छीजन बिछा कर उन्हें रखा। टोकरी को स्कूल के एक कोने में, जहाँ अँधेरा था रख दिया। चुहिया वहाँ हमेशा रहती है, इसका बालको ने निरीक्षण किया।

खेल—स्थायी साधनो के खेलो को छोड़कर 'चुन चुन पोली', 'अधा-अधा पानी कित्ता'; डोंगड़ी तुम्ही गाय बेल खाते'—ये ग्रामीण खेल तथा 'आगगाड़ी', 'दोन बाजू किती बाजले' आदि अन्य खेल बच्चो को सिखाये गये। (खेलों के नाम मराठी हैं।)

बच्चों के कौतूहल का विषय

हवाई जहाज का निरीक्षण। बच्चों के लिए एक विशेष कौतूहल का विषय रहा कि स्कूल के ऊपर से रोज विमान जाता है। उसकी आवाज सुनते ही बच्चे बाहर निकल कर आकाश में देखने लगते हैं। हवाई जहाज बहुत ऊंचा उड़ रहा हो तो छोटा, कम ऊँचा हो तो उससे कुछ बड़ा, नजदीक हो तो काफी बड़ा, धूप हो तो चमकता हुआ दिखायी देता है और बादल हो तो अदृश्य रहता है—यह देख कर बच्चों को मजा आया। पानी बरसते वक्त हवाई जहाज कैसे उड़ता होगा—इस संबंध में बच्चे आपस में चर्चा करते हैं तथा शिक्षक से पूछ कर अपनी जिज्ञासा पूर्ण करते हैं।

सैर—इस साल पाँच वक्त सैर का कार्यक्रम रहा। सैर मुख्यतः जाड़े के मौसम में की गयीं। सैर को जाने के पहले शिक्षक सैर का स्थान पसंद करते। पीने के लिए अच्छा पानी, ठहरने के लिए छायादार पेड़ तथा खेलने के लिए खुली जगह है या नहीं—यह देख लेते। सैर का स्थान तीन मील के अन्दर चुना जाता है। सैर की सूचना बच्चों को पहले ही दी जाती है। बच्चे उस दिन सुबह उठ कर प्रातर्विधि से निपट कर स्नान और नाश्ता करके अपने भोजन के साथ स्कूल में एकत्र होते। सैर मंत्री आगे होता और उसके पीछे कतार में बच्चे चलते। अपना अपना भोजन तथा कटोरी बच्चे स्वयं सँभालते। बहुत ही छोटे बच्चों को बारी बारी से शिक्षकों को अपने कंधे पर उठा कर चलना पड़ता। दही का बर्तन, शाकभाजी, रस्सी और बाल्टी, पानी का डण्डी वाला बर्तन आदि वस्तु बच्चे बारी बारी से उठाते। स्थान पर पहुँचने पर सैर मंत्री स्थान-मालिक की

इजाजत लेता है और बाद में बच्चे अन्दर जाकर जगह को साफ करते, हाथ पैर धोकर प्रार्थना करते और भोजन की तैयारी करते। बच्चे अपनी अपनी भोजन की गठरी खोलते और कौन क्या भोजन लाया है, इसे सबको बताया जाता। बासी तथा सूखी जवार की रोटी, हरी मिर्च, तथा नमक से लेकर घी और गेहूं की रोटी तक भिन्न भिन्न पदार्थ बच्चों के भोजन में होता। स्कूल की ओर से सब बच्चों को दही, हरी भाजी, प्याज तथा धनिया दिया जाता। इस दिन दूध खर्च बंद रहता है। जिन बच्चों को जरूरत होती उन्हें रोटियाँ भी दी जातीं। भोजन के शुरू में मंत्र कहा जाता और श्लोक गाते हुए भोजन चलता। भोजन के बाद बच्चे अपनी कटोरी तथा भोजन का कपड़ा साफ करते। कुछ आराम के बाद पेड़ों पर चढ़ना और मनोरंजन का कार्यक्रम होता। गाने और कहानियाँ कही जातीं। बाद में आसपास के खेत तथा बगीचों का निरीक्षण कर वापस आकर बच्चे अपने अपने घर जाते।

इस वर्ष की सैर की तारीखें, ग्राम, अंतर तथा वहाँ जिन बातों का निरीक्षण किया उनका तफसील निम्न प्रकार से है—

२०-११-४७—बरूडा का बगीचा-तीन मील-बैंगन, मिर्च, पपीता, कूँआ, मोट।

३-१२-४७—बरबड़ी का बगीचा-दो मील-सब तरह के फूल के पौधे, फलों के पेड़, शाक भाजी तथा रहट।

२४-१२-४७—नांदोरा-दो मील-आम के पेड़, बंदर।

३१-१२-४७—करजी का खेत-एक मील-ज्वार, कपास तथा अरहर की फसल।

२१-१-४८—गाँव की बाड़ी—आध मील, शाक भाजी और गन्ने की फसल।

सैर में बच्चे अपना अपना खाना घर से लाते थे।

त्योहार और उत्सव—गाँव में तथा स्कूल में नीचे लिखे उत्सव व त्योहार मनाये गये—

१५ अगस्त, श्री भंसालीजी का स्वागत, गांधी जी का निधन दिवस, कस्तूरबा श्राद्ध दिन, बाल आरोग्य केन्द्र का वार्षिक उत्सव, बाल जीवन प्रदर्शनी, सहभोज, बाल स्नेह सम्मेलन, दही, हुरडा और मकर सक्रांति। इन सब में बच्चों ने हिस्सा लिया।

बाल पोला—'पोला' त्योहार में किसान अपने बैलों को सजा कर गाँव में घुमाते हैं। दूसरे दिन बच्चों का पोला होता है। उस दिन अपने लकड़ी के बैलों को सजाकर बच्चे स्कूल में एकत्र हुए। उन्होंने स्कूल के आहाते में तोरण बाँधा। वहाँ बैलों को खड़ा किया गया। पूजा होने के बाद उनका जुलूस निकाला गया। बच्चे जुलूस के साथ अपने अपने घर गये और उन्होंने अपनी माँ से बैलों की पूजा करायी तथा खिलौनों के लिए चंदा एकत्रित किया। इस अवसर पर मिट्टी के बैलों की एक प्रदर्शनी बच्चों ने स्कूल में किया।

गणेशोत्सव—बच्चों ने मिट्टी से गणेशजी की मूर्ति बनायी और स्कूल में उसकी स्थापना की। छः दिन गणेशजी के सामने पूजा, भजन आदि का कार्यक्रम। एक दिन सहभोज का कार्यक्रम रहा। उसके लिए बच्चों ने भोजन का सामान एकत्र किया। भोजन के लिए पालकों को भी निमन्त्रित किया गया था। बच्चों और पालकों का यह सहभोज बहुत अच्छा रहा।

बाल जीवन प्रदर्शनी—बच्चों के दैनिक जीवन से संबंधित वस्तुओं का संग्रह, बिना खर्च से बन सकें—ऐसे घरेलू खिलौने, बच्चों के मनोविकास तथा शिक्षा के साधन आदि की एक प्रदर्शनी स्कूल में रखी गयी। इस प्रदर्शनी से पालकों को बाल-शिक्षा के साधनों की कल्पना मिली।

बाल स्नेह सम्मेलन—दशहरे के दिन यह सम्मेलन किया गया, जिसमें बच्चों के साथ उनके संरक्षकों तथा मित्रों को भी निमंत्रित किया गया। सुबह गाँव में प्रभात फेरी निकाली गयी। स्कूल में प्रार्थना तथा बच्चों के खेल हुए। बच्चों को मिठाई बाँटी गयी।

मकर संक्रान्ति—इस त्योहार के दिन लड़कियों ने अपने पालकों को, विशेषतः अपनी माँ-बहनों को स्कूल में बुलाया तथा हलदी कुंकुम और तिलगुड का आदान-प्रदान किया।

दही हुरडा—बच्चों की सूचना के अनुसार स्कूल में 'दहीहुरडा' का कार्यक्रम था। बच्चे अपने अपने खेत से जवार के भुट्टे लाये। स्कूल में उनको भूना गया। बैंगन का भरता तथा दही के साथ बच्चों ने बड़े आनन्द के साथ भुना हुआ 'हुरडा' (हरे दाने) खाया। बच्चों के पालकों ने भुट्टे भून देने में शिक्षकों को मदद दी।

सहभोज—हफ्ते में एक दिन स्कूल में बच्चों का सहभोज रखा गया। बच्चे अपना भोजन घर से ले आते और सब मिल कर भोजन करते। बच्चे दो बार कच्चा सामान लाये। उनकी माताओं ने रसोई बनायी और और बच्चों को परोसा। बच्चों के बाप ने पानी लाने, बर्तन माँजने आदि कामों में मदद दी। सहभोज के जरिये बच्चों में भ्रातृत्व की भावना का विकास करने की दृष्टि रखी गयी है।

स्कूल का बजट—दर्ज संख्या औसत ४५·७, हाजरी ३१·४, नाश्ता हाजरी ३६·३, पढ़ाई के दिन २३३।

दूध	२५४॥–)॥	सरंजाम मरम्मत	२५–)॥
फल, हरीभाजी, नीरा आदि	१२॥–)॥	स्टेशनरी	२॥=)
नारियल का तेल	२।)	शिक्षक वेतन	६००)
साबुन	॥–)॥		

कुल ८६७।) रुपये

यहाँ जो नाश्ता दूध और भोजन के साथ हरी भाजी, टमाटर, गाजर, प्याज, धनिया या फल के लिए रूपये दिया जाता है उसके बारे में थोड़ा स्पष्टीकरण करना जरूरी है—

देहातियों के भोजन में समतोल आहार की दृष्टिसे फल, या हरी भाजी मिलना आवश्यक है। लेकिन ज्यादातर लोगों को वह नहीं मिलती। खास करके बच्चों को तो वह मिलना आवश्यक है ही। इस भोजन पूर्ति का जब तक हल नहीं होता तब तक बच्चो के समग्र विकास की हमारी बात अधुरी रह जाती है। चाहे वह घर से पूरी हो या स्कूल से—इसी उद्देश्य को सामने रख कर हमने बच्चों को नाश्ता दिया।

वस्तुतः दूध का पूरा खर्च गॉव वालों को करना चाहिये। हम लोगों को थोड़ा समझायें और लोग समझें तो उनके लिए यह कठिन नहीं होता। आर्थिक दृष्टि से सेवाग्राम खूब गिरी हुई बस्ती है। यहाँ के देवस्थान के नाम गाय थी। उसे पंच लोगों ने इस साल बच्चों के दूध के प्रबंध के लिए शाला को सुपूर्द कर दी। इससे दूध खर्च में मदद पहुँची। वैसे ही अन्य दो परिवार वालों ने दो गौवें, एक गाँव के और दूसरी नजदीक के ही देहात के ब्राह्मण को दान के रूप में भेंट दी। अगर वे दोनों परिवार वाले हमारे बालगोपाल की जरूरतों को समझते तो साल भर के दूध के खर्च का सवाल हल हो जाता। इस तरह जरूरत के मुताबिक़ स्कूल को गाय मिले, शाला की ओर से उसका पालन हो, गाँव वाले कर्तव्य के रूप में उसके चारे दाने का प्रबंध करें तो गाँव के बच्चों के दूध का बड़े से बड़ा सवाल हल हो जायगा। मुझे आशा है यदि दूसरे देहातों में इनके बारे में थोड़ी कोशसि की जायतो बच्चों के शरीर विकास और आरोग्य वर्धन मे काफी तेजी से परिवर्तन होगा।

परिशिष्ट
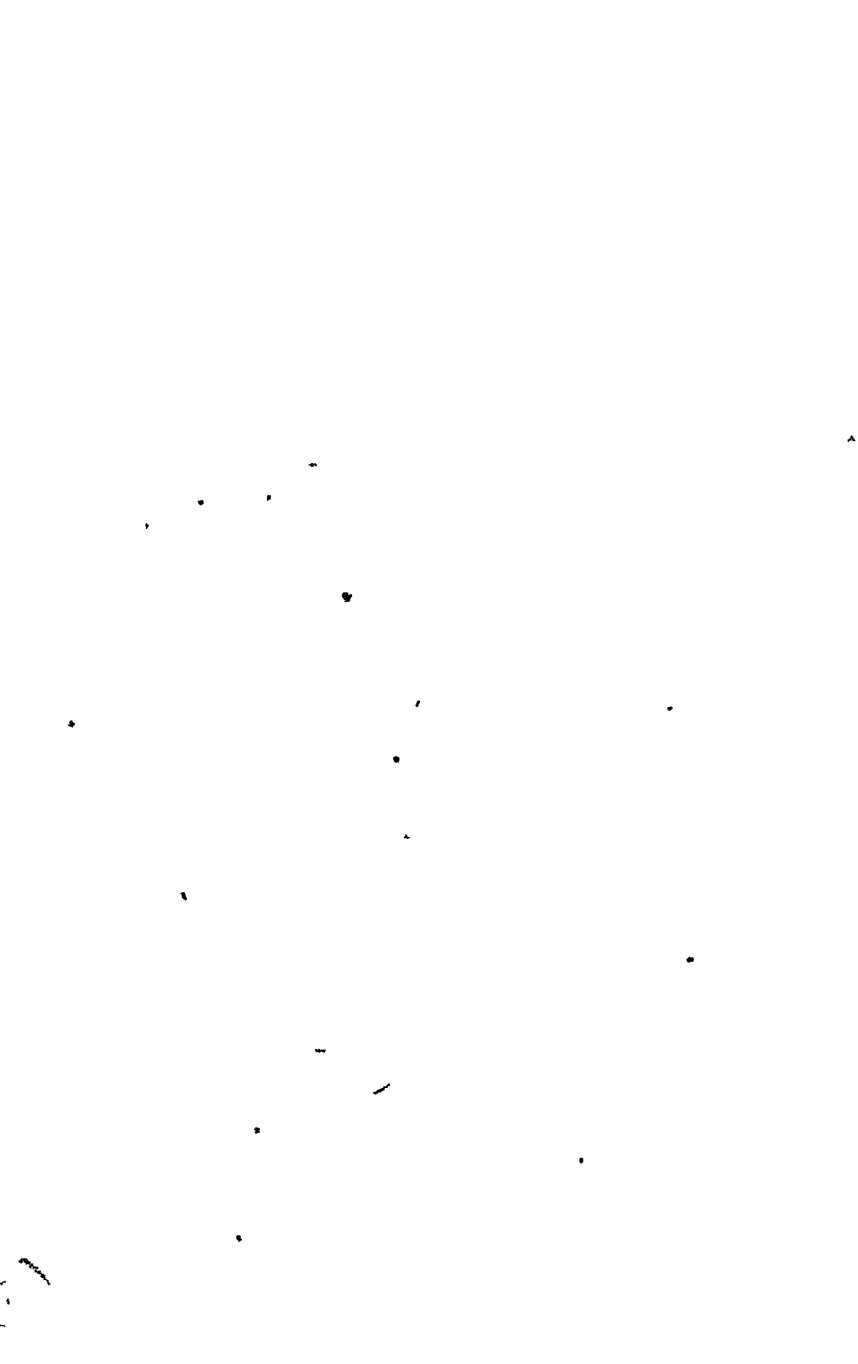
पालकों के शिक्षक बालक

क्रम	बालक का नाम	उम्र	पालकों से बालकों का संवाद	प्रसंग
१	नारायण	४॥	दादी मुझे टट्टी के लिए दूर ले चलो।	दादी सवेरे टट्टी घर के पास ही बैठना चाहती है।
२	परशुराम	४।	माँ मुझे नहला दे।	माँ कहती है बच्चा रोज नहलाने को तंग करता है।
३	रुखमा	४।	माँ मेरे बाल बना दे।	माँ का कहना है कि रोज बाल बनाने को तंग करती है।
४	ज्ञानराव	४॥।	पिता जी मेरे बाल बिल्कुल काट दो।	पिता अंग्रेजी बाल रखवाना चाहता है।
५	विजय	४।	पिता मेरा नाम स्कूल में लिखा दो।	इच्छा न होने पर भी बच्चे की जिद पर दाखिल कराया।
६	प्रभाकर	५	माँ मेरे कपड़े धो दो।	बच्चा कपड़े धोने को रोता है।
७	सुशीला	३।	माँ मुझे स्कूल पहुंचा दे।	माँ और दादी के स्कूल पहुंचाने को तंग करती है।
८	सब बच्चे	—	हम तुम्हारे न लेंगे।	तुम्हारे बाहर से [illegible] और जल्दी टूटते हैं। टूटने [illegible] गले में फंस जाते हैं।

बच्चे का घर

नाम—अनुसूइया तुकाराम—उम्र ८॥ वर्ष

७७६ चौकोर फुट की झोपड़ी है। दीवाल टाटी की है। छत खपरेल की, और दरवाजा एक है। रसोई घर, कोठार, तथा सोने की जगह, सब इसी में है। स्नान के लिए आंगन में पत्थर और गन्दा पानी निकालने के लिए सोख पिट्स है। घर लीप पोत कर, साफ रखते हैं। घर के दोनों तरफ खुली जगह है औरहवा तथा प्रकाश भर पूर है। मुर्गी रखने का झावा भी है। घर में तीन आदमी हैं—माँ, बाप और लड़की। बाप आश्रम में काम करने जाता है। माँ आश्रम में काम पर जाती है। शाम को ९ से सवेरे ८ बजे तक और दिन में १२ से २ बजे तक घर में रहते हैं। माँ-बाप, दोनों मजदूर हैं।

खुराक—जवारी की रोटी, दाल, भाजी और अलसी का तेल

बच्चों की तालीम और सयानों की तालीम

बच्चा चलने फिरने लगता है तो पूर्व बुनियादी शाला में जाना शुरू होता है। तब से पूर्व बुनियादी शाला के शिक्षक और बच्चे के माँ-बाप, दोनों के सहयोग से ही उसका विकास हो सकता है। इसमें बच्चों और बड़ों की तालीम साथ साथ चलती है।

शिक्षक का समय बच्चों के घर और शाला में बँटा रहता है।

बाल शिक्षा के साथ प्रौढ़ शिक्षा

शिक्षक के लिए बच्चा ही प्रौढ़ शिक्षा की कुँजी है। नीचे लिखी बातों पर बच्चों के द्वारा उनके माँ-बाप से मुझे चर्चा करने और साथ काम करके सीखने का मौका मिला।

१ सफाईः—

(अ) निजी सफाई—बच्चों को समय पर पाखाने भेजना, हाथ, पैर, मुँह धोना, दांत साफ करना; अन्य अंगों की सफाई, कपड़े सफाई की जरूरत, सादे देहाती साधनों का उपयोग।

(आ) आम सफाई—घर, कुआँ और इर्दगिर्द की सफाई।

२ स्वास्थ्यः—बच्चों की मामूली और छुआछूत की बीमारियाँ, घरेलू दवाइयाँ, दवाखाने में इलाज और जांच।

३ खाना-पीना—बच्चे के लिए जरूरी खूराक, कितनी बार भोजन देना, भोजन सफाई, साफ पानी, बीमारियों मे क्या देना और किस चीज से बचाना।

४ कपड़ाः—कपड़े की जरूरत। खादी ही क्यों? बच्चों की मार्फत घर में चर्खा और खादी का प्रवेश।

५—स्कूल भेजनाः—नियमित रूप से स्कूल भेजना। [illegible]

इस काम के लिए रोज सुबह स्कूल के समय से पहले एक घंटा दिया गया। शिक्षक का सच्चा समाज-शिक्षण इसी समय होता है।

बच्चों का स्कूल

बच्चों का स्कूल जुलाई '४५ में बनवाया गया। शिक्षक और बच्चों ने जितनी हो सकी मदद की।

मुख्य भागः—खेत की खुली जगह १८'×१४'
साधनों की जगह १०'×५'
सफाई की जगह व बगीचा १८'×१२

पैखाना, पेशाब घर, खेल का मैदान और खुली जगह आदि खेत के साधन बाहर हैं। दीवाल चटाई की, ५ फुट पर

बाँस की जाली है। छत खपरैल की है। बांस व चटाई की ५ खिड़कियाँ हैं।

फर्श कच्चा है। केवल रसोई और पानी की जगह पत्थर की है। सामान रखने के लिए बांस की चांड़।

३७२ रुपये खर्च हुए हैं।

यह आदर्श मकान नहीं है; परिस्थिति के कारण काम चलाने की दृष्टि से इसे बनाना पड़ा। आदर्श स्कूल में २० बच्चों के पीछे ५०० से ७५० चौकोर फुट जगह चाहिये।

प्रगति पत्र का नमूना

नाम..................उम्र................

हाजरी.........सामान्य आरोग्य और

शारिरीक हलचल—शरीर विकास-वजन जुलाई ४७ से मार्च ४८ तक.......पौण्ड बढ़ा।

.......इंच ऊँचाई बढ़ी।...इंच छाती बढ़ी।

आरोग्य—पहले की शिकायत थी। अब अच्छा है। फरवरी माह में बुखार आया था।

रोग निवारण के लिए अगस्त ४७ हैजा का और फरवरी ४८ चेचक का टीका दिया गया। आँखो में दवा डाली गयी।

साधन—कमरे में रखे साधनों की पुरी जानकारी है। उपयोग करना जानता है।

विपय ज्ञान—

भापा—आत्म प्रकटन के लिए शब्द का ठीक उपयोग करना जानता है। शब्द संग्रह बढ़ा। गाने गाता है। कहानी कहता है।

गणित—उम्र के अनुसार जीवन में जरूरी गणित का ज्ञान है। छोटा, बड़ा, लंबा, चौड़ा, हलका, भारी, कम, अधिक, ऊंचा; और आकार का ज्ञान है। ३० तक बच्चे या चीजें गिन लेता है।

क्रिया ज्ञान—शरीर सफाई, कपड़े की सफाई, शाला सफाई—इन क्रियाओं का ज्ञान है। कपास साफ करना, सलाई पटरी से ओटाई करना और तकली पर कातना जानता है। बगीचे के काम में कुदाली और खुरपी का ठीक उपयोग करता है।

सब क्रिया और उसके साधन के उपयोग का निरीक्षण करता है। स्पर्श से उसे समझता है और आत्म प्रकटन के साथ प्रत्येक क्रिया करता है।

कला—हस्त कौशल्य—चित्र बनाना—रंग और कूंची से कागज़ पर चित्र बनाता है, मिट्टी तैयार करके चीजें बनाता है।

संगीत—गाना सुनना पसंद करता है। ताल ज्ञान है। सादे भजन सुर से गा सकता है।

विशेष—समाज और सृष्टि विषयक—समाज में किस तरह से रहना चाहिये, इसे समझता है। बड़ों का आदर करना जानता है।

सृष्टि विषयक परिवर्तनों को समझने की जिज्ञासा है।

बौद्धिक विकास—

एकाग्रता है। जिज्ञासा वृत्ति जागृति है। काम करने का महत्व जानता है। काम कि रुचि है। आकलन शक्ति बढ़ी। स्मरण शक्ति बढ़ी। मनन शक्ति का विकास हुआ।

सर्वांगीण विकास—

आदतें—शारीरिक—शरीर सफाई और कपड़े की सफाई में अभी जितनी चाहिये उतनी प्रगति नहीं है। माँ-बाप का इस तरफ ध्यान नहीं रहा।

बौद्धिक—और मानसिक—

निरीक्षण शक्ति; कल्पना शक्ति, आत्म प्रकटन शक्ति; चपलता, उत्साह और आज्ञा पालन, आदतों के साथ विकास हुआ।

सामाजिक व्यवहार और सभ्यता—अच्छी है।

खास बात—ओटाई, चित्रकला, बागवानी, एकाग्रता से करता है। सरदार बनने की वृत्ति है।

खेल में विध्वंसक वृत्ति नहीं है। दूसरों के साथ मिलकर काम करने और खेलने की वृत्ति है। स्पष्ट वक्ता है। गम्भीर है।

पूर्व-बुनियादी तालीम समिति

का

विवरण

जनवरी १९४५ में सेवाग्राम में राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन के अवसर पर गांधीजी ने कहा थाः–

"अब हमारा क्षेत्र सिर्फ सात से चौदह साल के बालकों का ही नहीं है, बल्कि माँ के पेट में पैदा होते हैं वहाँ तक, हमारा अर्थात् नई तालीम का क्षेत्र है।"

गांधीजी की रहनुमाई के मुताबिक इस सम्मेलन की एक खास बैठक में सात साल से छोटे बच्चों की तालीम कैसी हो, इसपर बहस हुई और इस बहस के नतीजे के रूप में नीचे लिखा ठहराव पास किया गया–

"इस सम्मेलन की यह राय है कि चूंकि बुनियादी तालीम के काम के पाँच साल पूरे हुए हैं इसलिए यह मुनासिब है कि अब इस मुल्क के सात साल से छोटे बच्चों की तालीम का काम भी हाथ में लिया जाय। सम्मेलन यह सिफारिश करता है कि हिन्दुस्तानी तालीमी संघ एक समिति मुकर्रर करे जो बुनियादी तालीम से पहले की तालीम की योजना तैयार करे। यह योजना बुनियादी तालीम के लिए नींव का काम देगी।"

इस ठहराव के बमूजिब संघ ने अपनी २६-३-४५ की बैठक में अपने उद्देश्यों के मुताबिक बच्चों की तालीम की एक योजना

तैयार करने के लिए नीचे लिखे सदस्यों की एक समिति (कमेटी) मुकर्रर की:—

१—श्रीमती सरलाबेन साराभाई, अध्यक्ष, 'नूतन बाल शिक्षण संघ', अहमदाबाद।

२—श्रीमती ताराबेन मोक, मंत्री, 'नूतन बाल शिक्षण संघ', शिशु-विहार; बम्बई।

३—श्रीमती मृदुलाबेन साराभाई, बम्बई।

३—श्रीमती मालती केलकर, प्रिंसपल मांटसुरी स्कूल-राजघाट, काशी।

५—श्रीमती शान्ता नारूलकर, हिंदुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम, वर्धा।

६—डा० सईद अंसारी, प्रिंसपल, टीचर्स ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूट, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, जामियानगर, दिल्ली।

७—डा० वी० एन० शर्मा, पी० एच० डी०, प्रिंसपल, चिल्डिरेन्स गार्ड स्कूल, मैलापुर, मद्रास।

८—श्री रामकृष्ण 'खद्दर' जी, डायरेक्टर ऑफ चाइल्ड एज्यूकेशन सोसाइटी, करोलबाग, दिल्ली।

९—श्री जुगतराम दवे, वेडछी आश्रम, पो० वालोद, जि० सूरत (गुजरात)

१० डा० सुखेनलाल ब्रह्मचारी, पी० एच० डी० (लंदन), विश्वभारती, शान्तिनिकेतन (बंगाल)

११—श्रीमती आशादेवी, सहायक मंत्राणी, हिंदुस्तानी तालिमी संघ, सेवाग्राम, वर्धा।

श्रीमती सरलाबेन इस कमेटी की अध्यक्ष और श्रीमती आशादेवी संयोजिका चुनी गयीं।

इस कमेटी की बैठकें हुईं। उसकी तरफ से बच्चों की

तालीम के बारे में नीचे लिखी सिफारिशें तालीमी संघ के सामने पेश की गयीं :—

नाम—सात साल से छोटे बच्चों की तालीम का नाम "बच्चों की तालीम" और उनके मदरसे का नाम "बच्चों का घर" होना चाहिये।

ध्येय और मर्यादा—हिंदुस्तान के सात साल से छोटे सब बच्चों का सर्वांगीण विकास और नई तालीम के आदर्शों के मुताबिक नए समाज की रचना में जिम्मेदारी लेने की पहली तैयारी—बच्चों की तालीम का आखरी ध्येय है।

हिंदुस्तान की ज्यादातर जनता देहातों में रहती है और आज तक सात से कम उम्र वाले बच्चों की तालीम का काम इन देहाती क्षेत्रों में बिल्कुल नहीं के बराबर हुआ है—इस हक़ीक़त के सामने रखकर कमेटी यह सिफारिश करती है कि तालीमी संघ फिलहाल देहाती बच्चों की तालीम तक ही अपना क्षेत्र सीमित रखे।

रचनात्मक कार्यक्रम में बच्चों की तालीम का स्थान—

समिति की राय थी कि चूंकि पहले सात साल का समय बच्चे की ज़िंदगी का सबसे अधिक नाज़ुक और असर डालने वाला वक़्त होता है और चूंकि इस अर्से में उनमें जो आदतें और प्रवृत्तियाँ पैदा होती हैं, बच्चे के और साथ ही साथ राष्ट्र के भावी जीवन पर उनकी गहरी छाप पड़ती है, इसलिए रचनात्मक कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए इस उम्र के बच्चों की तालीमको हाथ में लेना जरूरी है। बच्चे की ज़िंदगी में, पहले सात साल में, उनके सर्वांगीण विकास के लिए जितनी मेहनत, जितने पैसे और जितनी शक्ति खर्च करेंगे उतनी ही राष्ट्र की उन्नति होगी, क्योंकि बुनियाद पक्की हो जाने से उसपर जो इमारत खड़ी

करेंगे वह पक्की होगी। और, इस उम्र की तालीम की ओर अगर हम अभी पूरा-पूरा ध्यान नहीं देंगे तो आगे चलकर अपने राष्ट्रीय ध्येय को पूरा करने के लिए हमें दुगुना पैसा, शक्ति और मेहनत खर्च करनी पड़ेगी।

इसलिए यह कमेटी रचनात्मक कार्यक्रम की सभी संस्थाओं और कार्यकर्ताओं से यह अनुरोध करती है कि छोटे बच्चों की वे तालीम को भी अपने कार्यक्रम का एक अंग समझें।

सयानों की तालीम और बच्चों की तालीम का परस्पर संबंध—

समिति की राय यह रही कि बच्चों की तालीम का सवाल तो असल में सयानों की तालीम का ही एक सवाल है। आज की हालत में वह समाज और राष्ट्र की जिम्मेदारी भले ही हो पर हमारा आखिरी मकसद यह होना चाहिए कि बच्चों के माँ-बाप ही बच्चों के पालन-पोषण और उनकी तालीम या विकास के बुनियादी उसूलों को समझें और बुद्धि-पूर्वक बच्चों की देख-भाल कर सकें।

इसलिए बच्चों की तालीम और सयानों की तालीम की योजना एक दूसरे की पूरक होनी चाहिए। सयानों की तालीम में यह सिखाया जाय कि छोटे बच्चों की देख-भाल किस तरह की जाय और उनकी सही तालीम क्या है। साथ ही साथ बच्चों के मदरसों का इंतजाम ऐसा हो कि बच्चों के माँ-बाप हमेशा वहाँ के काम देख सकें और फुरसत मिले तो उनके काम में हिस्सा ले सकें और कुछ सीख भी सकें।

बच्चों की तालीम का कार्यक्रम

काम कैसे शुरू करें—बच्चों की तालीम का काम शुरू करने के लिए सबसे अच्छा केन्द्र वह होगा जहाँ आज नई तालीम का

समग्र कार्य (यानी बुनियादी, बुनियादी तालीम से आगे की और सयानों की तालीम का काम) चल रहा है। ऐसे केन्द्रों में नई तालीम का हरेक काम एक दूसरे का पूरक और सहायक होगा। वातावरण सबके अनुकूल रहेगा। कम कार्यकर्त्ताओं से ज्यादा काम होगा पैसे और शक्ति का खर्च कम रहेगा। जगह भी कम लगेगी।

फिर भी जहाँ इस तरह की सहूलियतें नहीं होंगी वहाँ भी उत्साही कार्यकर्त्ता बच्चों की तालीम से ही नई तालीम का काम शुरू कर सकते हैं लेकिन इसके लिए उनमें इतनी दृढ़ शक्ति और आत्मविश्वास हो कि वे उसी गाँव से, जहाँ वे रहें, इस काम के लिए ज़रूरी साधन और मददगार ढूँढ़ निकालें।

जगह कैसी हो—जहाँ तक हो सके बच्चों के स्कूल बच्चों के घरों से इतने नज़दीक हों कि बच्चे और उनके माँ-बाप आसानी से आ-जा सकें। जगह खुली और स्वास्थ्यकर हो। अगर बच्चों के घरों के नजदीक स्वास्थ्यप्रद खुली जगह न मिले तो थोड़ी दूर रखने में हर्ज नहीं। इसलिए बच्चों की तालीम की जगह के चुनाव में पहला खयाल तन्दुरुस्ती का हो। बच्चों के खेल, बागबानी आदि प्रवृत्तियों के लिए काफी खुली जगह हो। सफाई के लिए पास में ही पानी का प्रबंध हो। बच्चों के खाने में जो कमियाँ रहती हैं उन्हें पूरा करने के लिए कम से कम एक बार का खाना उनको स्कूल में दिया जाए और साफ पीने के पानी का इंतज़ाम हो। बच्चों की मामूली बीमारियों के इलाज के लिए शिक्षक के पास ज्ञान और साधन हों और बीच-बीच में या जरूरत पड़ने पर डाक्टर की मदद भी मिल सके ऐसी व्यवस्था हो।

बच्चों की तालीम में सब काम शिक्षक और विद्यार्थी ही मिलकर करें। स्वयंसेवक या स्वयंसेविकाओं की मदद ली जा सकती है; लेकिन किसी काम के लिए न तो नौकर रखे जायँ और न पाखाना-सफाई के लिए ही भंगियों का उपयोग किया जाय।

मकान कैसे हों—छोटे बच्चों की तालीम के लिए पक्के मकानों की जरूरत नहीं, क्योंकि उनका वक्त तो ज्यादातर खुली हवा में बीतेगा। घर देहाती नमूने के हों, हल्के और सादे हों, लेकिन उनमें काफी रोशनी और हवा आ सके, इनका इंतजाम हो। बारिश के महीनों में बच्चे चार दीवारों के अन्दर सुरक्षित होकर काम कर सकें इतनी जगह चाहिए। जिस कोने में रसोईघर, दवाखाना और काम करने और खेलने के सामान रहें, वह थोड़ा पक्का करके बाँधना पड़ेगा।

कितने बच्चे हों—छोटे बच्चों का स्कूल छोटा होना चाहिए ताकि बच्चों को घर-जैसा आराम हो। एक शिक्षक ज्यादा से ज्यादा बीस बच्चों को सँभाले। लेकिन अगर मददगार-स्वयंसेवक मिले तो वह और बच्चों की जिम्मेदारी ले सकता है।

शिक्षा के साधन—छोटे बच्चों की तालीम के लिए जरूरी साधनों के बारे में कुछ गहराई से विचार करने की जरूरत है। बच्चों के समग्र विकास की प्रवृत्तियों के लिए जरूरी साधन का पूरा इंतजाम होना ही चाहिए लेकिन इसके लिए हमें अपने नीचे लिखे बुनियादी उसूल हमेशा ध्यान में रखना होगा—

सबसे पहली बात ख्याल में रखने की यह है कि जो भी साधन बच्चों के हाथ में दिए जायें वे सचमुच उनकी जरूरतों को समझकर हमारी ही खोज और तजवीज से तैयार की हुई

चीजें हों। वह किसी दूसरे वातावरण और किसी दूसरे समाज के बच्चों के लिए उपयुक्त चीजों की नक़ल न हो।

दूसरी बात यह है कि जो भी साधन काम में लाये जाय उन्हें शिक्षक उसी गाँव के कारीगरों की मदद से देहात में पाये जानेवाले सामान से तैयार करे। शायद किसी बड़े केन्द्रीय कारखाने में पहले दर्जे के कारीगरों से बनाई हुई एक नमूने की चीजें पैसे के खयाल से कुछ सस्ती भले ही पड़ें, लेकिन तालीम की दृष्टि से देखा जाय तो उन्हें खुद बनाने से देहाती कारीगर और शिक्षक, दोनों को अपनी बुद्धि से नई ईजादें करने में मदद मिलेगी और उनकी कारीगरी का भी विकास होगा। इस तरह ये चीजें सयानों की तालीम में मदद पहुँचाने का जरिया भी बनेंगी।

हमें एक बात और याद रखनी है। वह यह है कि जो भी साधन बच्चों के हाथ में दिए जायँ वे सचमुच उनके विकास में सहायक हों। यह बात सभी मानते हैं कि बच्चे के हाथ में ज्यादा साधन या सुसंपूर्ण साधन देने से बच्चों की कल्पना-शक्ति और सृजन-शक्ति का विकास नहीं होता। इसलिए बच्चों के काम या खेल के लिए जो साधन दिये जायँ उनमें कुछ न कुछ करने को ज़रूर बाकी रहे जिसे बच्चा अपनी कल्पना से पूरा करे। सबसे अच्छा तो यह होगा कि अपने काम और खेल के साधन बनाने में बच्चे भी अपनी शक्ति के अनुसार हिस्सा लें।

बच्चों की तालीम का विषय

शारीरिक विकास—बच्चों की तालीम में सबसे पहला और सबसे ज़रूरी पहलू है उनके शरीर का पर्याप्त विकास। इसमें बच्चों के लिए कैसी और कितनी खुराक चाहिए, खाने का ढंग

समय क्या है, दो भोजन के बीच में कितना अन्तर चाहिए, खाने का हाज़मा, शरीर की हलचल और आराम, बीमारियों से बचने के उपाय और मामूली बीमारियों के इलाज, शरीर और कपड़ों की सफाई—ये सब बातें आ जाती हैं। आदर्श समाज में तो यह काम घर का ही होगा। लेकिन हिंदुस्तान की मौजूदा हालत में यह बच्चों की तालीम का एक जरूरी हिस्सा हो जाता है।

हमारे बच्चों के खाने में उन जरूरी तत्त्वों की बड़ी कमी है जो उनके शरीर के विकास के लिए जरूरी हैं। इस कमी को पूरा करने के लिए बच्चों को मदरसे में ही एक या अधिक समय भोजन या नाश्ता देने का इंतजाम होना जरूरी है। बच्चों को काफी पानी पीने की आदत भी डालनी चाहिये।

मदरसों में बच्चों को जो खूराक दी जाये वह सिर्फ उनके पोषण के लिए न हो बल्कि यह उनकी सामाजिक तालीम और बुद्धि के विकास का भी जरिया बने। इसके साथ-साथ उन्हें भोजन के द्वारा सदाचार, सफाई, तंदुरुस्ती की तालीम दी जा सकेगी, भाषा और सादे ज़बानी हिसाब भी सिखाये जा सकेंगे।

तंदुरुस्ती—बच्चों की तालीम का एक और बड़ा हिस्सा है उनकी-तंदुरुस्ती। जिस गाँव में बच्चों की देख-भाल के लिए कोई संस्था काम करती हो वहाँ तो मदरसों का काम आसान रहेगा। वहाँ शिक्षक का काम इतना रहेगा कि जिन बच्चों के इलाज की जरूरत हो उन्हें केन्द्र में भेजना और देखना कि इलाज स्कूल में और घर में भी जारी है, लेकिन ज्यादातर गाँवों में ऐसा कोई इंतजाम नहीं रहता; मदरसों को ही बच्चों की तंदुरुस्ती की जिम्मेदारी उठानी होगी।

इसलिए बच्चों की मामूली शिकायतों का इलाज करने के लिए जरूरी साधन और जानकारी शिक्षकों के पास होनी चाहिए। उनको इतना ज्ञान होना चाहिए कि वे छूत की बीमारियाँ और खाने की कमी से या गलत खूराक से जो बीमारियाँ होती हैं उन्हें पहचान सकें।

मदरसों में बच्चों का नियमित वजन लेने का भी इंतजाम होना चाहिए। थोड़ी जरूरी दवाएँ और कुछ अतिरिक्त खुराक भी रहे। बीच-बीच में कोई डाक्टर स्कूल के बच्चों की तंदुरुस्ती की निगरानी करे और जरूरत होने पर बच्चों का बाकायदा इलाज हो सके, इसका भी प्रबंध हो।

सफाई—बच्चों की तालीम में सफाई का बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है। शरीर की सफाई, कपड़ों की सफाई, उपयोग की चीजों और खेल के समान की और अपने आसपास की सफाई रखने की आदत बच्चों में पहले दिन से ही डालने की कोशिश की जाय।

स्वावलंबन—बच्चों के शरीर के विकास, तंदुरुस्ती और सफाई की तालीम के साथ-साथ उन्हें स्वावलंबन की तालीम देना है, यानी उन्हें अपना काम—जैसे कपड़े धोना, नहाना, बाल सँवारना, दाँत साफ करना, कपड़े पहनना वगैरह—खुद करना सीखना है। इससे बच्चों की इन्द्रियों और स्नायुओं का विकास होगा। उन्हें तंदुरुस्ती के नियमों का अनुभव होगा और उनमें स्वतंत्रता की भावना पैदा होगी।

सामाजिक तालीम—हरेक बच्चा समाज का अंग है और वह राष्ट्र का एक भावी नागरिक है इसलिए उस-

जिक तालीम या नागरिकता का भी नई तालीम में एक बहुत बड़ा हिस्सा है। इसमें खाना-पीना, उठना, बैठना, सोना, खेलना पाखाना-पेशाब को जाना आदि विषयों में सदाचार के नियमों को सीखना, आपस में, बड़ों के साथ, अथितियों के साथ व्यवहार, अपने से छोटों की देख-भाल, उत्सव त्योहार मनाना और सामाजिक, राष्ट्रीय कार्यों में शक्ति के अनुसार मदद करना—ये सारी बातें रहेंगी।

काम या खेल—काम या खेल बच्चों के विकास का सबसे कारगर साधन है और उनकी तालीम के कार्यक्रम में उसका मुख्य स्थान रहेगा। यहाँ यह कहने की जरूरत नहीं कि बच्चों के जीवन में काम और खेल में कोई अंतर नहीं है। शिक्षक का काम है कि वह ऐसा काम या खेल चुने जिसमें उनके विकास की सबसे अधिक संभावनाएँ हों।

आज तक हमने यह प्रयोग करके नहीं देखा है कि एक मामूली देहात में या देहाती घर में जो प्रवृत्तियाँ और उद्योग धंधे चलते हैं उनमें से कौन-कौन काम छोटे बच्चों के सर्वांगीण विकास के साधन बन सकते हैं। यह प्रयोग अभी हमें करना है। प्रयोग शुरू करने के लिए नीचे काम सुझाए जाते हैं:—

(१) घर का काम—झाड़ू लगाना, कपड़े धोना, खाना बनाने में मदद करना वगैरह।
(२) सफाई का काम।
(३) खेती-बागबानी।
(४) कताई-बुनाई का काम।

इसके अलावा गाँव में चलने वाले दूसरे उद्योग धंधे—जैसे बढ़ई का काम, लोहार का काम, घर बनाना, चटाइयाँ बनाना,

रस्सी बनाना, ईंटे बनाना, खपरैल बनाना और पकाना—इनमें से भी कुछ काम बच्चों की शिक्षा के साधन बन सकते हैं।

भाषा—बच्चों की शिक्षा में उच्चारण की स्पष्टता और शुद्धता, शब्दों का संग्रह बढ़ाना, अपने विचारों को साफ और पूरा-पूरा व्यक्त करना, अपने भाव प्रकट करने में कविता, गीत कहानियाँ कहने और सुनने में आनन्द लेना—ये बातें आ जाती हैं। इसके लिए भाषा का बाक़ायदा वर्ग नहीं चलाना है, बल्कि वह स्कूल में उनके रोजमर्रा के काम और खेल के जरिए और कहानियाँ, गीत या कविताएं और नाटक, जिन्हें बच्चे और शिक्षक स्वयं तैयार करें, उनके जरिए स्वाभाविक तौर से होनी चाहिए। लिखने-पढ़ने की तालीम तभी शुरू की जाय जब बच्चे खुद उसकी ज़रूरत महसूस करें।

गणित—बच्चों में गणित-बोध (Mathematical Sense) पैदा करना भी तालीम का एक मक़सद है। उनके रोजाना के काम और खेल के सिलसिले में गिनना, जोड़ना, घटाना, गुणा-भाग, नाप-तोल आदि हिसाब के जितने काम आ जाते हैं उनका ठीक-ठीक उपयोग कराना और ऐसे मौक़े पैदा करने के लिए काम और खेल सोचकर निकालने चाहिए। नाप-तोल का अंदाज बढ़ाने के लिए उन्हें काफी मौक़ा देना चाहिए। उनके आसपास की वस्तुओं से भौमितिक (ज्यामेट्री के) आकारों (शकलों) के परिचय की नींव डाली जा सकती है।

विज्ञान—इसी तरह बच्चों में वैज्ञानिक मनोवृत्ति पैदा करना भी तालीम का एक अंग है। इसके लिए देहात का जीवन एक बहुत अनुकूल क्षेत्र है। शिक्षक को चाहिए कि आसपास की

खेती, जानवर और चिड़ियों के जीवन से फायदा उठाकर बच्चों में जिज्ञासा-वृत्ति, पर्यवेक्षण की शक्ति और प्रयोग की आदत पैदा करे।

कला—इस उम्र के बच्चों के लिए सबसे ज्यादा ध्यान आत्म-प्रकटन पर दिया। उनके अंदर जो है बच्चे उसे चित्र द्वारा प्रकट करें। इसीसे उनकी निरीक्षण और कल्पना की ताक़त बढ़ेगी।

बच्चे के इस आत्म-प्रकटन में किसी बड़े का हस्तक्षेप न हो। शिक्षक बच्चों की चीजों की समालोचना न करे। हाँ, बच्चे आपस में समालोचना करें तो अच्छा है।

शिक्षक बच्चे को अपने चित्र शब्दों में बयान करने को कहे। इससे उनका सोचना शुरू होगा। वह बच्चे को नये नये अनुभव देने की कोशिश करे—वन-भोजन, घुमाना, रोजमर्रा की आसपास की चीजों को निरीक्षण कराने आदि से।

चित्रकला के लिए अधिक रंग इस्तेमाल कराये जायें। जहाँ तक हो सके नीचे लिखी चीजें इस्तेमाल हों—सूखे रंग, पानी के रंग, कांडी (पेस्टिल) के रंग, क्रेयौन, पेंसिल, खड़िया वग़ैरह। स्लेट पर, काले तख़्ते, काग़ज़, फर्श, दीवार पर मन से तस्वीरें खींचें। रंगीन बीज सजाकर ज़मीन पर चित्र बनायें। शिक्षक ज़मीन पर खड़िया से फल, फूल, जानवर आदि के खाके बनाये जिन पर बच्चे रंगीन बीज सजायें।

शिक्षक बच्चों के चित्रों को ठीक न करे बल्कि जो चीज बनाई हो उसे सामने रखकर निरीक्षण कराए, इससे बच्चा स्वयं आगे बढ़ेगा। वह बच्चों में बारीकी से निरीक्षण करने की आदत डाले।

संगीत—संगीत और नृत्य भी बच्चों की शिक्षा के बहुत बड़े साधन हैं। अफ़सोस की बात यह है कि हमारा शास्त्रीय संगीत बच्चों के अनुकूल नहीं है और अभी तक बच्चों को भजन, लोक गीत वग़ैरह से चुन-चुनकर बच्चों के लायक़ संगीत अभी तैयार करना है।

तालबद्ध हलचल भी संगीत का एक अंग है। शिक्षक को चाहिए कि वह ऐसा वातावरण तैयार करे जिसमें बच्चे संगीत की लय के साथ-साथ अपने को अबाधित रूप से व्यक्त कर सकें। लोकनृत्यों में शिक्षक को ऐसे जरूरी साधन मिल सकते हैं; लेकिन वह उन्हें इस रूप में बच्चों को न कराये जिससे उनकी अपनी स्वाभाविक अभिव्यक्ति में रुकावट पड़े।

पालतू जानवरों की देख-भाल—अन्य देशों में बच्चों को तालीम देने के लिए स्कूलों में जानवरों और पक्षियों को पाला जाता है। इसलिए यहाँ उनके बारे में कुछ कहना जरूरी है। गाँवों में, जहाँ बच्चे प्रकृति की गोद में खेलते हैं और जहाँ बैल, गाय, बकरी, सूअर, और मुर्गियाँ वगैरह देहाती जीवन का एक अनिवार्य अंग बन गये हैं, यह जरूरी नहीं कि स्कूलों में उनका अलग से प्रबंध किया जाय। इसके लिए स्वाभाविक तरीका तो यह रहेगा कि गाँवों में जो पशु-जीवन है उसमें बच्चे हिस्सा लें ताकि उनमें शुरू से ही जानवरों के लिए ममता-भाव का विकास हो और आज देहात में जानवरों के प्रति जो दुर्व्यवहार और निष्ठुरता चलती है, उसमें उनकी हमदर्दी हो।

खेल-कूद—हमने पहले ही कहा है कि बच्चों के जीवन में खेल और काम के बीच में कोई अंतर नहीं है। उनके लिए

सब काम खेल है और सब खेल गंभीर और उद्देश्यपूर्ण कोशिश है, जिससे वे सीखते हैं। बच्चों की तालीम का आदर्श तो यह होना चाहिए कि काम या खेल की दो धाराएँ मिलकर एक हो जायें।

आध्यात्मिक विकास—बच्चों की तालीम में बाक़ायदा धार्मिक शिक्षा का कोई स्थान नहीं। अगर उनके स्कूल में हम प्रेम, न्याय, सब धर्मों के प्रति आदर-भाव, एक दूसरे की मदद करने का और एक साथ मिलकर काम करने का वातावरण पैदा कर सकें तो वही बच्चों के आध्यात्मिक विकास के लिए सबसे कारगर साधन होगा।

———